विगेरे नो विविध दृष्टान्तो वड़े स्पष्टीकरण करी जिज्ञासुओ ने सतुष्टि मले तेवी रीते समझाववा प्रयत्न कर्यो छे. विषय नी गूढता होवा छता अनेक अकाट्य प्रमाणो द्वारा विषय ना मूल मर्म ने समझावी विषय ने सरलतम बनाववा प्रयत्न कर्यो छे मूल अने गाथार्थ साथे विशद विवेचन करी सामान्य मानव ने पण पुस्तक मा रस मले तेवो प्रयत्न करवामा आव्यो छे आशा छे जिज्ञासुओ पुस्तक थी लाभान्वित थशे अने तेमने माटे आ पुस्तक उपयोगी नीवडशे.

गुर्जर भाषा मा ग्रन्थ नो अनुवाद विशद व्याख्या अने विवेचन साथे करवाथी आ ग्रन्थ वाचवा अने समझवामां पाठको नी रुचि वधशे कारण के शुष्क विषय ने सरस बनाववानो मे पूर्ण प्रयत्न करेल छे.

प्रस्तुत ग्रथ ना सम्पादन मा श्री पार्श्वनाथ जैन छात्रालय मालवाडा ना गृहपति श्री नैनमल सुराणाजी ए पूर्ण सहयोग आप्यो छे। तेमना उत्साह थी आ कार्य सरल बन्यु अने आजे आ बृहद् पुस्तक आपना समक्ष विद्यमान छे

प्रेस नी भूलो रही गई होय अथवा कोई अन्य दोष आपनी दृष्टि मा आवे तो सुधारी वाचवा विनति छे

महावीर निर्वाण
संवत् २५०५

आचार्य रत्नशेखर सूरि

☆

— अनुक्रमणिका —

– अपनी दृष्टि में –

विवेकवान प्राणी इस अगाध भवसागर को पार कर
िनन्त सुख की कामना करता है। ' 'सुख मे भूयात् दु.ख
ा भूत" अर्थात् मुझे सुख ही सुख हो, दु.ख न हो। ऐसी
छा रहने पर भी "न च दुःखेन सम भिन्न" अर्थात् निर-
शय सुख को प्राप्त नही कर पाता कारण कि मानव में
वेक का अभाव होने से सत् एवं असत् का विवेचन करने
शक्ति विलुप्त हो जाती है। विवेक के अभाव में
तिक पदार्थों मे ही उसकी निष्ठा रहती है और इन्द्रियो की
भाविक प्रवृत्ति 'भूतानि खानि व्यतृणत् स्वय भू' इत्यादि
गम से आशु विनशि सुख मे ही मनुष्य सुख मानता
। अन्य दर्शनो की तरह 'जैन तत्त्व सार' नामक ग्रन्थ में
श्रेयस (मोक्ष) प्राप्ति के सरल साधनो का विवेचन है।
आगम के अध्ययन से विवेकशील मानव को उन्मार्ग–
मी उद्दाम मन को निग्रहित करने की सरल युक्ति प्राप्त
ती है। अत मनुष्य को क्रियमाण इन जड कर्मो से नित्य
, बुद्ध, मुक्त एव पूर्णानन्द स्वरूप आत्मा का वन्धन कैसे
ता है तथा मुमुक्षु जीव को इन जड कर्मों के बन्धन से
क होकर कैवल्यैकरूपता मुक्ति प्राप्ति का सरल साधन
प्रस्तुत 'जैन तत्त्व सार' ग्रन्थ मे वर्णित है।

क्लिष्ट संस्कृत भाषा मे वहु विस्तार युक्त इस ग्रन्थ के
र को प० पू० श्रद्धेय आचार्य महोदय श्री रत्नशेखर
रजी महाराज ने अपने सूक्ष्म अध्ययन और अनुभव के

द्वारा सर्व साधारण के उपकार को लक्ष्य कर गागर में सागर की तरह सम्पूर्ण ग्रन्थ का सार संक्षेप में उपनिबद्ध किया है। इसके मार्मिक अध्ययन से "यद् गत्वा निवर्तन्ते" इस अपुनरावृत्ति धाम को मुमुक्षु वर्ग अनायास ही सर्व मुक्ति के साधनो को प्राप्त कर अवश्य ही आत्म कल्याण के लिये अग्रसर होगे, ऐसी मै पूर्ण आशा करता हूँ।

आचार्य चम्पालाल शास्त्री, उदयपुर

— कुछ कहूँ —

इस 'जैन तत्त्व सार' ग्रन्थ मे पूर्वाचार्यो ने बहुत विस्तार पूर्वक वर्णन किया है लेकिन कलियुग मे मानव इस कठिन एवं क्लिष्ट ग्रन्थ को समझ नही सकता है, इसलिए समाज के उपकार के उद्देश्य से प० पू० आचार्य श्री रत्नशेखर सूरीश्वरजी म०सा० ने अपने सूक्ष्म अध्ययन और विशद अनुभव से इसका [illegible] गुजराती भाषा [illegible] किया है।

[illegible] करके [illegible] कल्याण कर [illegible] पर [illegible] आगामी [illegible] है।

[illegible]

[illegible] ।"

[illegible]

श्रीमत् तिलकविजयजी गणिवर्य

श्री जैन तत्त्व ।र   दक

विद्वद्वर्य पू० श्रा०,   ।रिश्वरजी

ॐ ह्रीं [illegible]

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

श्री जिन-हीर-बुद्धि-तिलक गुरुदेवेभ्यो नमः
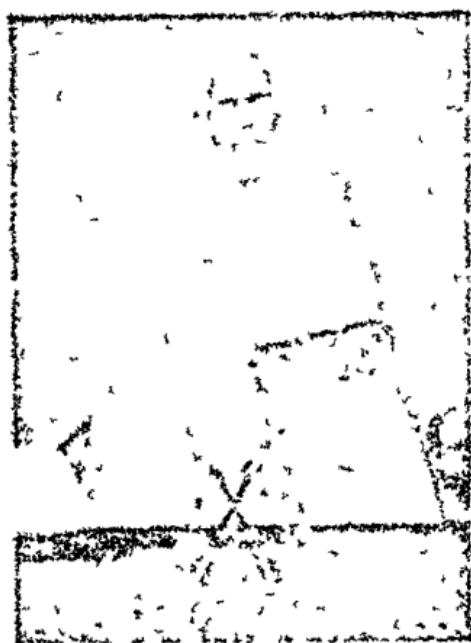
महोपाध्याय श्री सूरचन्द्रगणि विरचित

श्री जैन तत्त्व सार संग्रह सटीक (गुर्जर भाषानुवाद)

॥ प्रथम अधिकारः ॥

मंगल अने वस्तु नो निर्देश

मूलम्—

सशुद्धसिद्धान्तमधीश सिद्धं श्री वर्धमानं प्रणिपत्य सत्यम् ।
कर्मात्मपृच्छं त्तरदान पूर्वं, किञ्चिद्विचारं स्वविदे समूहे ॥

गाथार्थः-

निर्दोष सिद्धान्तवाला, परम ऐश्वर्यवाला अतिशयो वडे देदिप्यमान अने सत्य स्वरुप एवा श्री वर्धमान स्वामी ने प्रणाम करीने पोताना ज्ञान माटे कर्म अने आत्मा सम्बन्धी प्रश्नोना उत्तर देवा पूर्वक कंइक विचारुं छुं ।

विवेचन:-

कोई पण आगम, ग्रंथ, अथवा चरित्रनो आरंभ करता पहला मंगल, अभिधेय, सम्बन्ध, अने प्रयोजन एम चार वस्तुओ अवश्य बतावबी जोइये, एवी जैन शासन नी प्रणालिका छे ते मुजब अहिया पण चार वस्तुओ बतावी छे ।

'श्रेयांसि बहु विघ्नानि'– हमेशा शुभ कार्यो विघ्नोथी भरेला होय छे, एटलेज महापुरुषो कोई पण शुभ कार्य करतां पहेला पोत पोताना इष्टदेव ने नमस्कार करवा रूप मंगल नो प्रारंभ करे छे, इष्टदेव ने नमस्कार रूप मगल विघ्न नो नाश करवा समर्थ बने छे तेम अहियां पण इष्टदेव ने नमस्कार करवा रूप मंगलाचरण कयु छे

जैन शासन मां इष्टदेव तरीके अरिहत भगवतो अने सिद्ध भगवंतो एम बे गणाय छे, तेमा पण जैन शासन नी स्थापना करवा द्वारा परम उपकारी तरीके अरिहत भगवतो गणाय छे एवा अरिहत भगवतो भूतकाल मां अनत थई गया. वर्तमान कालमा पाच महाविदेह क्षेत्र मा २० अरिहत भगवतो मोक्ष मार्ग नो उपदेश आपी विचरी रह्या छे अने भविष्य काल मा पण अनतानंत अरिहत भगवतो थशे.

ते प्रमाणे आ भरत क्षेत्र मा पण भूतकाल मा अनत अरिहत भगवतो थई गया छे अने भविष्यकाल मा पण अनतानत अरिहत भगवतो थशे, तेम आ अवसर्पिणी काल मा श्री ऋषभदेव प्रभु थी माडी श्री वर्धमान स्वामी पर्यंत (श्री महावीर स्वामी) २४ अरिहतो भगवन्तो थया छे

शास्त्रकार महाराजाओ मा पण कोई एक तीर्थंकर भगवन नी, कोई पाच तीर्थकर भगवतोनी, कोई

चौवीस तीर्थंकर भगवतो नी, कोई ज्ञान नी अथवा कोई नमस्कार महामत्र नी एम स्व इच्छा मुजब स्तुति द्वारा मगलाचरण विघ्न निवारण माटे करे छे तेम अहिया ग्रंथकार उपध्याय भगवते श्री वर्धमान स्वामी नी स्तुति रुप विघ्न निवारणार्थे मगलाचरण कर्यु छे.

श्री वर्धमान स्वामी नी स्तुति करवामा वे हेतुओ रहेला छे प्रथम हेतु तो ए छे के हालमां श्री वर्धमान स्वामी ना नाम नु जैन शासन चालतु होवाथी तेओ श्री आपणा नजीकना परम उपकारी छे वीजो हेतु ए छे के महावीर स्वामीना वदले वर्धमान स्वामीनु नाम लेता भावनी वृद्धि थाय एम वर्धमान स्वामि नी स्तुति करवामा वे हेतुओ रहेला जणाय छे

आ ससार मा मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल सद्गुरुनो योग, जिन वाणीनु श्रवण आदि जैन शासन नी आराधना ने योग्य धर्म सामग्री पामी, योग्य आत्माओ उच्च संस्कार पामी जैन शासन नी आराधना करी सकल कर्म नो क्षय करी मुक्ति पद ने पामे छे परन्तु जैन शासन नी आराधना ने योग्य सामग्री, उच्च सस्कारो अने सम्यक्त्व विरति विगेरे प्राप्त करवामा जैन आगम नो मुख्य फालो होय छे. ते पण जैन आगम वीतराग अने सर्वज्ञ भगवतोए वतावेल होवा थी-निर्दोष होय छे तेथी निर्दोष सिद्धात वाला एवु विशेषण ग्रहण कर्यु छे

सामान्य रीते तो शेठ, सार्थवाह, राजा, महाराजा, चक्रवर्ती, देव, देवेन्द्रो, ब्रह्मा, विष्णु, महेश विगेरे सर्वने ऐश्वर्य होय छे वली आ ऐश्वर्य तो संसारना भौतिक सुख पूरतुं होय छे परन्तु अष्ट प्रतिहार्य अने चौत्रीश अतिशय विगेरे परम ऐश्वर्य तो अरिहंत भगवंतो ने ज होय छे वली ए ऐश्वर्य जैन शासन ने प्राप्त करवामां परम आलंबन रूप बने छे माटे परम ऐश्वर्य वाला एवुं विशेषण ग्रहण कर्युं छे.

धान्यनी प्राप्ति माटे जेम योग्य भूमि, योग्य बीज अने वृष्टि आदि योग्य सामग्री नी आवश्यकता होय छे तेम धर्म नी प्राप्ति माटे पण योग्य जीव, अने योग्य धर्म देशना आदि सामग्रीनी पण आवश्यकता होय छे ससार नी असारता, विषय नी विरागता, कषाय नी महत्ता अने धर्म बीज नुं आरोपण पण धर्म देशना द्वाराज थाय छे तेमां पण तीर्थंकर भगवतो वचनातिशय तेमज ज्ञानातिशय वाला होवाथी मोक्ष योग्य आत्माओमा जल्दी धर्मनु बीजारोपण करी शके छे माटे ऐश्वर्य थी देदिप्यमान एवु विशेषण ग्रहण कयु छे.

'पुरुषविश्वासे वचन विश्वास' अर्थात् पुरुषना विश्वासथी तेमना वचन वडे विश्वास थाय छे क्रोध, लोभ, भय अने हास्य ए चार झूठु बोलवामा कारण भूत क्रोध लोभ, भय अने हास्य ए चारे मोहनीय कर्मना

वचना उदये थाय छे मोहनीय कर्मना नाशथीज ए चारे नाश पामे छे तीर्थंकर भगवतो ने मोहनीय कर्म नो नाश थयेल होवाथी ए चारे पण नाश पामी गयेलाज छे तेथी तीर्थंकर भगवंतो ने भूठु बोलवानु कोई कारण नथी एटले तीर्थंकर भगवतो सत्य स्वरुप होवा थी सत्य स्वरुप विशेपण ग्रहण कर्यु छे

वाचनार-भणनार वर्ग ने आगम-ग्र थ आदि मा कयो विपय छे ते जाण्या बाद आगमादि वाचवानु-भणवानु मन थाय छे माटे आगमादिना प्रारभ माज तेनो विपय बतावबो जोइये तेने अभिधेय कहेवाय छे तेवीज रीते आ ग्र थ मा आत्मा अने कर्म सम्बन्धी प्रश्न अने उत्तर आपवामा आवेल छे ते आ ग्र थ नो विपय अभिधेय कहेल छे

जैन शासन मा मति कल्पना ने स्थान नथी परन्तु जिनेश्वर देवोना वचनानुसार जे होय तेनेज अहिया स्थान छे एटले ग्रन्थादिनो सम्बन्ध बतावबो जोइये अहिया ग्रन्थकार 'किञ्चिद्विचार समूहे' ए शब्द थी ग्र थ नो सम्बन्ध बतावे छे हु कईक विचारु छु कइक शब्द थी सक्षेपमा जणावु छु अर्थात् बीजे स्थले विस्तार थी पूर्वाचार्योए बतावेल छे, तेमाथी हु जणावु छु एटले आ ग्रथ नो सम्बन्ध पूर्वाचार्योए विस्तारथी रचेला ग्र थो नी साथे छे तेमज हु मारी मति कल्पनाथी आ ग्रथ

[illegible]

[illegible]

ज्ञान माटे तथी पोतानी मोटाई नथी पण [illegible]

पण सूचवी ।

'प्रयोजन' शब्दथी ग्रंथ रचवानो हेतु [illegible] प्रयोजनने प्रकारनु स्व अने पर ते पण बे प्रकारनु अनन्तर अने परम्पर 'सर्वविदे' शब्द थी पोतानु अनन्तर प्रयोजन, पोताना ज्ञाननी प्राप्ति बीजाने पण ज्ञान मले ए परन्तु अनन्तर प्रयोजन स्व अने पर बन्ने नु परम्पर प्रयोजन मोक्षनी प्राप्ति जाणवु

आत्मा अने कर्मनु लक्षण

मूलम् —

आत्मायमार्या: किल कीदृशोऽस्ति, नित्यो विभुश्चेतनवान रूपी
तथा च कर्माणि तु कीदृशानि, जडानि रूपीणि चयाचयीनि। २

गाथार्थ – हे पूज्यो ! आ आत्मा खरेखर केवो छे ? आ आत्मा नित्य, व्यापक, चैतन्ययुक्त अने अरूपी छे तेमज कर्मो जड, रूपी, पूरण गलन स्वभाव वाला छे

विवेचन — जैन शासन स्याद्वादमय छे दरेक पदार्थो मा अनेक धर्मो रहेला छे जेमके एकज स्त्री मा मातृत्व, भगिनीत्व, स्त्रीत्व आदि अनेक धर्मो रहेला छे ते स्त्री

मा पुत्र नी अपेक्षाए मातृत्व, भाई नी अपेक्षाए भगिनीत्व, स्वामिनी अपेक्षा ए स्त्रीत्व विगेरे अनेक धर्मो रहेला छे. एम दरेक पदार्थ ने अनेक दृष्टि थी विचारी ते पदार्थ मां रहेलां सर्व धर्मो स्वीकारवा, तेनु नाम 'स्याद्वाद' कहेवाय छे

सात नय अने सप्त भंगी द्वारा वस्तुना स्वरुप नो निर्णय करवो ए जैन शासन नो खास सिद्धान्त छे दरेक वस्तु ने द्रव्य अने पर्याय एम बे होय छे मूल वस्तु ते द्रव्य कहेवाय छे अने तेनो घाट, आकार आदि पर्याय कहेवाय छे जेमके सोनु ए मूल द्रव्य छे अने वगडी आदि तेना पर्यायो छे तेवीज रीते आत्मा ए मूल द्रव्य छे अने मनुष्य भवादि तेना पर्यायो छे आ रीते दरेक पदार्थ मा द्रव्य अने पर्याय नो विचार करवो आ प्रमाणे आत्मा ना द्रव्य अने पर्यायोनी पण विचारणा करवी दरेक वस्तुने द्रव्य दृष्टिए विचारवी ते द्रव्यास्तिक नय, अने पर्याय दृष्टिए विचारवी ते पर्यायास्तिक नय. द्रव्यास्तिक नय दरेक वस्तु नित्य छे अने पर्यायास्तिक नय दरेक वस्तु अनित्य छे बन्ने नयोनी दृष्टिए दरेक वस्तु नित्यानित्य छे तेम आत्मा पण बन्ने नयोनी दृष्टिए नित्यानित्य छे परन्तु अहिया द्रव्यास्तिक नय नी दृष्टिए आत्मा नित्य कहेल छे.

'विभु' एटले व्यापक, जे पदार्थ जगत मा सर्व जग्याए व्यापी शके ते सर्व व्यापी अने अल्प जग्याए व्यापी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पण थती ।

'प्रयोजन' [illegible] प्रकारनु स्व अने पर [illegible] परम्पर 'सर्वविदे' शब्द थी पोतानु अनन्तर प्रयोजन, पोताना ज्ञाननी प्राप्ति बीजाने पण ज्ञान मले ते परनु अनन्तर प्रयोजन स्व अने पर बन्ने नु परम्पर प्रयोजन मोक्षनी प्राप्ति जाणवु

आत्मा अने कर्मनुं लक्षण

मूलम् —

आत्मायमार्याः किल की दृशोऽस्ति, नित्यो विभुश्चेतनवान रूपी
तथा च कर्माणि तु की दृशानि, जडानि रूपीणि चयाचयीनि ॥

गाथार्थ — हे पूज्यो ! आ आत्मा खरेखर केवो छे ? आ आत्मा नित्य, व्यापक, चैतन्ययुक्त अने अरूपी छे तेमज कर्मो जड, रूपी, पूरण गलन स्वभाव वाला छे

विवेचन:— जैन शासन स्याद्वादमय छे दरेक पदार्थो मा अनेक धर्मो रहेला छे जेमके एकज स्त्री मा मातृत्व, भगिनीत्व, स्त्रीत्व आदि अनेक धर्मो रहेला छे ते स्त्री

ना पुत्र नी अपेक्षाए मातृत्व, भाई नी अपेक्षाए भगिनीत्व,
स्वामिनी अपेक्षाए पत्नीत्व विगेरे अनेक धर्मो रहेला छे.
एम दरेक पदार्थ ने अनेक दृष्टि थी विचारी ते पदार्थ
मा रहेला सर्व धर्मो स्वीकारवा, तेनु नाम 'स्याद्वाद'
कहेवाय छे

ज्ञान नय अने सप्त भंगी द्वारा वस्तुना स्वरूप नो
निर्णय करवो ए जैन शासन नो ज्ञान सिद्धान्त छे. दरेक
वस्तु ने द्रव्य अने पर्याय ए, बे होय छे. मूल वस्तु ने द्रव्य
कहेवाय छे अने तेनो घाट, आकार आदि पर्याय कहेवाय
छे जेमके सोनु ए मूल द्रव्य छे अने वींटी आदि तेना
पर्यायो छे. तेवीज रीते आत्मा ए मूल द्रव्य छे अने मनुष्य
पश्वादि तेना पर्यायो छे, आ रीते दरेक पदार्थ मा द्रव्य
अने पर्याय नो विचार करवो. आ प्रमाणे आत्मा ना द्रव्य
अने पर्यायोनी पण विचारणा करवी. दरेक वस्तुने द्रव्य
दृष्टिए विचारवी ते द्रव्यास्तिक नय, अने पर्याय दृष्टिए
विचारवी ते पर्यायास्तिक नय. द्रव्यास्तिक नय दरेक वस्तु
नित्य छे, अने पर्यायास्तिक नय दरेक वस्तु अनित्य छे
बन्ने नयोनी दृष्टिए दरेक वस्तु नित्यानित्य छे, तेम
आत्मा पण बन्ने नयोनी दृष्टिए नित्यानित्य छे. परन्तु
अहिंया द्रव्यास्तिक नय नी दृष्टिए आत्मा नित्य कहेल छे

'विभु' एटले व्यापक, जे पदार्थ जगत मा सर्व
जग्याए व्यापी थये ते सर्व व्यापी अने अल्प जग्याए व्यापी

शके ते देश व्यापी दरेकसंसारी आत्मा पोत पोताना शरीर मा शरीर प्रमाण मा व्यापी ने रहेलो छे ते देश व्यापी सिद्ध भगवंतो पोताना अंतिम शरीर ना प्रमाण ना त्रण भाग माथी बे भाग प्रमाण व्यापी ने सिद्ध शिला ना ऊपर एक योजनना छेल्ला चौवीशमा भाग मा अलोक ने स्पर्शी ने रहे छे ते मुक्त आत्माओनी द्रष्टिए देश व्यापी अने ज्यारे कोई आत्मा केवली[१] समुद्घात करे छे ते समये ते आत्मा चौद राज लोक मा व्यापी जाय छे ते सर्व व्यापी ए बधी दृष्टिए आत्मा व्यापक जणाय छे.

चैतन्य बे प्रकारनुं छे एक आवरण सहित अने बीजुं आवरण रहित बधा कर्मधारी(संसारी)आत्माओनु चैतन्य कर्म थी आच्छिन्न होवा थी आवरण सहित

---

१. जे केवली भगवन ने नाम, गोत्र, अने वेदनीय ए त्रण कर्म नी स्थिति जो पोताना आयुष्य कर्म नी स्थिति थी अधिक भोगववी बाकी रहे तेम होय तो ते त्रणेय कर्म नी स्थितिओने आयुष्य कर्म नी जेटली स्थिति वाली बनाववा पोताना आत्म प्रदेशोने शरीर बहार काढी पहेले समये लोकना नीचेना छेडा थी ऊपर ना छेडा सुधी १४ राज प्रमाण ऊंची अने स्वदेह प्रमाण जाडो आत्म प्रदेशोनो दंडाकार रची, बीजे समये उत्तर थी दक्षिण (अथवा पूर्व थी पश्चिम) लोकान्त सुधी कपाट आकार बनावी, त्रीजे समये पूर्व थी पश्चिम (अथवा उत्तर थी दक्षिण) बीजो कपाट आकार बनाववाथी मथान आकार (चार पांखडा वाला रवैया ना आकार) बनावी चौथे समये आन्तरापुरी (ते केवली

चैतन्य गणाय छे अने सिद्ध भगवंतो नुं चैतन्य कर्मना आवरण थी रहित होवाथी आवरण रहित चैतन्य गणाय छे ए दृष्टिए चैतन्य वालो आत्मा होवाथी आत्मा चैतन्य वान कहेवाय छे.

वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श वाला पदार्थो रुपी गणाय छे अने वर्ण, गध, रस अने स्पर्श रहित वाला पदार्थो अरुपी गणाय छे. आत्मा वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श रहित होवाथी अरूपी कहेवाय छे कर्म सहित ससारी आत्मा नी अपेक्षाए जीव रुपी गणेल छे कर्म धारक जीव केवल ज्ञानीओ नी दृष्टिए रूपी पणे प्रत्यक्ष होवा छता निर-तिशय ज्ञानीओनी अपेक्षाए अप्रत्यक्ष होवाथी अरूपी कहेल छे एटले आत्मा अरूपी कहेल छे.

चैतन्य रहित होवाथी कर्मो जड छे वर्ण. गध, रस अने स्पर्श सहित होवाथी रुपी छे अने पूरण अने गलन एटले सडण–पडण स्वभाव वाला छे.

भगवत ना आत्मा) सपूर्ण लोकाकाशमा व्याप्त थई जाय छे त्यार बाद पाचमे समये आतराना आत्म प्रदेशो सहरी, छट्ठे समये मथान(नी बे पॉख) ना आत्म प्रदेशो संहरी, सातमे समये कपाट संहरी, आठमे समये दड सहरी पूर्ववत सपूर्ण देहस्थ थाय ते केवली समुदघात एमा पूर्वोक्त त्रण कर्मनो प्रबल (उदीरणा द्वारा नहीं पण) अपवर्तना द्वारा घणो विनाश थई जाय छे

जीवो नुं अनत पणुं अने पृथ्वी आदि तेना भेदो

मूलम्:—

जीवाः पृथिव्यादिमसूक्ष्मबद्ध-निगोदभिन्ना हि भवन्त्यनन्ताः।
नानाविधाऽवाप्तसजातियोनि-भिन्नाःसमस्ताःकिलकेवलीश्याः॥

गाथार्थः— पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय ए दरेक ना सूक्ष्म अने बादर ए वे प्रकार जाणवा सूक्ष्म निगोद अने बादर निगोद मा अनंत जीवो छे विविध प्रकार नी जाति अने योनि थी जीवोना भेद पडे छे. समस्त जीवो केवली भगवतो थी देखी शकाय छे.

विवेचनः- विश्व एटले चौद राजलोक मा जीवो अनंता छे. तेमां सिद्ध भगवतो ना १५ भेद छे अने संसारी जीवो ना १४ अथवा ५६३ भेद बतावेल छे ए बधा भेदो मा सर्व जीवो नो समावेश थई जाय छे.

जोके सिद्ध थया बाद ते जीवो मा भेद होतो नथी परन्तु सिद्ध थता समये अवस्था आदि नी अपेक्षाए भेद बतावेल छे ते १५ भेद कहेल छे—

(१)जे आत्माओ तीर्थंकर थई ने मोक्षे जाय ते जिन सिद्ध (२)जे आत्माओ तीर्थंकर थया विना सामान्य केवली थई ने मोक्षे जाय ते तीर्थ सिद्ध (३) तीर्थनी स्थापना थया पहेला मोक्षे जाय ते अतीर्थसिद्ध(४)जे आत्माओ तीर्थनी स्थापना थया पहेला मोक्षे जाय ते अतीर्थ सिद्ध (५) जे

आत्माओ गृहस्थ ना वेष मां मोक्षे जाय ते गृह लिङ्ग
सिद्ध. (६) जे आत्माओ अन्य लिङ्ग ना वेषे मुक्ति जाय
ते अन्य लिङ्ग सिद्ध(७)जे आत्माओ साधु लिङ्गे मोक्षे
जाय ते स्वलिङ्ग सिद्ध (८) जे आत्माओ स्त्री लिङ्गे
मोक्षे जाय ते स्त्रिलिङ्ग सिद्ध (९) जे आत्माओ पुरुष
लिङ्गे मोक्षे जाय ते पुरुष लिङ्ग सिद्ध (१०)जे आत्माओ
नपुसक लिङ्गे सिद्धथाय ते नपुसक लिङ्ग सिद्ध(११)जे
आत्माओ कोई पण निमित्त पामी ने वैराग्य पामे ते प्रत्येक
बुद्ध सिद्ध (१२)जे आत्माओ पोतानी मेले बोध पामे ते स्वय
बुद्ध.(१३)जे आत्माओ वीजा ना उपदेश थी वोध पामे
ते बुद्ध बोधित सिद्ध (१४) एक समय मा एक मोक्षे
जाय ते एक सिद्ध (१५)एक समय मा अनेक आत्मा
मोक्षे जाय ते अनेक सिद्ध एम सिद्ध ना पदर भेदो जाणव

जीव ना चौद भेदो –

१ अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय, २ पर्याप्त सूक्ष्म एके
३ अपर्याप्त वादर एकेन्द्रिय, ४ पर्याप्त बादर एके
५ अपर्याप्त वे इन्द्रिय, ६ पर्याप्त वेइन्द्रिय, ७ अ
तेइन्दिय, ८ पर्याप्त तेइन्द्रिय, ९ अपर्याप्त चउरिन्द्रिय,
१० पर्याप्त चउरिन्द्रय, ११ अपर्याप्त असज्ञी पचेन्द्रिय,
१२ पर्याप्त असज्ञी पचेन्द्रिय, १३ अपर्याप्त सज्ञीपचेन्द्रिय,
१४ पर्याप्त सज्ञीय पचेन्द्रिय. एम जीवना चौद भेदो
जाणवा.

अने अवियतजृंभक ए दश तिर्यचजृंभक देवो ना भेदो छे आठ व्यंतर, आठ वाण व्यंतर अने दश तिर्यचजृंभक देवो पण व्यंतर मा गणेल होवाथी सर्व मली २६ भेदो व्यतर देवो ना थाय छे.

सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र अने तारा ए पांचे चर, अने स्थिर गणता ज्योतिषी ना १० भेदो थाय छे.

सुधर्मा, ईशान, सनतकुमार, माहेन्द्र ब्रह्मलोक, लातर्क, महाशुक्र, महस्त्रार, आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत ए वार देव लोक ना १२ भेदो थाय छे पहेला वीजा अने पाचमा छट्ठा नी नीचे त्रण किल्वीपिकना त्रण भेदो गणवा, सारस्वत, आदित्य, वाहित, अरुण, गर्दतोय, तृपित, अव्यावाध, मरुत, अने अरिष्ट ए नव भेदो लोकातिक ना जाणवा

सुदर्शन. सुप्रतिवद्ध मनोरम सर्वतोभद्र सुविशाल, सुमनस, सौमनस, प्रियकर अने नंदिकर ए नव भेदो नव ग्रैवेयक ना जाणवा.

विजय, विजयन, जयत, अपराजित अने सर्वार्थ सिद्ध ए पाच भेदो अनुत्तर विमानो ना जाणवा

वार देवलोकना १२, किल्वीपिकना ३, नव लोकातिकना ९, नव ग्रैवेयकना ९, अने पाच अनुत्तर ना मली [illegible] भेदो वैमानिक देवो ना जाणवा.

भुवन पतिना २५, व्यंतर ना२६, ज्योतिषी ना१० अने वैमानिक ना ३८ मली ६६ भेद चारे प्रकार ना देवो ना थाय छे. तेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मलो कुल १६८ भेद देवो ना थाय छे. हवे नारक ना १४ भेद, तिर्यचना ४८ भेद, मनुष्यना ३०३ भेद अने देवो ना १६८ मली कुल ५६३ भेद सर्व जीवो ना थाय छे

साधारण वनस्पतिकाय ने निगोद पण कहेवाय छे चौद राज लोक मा असख्यात निगोद ना गोलाओ छे एकेक गोला मा असख्यात निगोदो छे अने एकेक निगोद मा अनंत जीवो होय छे निगोद ना जीवो एकज स्थान मां साथे जन्मे छे, साथेज मृत्यु पामे छे, साथेज आहार अने साथेज श्वासोश्वास ले छे. तेथी तेओ साधारण तरीके पण ओलखाय छे. एक शरीर मा अनत जीवो साथे रेहता होवाथी अनतकाय पण गणाय छे. तेओ एक श्वासोश्वास मा साढा सत्तर भव करे छे तेओनु आयुष्य २५६ आवलिका प्रमाण होय छे असख्यात समय नी एक आवलिका गणाय छे, एटले २५६ आवलिका प्रमाण वालुं अतर्मुहूर्तनुं तेओनु आयुष्य होय छे. अनत शरीर एकठा थवा छता चर्म चक्षु वाला आत्माओ ने हमेशा तेओ अदृश्य होय छे. फक्त केवली भगवतोज तेओने जोई शके छे. तेओ चौद राज लोक मा सपूर्ण ठासी—ठासी ने भरेला छे.

गाथार्थ:- एकेक जीव प्रदेशे बुद्धि वडे कल्पना करिये
तो अनंत शुभ अने अशुभ कर्मो रहेला छे, ते कर्मो केवल
ज्ञानी वडे जाणी शकाय छे, ए कर्मोथी मुक्त थयेला जीवो
सिद्ध कहेवाय छे,

विवेचन:- जीवना प्रत्येक आत्म प्रदेशे अनंत शुभाशुभ
कर्मो रहेला छे अने एवा आत्मा ना असख्यात आत्म प्रदेशे
असख्यात अनत शुभाशुभ कर्मो रहेला होवा छता पण
आपणे ते कर्मो केम जोई शकता नथी ? एवो प्रश्न थाय
ते स्वाभाविक छे, तेना प्रत्युत्तर मा ग्रथकार श्री जणावे
छे के जगतमा रहेला पदार्थो बे प्रकार ना छे रूपी अने
अरूपी. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श वाला पदार्थो रूपी है
वर्ण, गध, रस, अने स्पर्श वगर ना पदार्थो अरु
अरूपी पदार्थो तो केवल ज्ञान सिवाय जाणी शका
नही. परन्तु रूपी पदार्थो मा पण केटलाकज पदार्थो
चक्षुथी जोई शकाय छे केटलाक रूपी पदार्थो पण
भेगा थयेला होय त्यारेज चर्म चक्षु थी जोई शका
परन्तु केटलाक रूपी पदार्थो तो गमे तेटला भेगा थवा
पण चर्म चक्षु थी जोई शकाता नथी दाखला तरीके
मनुष्य अने तिर्यंच पशु आदि ना शरीरो चर्म चक्षुथी जोई
शकाय छे, बादर पृथ्वी कायादि शरीरो अने बादर
निगोद नां शरीरो घणा शरीरो भेगा थाय त्यारेज चर्म
चक्षु थी जोई शकाय छे परन्तु सूक्ष्म पृथ्वीकायादि ना

वाधो ? तेना समाधान मा जणाववानु जे कर्म रहित जीव ने कर्म केम लागे ? जो कर्म रहित जीवने पण कर्म लागे एम मानिये तो कर्म रहित एवा सिद्ध भगवतो ने पण कर्म लागवा जोइये. अने कर्म रहित सिद्ध भगवतो ने कर्म लागता नथी ए नक्की छे बीजु कर्म रहित सिद्ध भगवंतो ने पण फरीने कर्म लागे तो तेमने पण संसार मा फरीने आववु पडे अने तेओ संसार मा फरीने कोई काले आवे एवु बन्यु नथी, बनतु नथी अने बनवानु पण नथी बीजो प्रश्न ए पण थाय के जो सिद्ध भगवंतो पण फरीथी कर्म बाधी ने ससार मा आवता होय तो मोक्ष ना अर्थी एवा आत्माओनो कर्म थी मुक्त थवानो प्रयत्न निष्फल जाय माटे प्रथम जीव अने पछी कर्म एम मानवामां बाध कता आवे छे

प्रथम कर्म अने पछी जीव मानिये तो शो दोष ? तेना समाधान मा जणाववानु, जे प्रथम कर्म अने पछी जीव मानिये तो जीव नी उत्पत्ति थया विना कर्त्ता रुप जीव सिवाय कर्म नी उत्पत्ति केम थाय ? कारण के कर्म नो कर्त्ता जीव छे माटे जीव सिवाय कर्म नी उत्पत्ति थती नथी एथी प्रथम कर्म अने पछी जीव ए पण घटतु नथी

मानो के जीव अने कर्म बन्ने नी साथे उत्पत्ति मानिये तो शो वाधो ? तेना समाधान मा पण जणा–

अथानुं के जो कर्म अने जीव नी उत्पत्ति साथे मानिये तो जीव अने कर्म ए बेमा कोण कर्ता ? एम कर्ता अने कर्म नो भेद नष्ट थई जाय अने जीव कर्म बंध पण करी न शकवाथी कर्म बंध नुं फल पण जीवने मली शके नहीं, माटे बन्ने नी साथे साथे उत्पत्ति मानवामां पण दोष आवे छे. वली बन्ने नी उत्पत्ति मानवामा बीजो दोष पण आवे छे के एक नियम एवो छे के कारण वगर कार्य उत्पन्न थतुं नथीं कारण पण बे प्रकारना छे निमित्त कारण अने उपादान कारण कदाच निमित्त कारण मां एक निमित्त कारण ने बदले बीजो निमित्त कारण चाले परन्तु उपादान कारण वगर चालतुं नथी जेमके घडो बनववामा माटी ए उपादान कारण छे अने गधेडो, कुंभा.. चाकडो विगेरे निमित्त कारण छे जीव अने कर्म एने नुं उपादान कारण कोण ? ए प्रश्न थाय ज.माटे एन्ने नी उत्पत्ति थती नथी ते सिद्ध थाय छे.

जीव एकलो मानिये तो शो दोष ? जीव एकलो मानिये तो संसार मा कोई जीव सुखी, कोई जीव दुखी, कोई रोगी तो कोई निरोगी, कोई राजा तो कोई रंक, कोई बुद्धिहीन तो कोई विद्वान एम जे विचित्रता अने विभिन्नता देखाय छे तेनुं कारण शुं ? माटे :

[illegible]

[illegible]

[illegible] जीव [illegible]
नो, कर्म पण अनादि नो अने जीव अने कर्म नो योग
पण अनादि नो छे एवो जैन शासन नो [illegible]
ते सत्य छे

जीव अरूपी अने कर्म रूपी ए बन्ने जाति अलग होवा छतां बन्ने नो योग केम थाय ?

प्रत्युत्तर मा जणाववानु के सोनु अने पाषाण, अरणी अने अग्नि ए अलग जाति छे छतां जेम बन्ने नो योग थयेलो छे तेम जीव अने कर्म ए बन्ने नी अलग जाति होवा छतां बन्ने नो योग थई शके छे सोनु तेजवान छे, पाषाण निस्तेज छे सोनु भारे छे पाषाण हलको छे सोनु द्रव छे, पाषाणबद्ध छे, अने सोनु स्निग्ध अनेपाषाण रूक्ष छे छतां बन्ने नो योग थाय छे. जीव अने कर्म भिन्न जाति वाला होवा छतां बन्ने नो योग थई शके छे .

मूलम् —

दुग्धाज्ययोर्वा युगपद्भवोऽस्त्ययं.यथा पुनःपावकसूर्यकान्तयोः ।
सुधासुधाभृच्छिलयोःसहास्थितः,कर्तुर्गुणानामथकर्तृवादिनाम् ८

गाथार्थ — दूध अने घीनो, अग्नि अने सूर्य कान्त मणी नो, अमृत अने चन्द्रकान्त मणी नो अने कर्त्ता ना गुणो नो अने प्राणिओनो योग एक साथे थयेलो छे, तेम जीव अने कर्म नो योग एक साथे थयेलो छे

विवेचन–दूध अने घी नो योग एकसाथेज रहेलो छे अग्नि अने सूर्यकान्त मणी नो योग एक सायेज रहेलो छे अमृत अने चद्रकान्तमणी नो योग एक सायेज रहेलो छे अने ईश्वर ने कर्त्ता तरीके माननार ना मते ईश्वर ना गुणो अने प्राणिओनो योग अनादि काल थी एक साथेज रहेलो छे तेम जीव अने कर्मनो योग पण अनादि काल थी एक साथेज रहेलो छे. सत्व, राजस अने तैजस एम त्रण प्रकार ना गुणो छे. ए त्रणे प्रकृति ना गुणो छे परन्तु आत्मा ना गुणो नही. ईश्वर जगत नो कर्त्ता छे, एम माननार ना सिद्धान्त मा ईश्वर मा निर्गुण पणु अने सगुण पणु एम बे धर्मो मानेला छे हवे प्रश्न ए थाय छे के जो ईश्वर ने निर्गुण मानवामा आवे तो ईश्वर जगत–कर्त्ता बनी शकतो नथी. कारण के निर्गुण एवो जगत – कर्त्ता ईश्वर निष्क्रिय अने निरंजन होवाथी तेना मा सगुण

विवेचन-- जैन शासन कोई पण कार्य मा स्वभाव, काल, भवितव्यता, कर्म अने उद्यम एम पांच कारणो माने छे. ए पांच कारण विना कोई पण कार्य थतुं नथी जो के दरेक कार्य मा कोई पण कारण नी मुख्यता अथवा गौणता होय छे परन्तु दरेक कार्य मा पांचे कारणो अवश्य होय छे.

सम्यक्त्व नी प्राप्ति मा पांच कारणो केवी रीते कारण भूत बने छे तेमने क्रमथी समजाववामा आवे छे.

मोक्ष मा जवा माटे अयोग्य ते अभवि अने योग्य ते भवि. अभवि आत्मा कोई पण काले सम्यक्त्व पामी शकतो नथी परन्तु भवि आत्माज सम्यक्त्व पामी शके छे, तथा भवि आत्मा सम्यक्त्व पामे छे तेमा स्वभावज कारण भूत छे.

अनंतानंत पुद्गल परावर्तन काल आ संसार मा जीवने परिभ्रमण करता पसार थई गयो परन्तु ज्यां सुधी भवि आत्मा पण छेल्ला एक पुद्गल परावर्तनकाल मा न आवे त्यां सुधी सम्यक्त्व पामी शकतो नथी ज्यारे छेल्ला पुद्गल परावर्तन काल मा भवि आत्मा पण आवे त्यारेज सम्यक्त्व पामी शके छे. ते समये कालज सम्यक्त्व पामवामा कारण भूत छे.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ने योगे पोतानी [illegible]

मूलम्-

कर्माणि योगीन्द्र? जडानिसन्ति,नानिस्वयनाश्रयितुं क्षमन्ते।
आत्मातुबुद्धःस्वयमेवजानन्,कर्माण्यशस्तानिकथंगृह्णाति।।३।।

गाथार्थ— हे योगीन्द्र! कर्मो जड अने चेतन रहित छे तेओ पोतानी मेले तो जीव नो आश्रय लेवा माटे समर्थ नथी आत्मा तो ज्ञानी छे अने जाणतो छतो पोतानी मेलेज अशुभ कर्मो ने शा माटे ग्रहण करे ?

विवेचन— जगत मा पदार्थो वे प्रकार ना छे, चैतन्य वाला अने चैतन्य रहित, ते जड चैतन्य वालो पदार्थ स्वतन्त्र रीतिये इच्छा मुजब कोई पण प्रवृत्ति करी शके छे परन्तु जड पदार्थो स्वतन्त्र रीतिये इच्छा मुजब कोई पण प्रवृत्ति करी शकता नथी. जड पदार्थो मा जे प्रवृत्ति देखाय छे तेमा जीव नी अवश्य प्रेरणा होय छे जीव नी प्रेरणा विना जड पदार्थ थी कइ पण प्रवृत्ति थई शके नही तेथी

जड़ पदार्थो चेतन एवा जीव नो स्वय आश्रय लेवाने समर्थ नथी.

तमो कहेशो के जड़ एवा कर्मो जीव नो स्वय आश्रय लेवाने समर्थ न होवा थी जीव नो आश्रय लेता नथी परन्तु जीव स्वय शुभाशुभ कर्मो ग्रहण करे छे तमारी मान्यता मुजब जो जीव स्वय शुभाशुभ कर्मो ग्रहण करे छे तो जीव स्वय शुभ कर्मो ग्रहण करे ते बावत तो मानी शकाय परन्तु ज्ञानी एवो आत्मा स्वय अशुभ कर्मो केम ग्रहण करे ? आवो प्रश्न थाय ते स्वाभाविक छे . तेनो प्रत्युत्तर ग्रन्थकार थी आगल नी गाथा मा आपे छे .

मूलम्—

को नाम विद्वानशुभं हि वस्तु, गृह्णाति मत्वा किलयः स्वतन्त्रः।
सत्य विजानन्नपि भाविकताहक् कालादिनोदादशुभं हि लाति ।३

गाथार्थ— विद्वान अने स्वतन्त्र एवो आत्मा जाणी ने अशुभ कर्मो ने केम ग्रहण करे ? कर्म ना विपाक ने जाणवा छता पण भवितव्यता अने कालादि ना प्रेरणा थी अशुभ कर्मो पण जीव ग्रहण करे छे

विवेचन—ससार मा अभयदान अने सुपात्र दान विगेरे दानादि अने जिनेश्वर देवना दर्शन–पूजन,भक्ति आदि धर्म क्रिया द्वारा शुभ कर्मो बाधवाथो देव, देवेन्द्र,

प्रेरणा थी विद्वान् अने स्वतंत्र एवो जीव पण अशुभ कर्मो ग्रहण करे छे

विवेचन- अहिंया ग्रन्थकार श्री गहन वस्तु ने पण दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट रीते समजावे छे के जेम औषध नो स्वाद मीठो अने रस सारो लागे छे अने रोग नो स्वाद फीको अने नीरस लागे छे एम जाणवा छतां पण ज्ञानवान मनुष्य रोग ने पण भवितव्यतादि नी प्रेरणा थी पाय छे. तेम विद्वान् अने स्वतंत्र आत्मा पण भवितव्यतादि नी प्रेरणा थी अशुभ कर्मो पण ग्रहण करे छे

मूलम्—

अनन्य मार्गश्च तथैव कश्चित् स्वय न विशेष्ट प्रयियासुराशु ।
शुभाशुभान्स्थानवरान्विजानन् खिलप्रदेशीयपथाग्निनोदात ५

भावार्थ—पोताना इष्ट स्थले जल्दी जवानी इच्छा वालो स्व स्थान नी प्राप्ति नी प्रेरणा थी शुभाशुभ स्थानो ने जाणतो छतो पण मनुष्य बीजो जवानो मार्ग न होवाथी शुभ मार्ग नु उल्लंघन करी कुत्सित मार्गे जाय छे

विवेचन— दरेक माणसनी इच्छा शुभ एटले सुन्दर, सरल, उपद्रव रहित, भय रहित अने जल्दी पहोंची शकाय एवा मार्गे जवानी होय छे, ए स्वाभाविक छे परन्तु तेवा प्रकार नो मार्ग न मले तो जाणतो छतो पण अशुभ एटले खराब, वांको, उपद्रवो वाला, भय वाला अने लांबा मार्गे पण इच्छित स्थाने जवानी

उनावत ना कारणो [illegible]

कर्मो ग्रहण करवानी [illegible]

-व्यतादि ना योगे [illegible] कर्मो [illegible]

मूलम्-

तथाच चौराःपरदारगाश्च. व्यापारिणोन्यदर्शनिनोद्विजास्तथा।
विदन्त एते हि तथा विपाकं, शुभाशुभं कर्म समाचरन्ति ।६।

गाथार्थ- चोर लोको, परस्त्री गमन करनारओ, व्यापारियो, अन्यदर्शनियो अने ब्राह्मणो पोत पोताना कर्म ना फल ने जाणवा छता शुभाशुभ कर्म करे छे

विवेचन-जेम चोरी करनार जाणे छे के चोरी करवा थी वध, बधन, कैदनी शिक्षा (सजा) विगेरे फल मले छे. परस्त्रीगामी पण परस्त्रीगमन करवाथी राजदंड वध आदि फल मले छे ते जाणे छे व्यापारियोपण अनीति, विश्वास घात आदि करवाथी अपयश आदि फल मले छे ते जाणे छे अन्य दर्शनिओ अने ब्राह्मणो पण पोताना कर्म नु केवा प्रकार नु शुभाशुभ फल मले छे ते जाणे छे छता पण भवितव्यतादि ना योगे शुभाशुभ कर्म करे छे तेम जीव पण जाणवा छता भवितव्यतादि नी प्रेरणा थी शुभाशुभ कर्मो ग्रहण करे छे

मूलम्-

भिक्षुस्तथा बन्दिऋषिश्च भिक्षां भिन्नरथांश्च रूक्षा परिवुध्य भुङ्क्ते।
शूरस्तथा युद्धगतोऽवगच्छन्, शत्रून् शत्रूंश्च निहन्ति रोषे ।७।

गाथार्थ- भिक्षु, वन्दी अने ऋषि स्निग्ध अने रूक्ष भिक्षा जाणवा छता खाय छे. युद्ध मा गयेल शूरवीर जाणता छता पण शत्रु अने मित्र ने हणे छे

विवेचन- भिक्षु अने वन्दी एटले भाट, चारण आ आहार रस वालो अने आ आहार नीरस छे एम जाणवा छता पण परतन्त्रता ना योगे वन्ने प्रकार ना आहार ने खाय छे ऋषि पण रसवाला अने नीरस आहार ने जाणवा छता सम भावना योगे वन्ने वन्ने प्रकार ना आहार ने खाय छे अने लडाई मा गयेल शूरवीर पण आ मित्र छे, अने आ शत्रु छे एम जाणवा छता पण सेनापति नी आज्ञा नी परवशता ना कारणे वन्ने ने हणे छे तेम जाणवा छता पण जीव भवितव्यता ना योगे शुभाशुभ वन्ने कर्मो ग्रहण करे छे

सूत्र-

रोगी यथा वा निजरोग शान्ति-मिच्छन्नपथ्यह्यपि सेवनेऽसौ ।
रोगाभिभूतत्ववशादपाय. जानन्त्वयमावि नमात्मगामिनम् ।८

गाथार्थ- पोताना रोग नी शान्ति नी इच्छा वालो रोगी कुपथ्य ना योगे थता कष्ट ने जाणवा छता पण रोग नी परवशता थी कुपथ्य ने खाय छे

विवेचन-रोगी ने पोतानो रोग जल्दी नाश पामे एवी इच्छा अवश्य होय छे अने शरीर ने प्रतिकूल खोराक लेवा थी रोग नी वृद्धि थाय छे एम जाणवा छता

पण रोग ना पर वशपणा थी प्रकृति वश वनी कुपथ्य नु सेवन करे छे. तेम जीव सुख नो अभिलाषी होवा छता अने अशुभ कर्म नुं पण दुख होय छे एम जाणवा छता पण भवितव्यतादि ना योगे जीव अशुभ कर्मो पण ग्रहण करे छे.

ज्ञान विना पण जीवो नु कर्म ग्रहण

मूलम्—

एवं हि कर्माण्य सुमान् विलाति शुभाशुभानि प्रविदन्नवश्यम्
जीवस्यकर्म ग्रहणेस्वभावो, ज्ञानं विनाऽप्यस्तिनिदर्शनंयत् ॥१

भावार्थ- ए प्रमाणे जाणतो छतो पण जीव अवश्य शुभाशुभ कर्मो ने ग्रहण करे छे ज्ञान विना पण कर्म ग्रहण मा जीवनो स्वभाव कारण भूत छे ते दृष्टान्त थी वतावाशे.

विवेचन-जैनागमो मा पाच प्रकार ना शरीर वतावेल छे. औदारिक, वैक्रिय, आहारक तैजस अने कार्मण. मनुष्य अने तिर्यंच नो जे शरीर देखाय छे ते औदारिक देव अने नारको नुं शरीर ते वैक्रिय वैक्रिय शरीर ना पण वे भेद—मूल वैक्रिय शरीर अने उत्तर वैक्रिय शरीर देव अने नारको ना भव धारणीय जे शरीर ते मूल वैक्रिय शरीर अने तेओ कारणवशात् जे नवु शरीर वनावे ते, वैक्रिय लब्धिधारक मनुष्य अने तियंचो वैक्रिय लब्धि द्वारा

ते वैक्रिय शरीर कहवाय छे अने वायु काय ने वैक्रिय
शरीर बनावे छे उपरांत वैक्रिय शरीर बांधे लब्धिथी
चउदे पूर्वधर मुनि भगवंतो कोई पण प्रकार नो
संशय थाय त्यारे तेना निवारण माटे अथवा समवसरण
आदि नी ऋद्धि जोवा माटे जे एक मुंड हाथ
प्रमाण आहारक लब्धि द्वारा जे शरीर बनावे ते
आहारक शरीर. शरीर मां रहेली जे गरमी जे आहार
पचाववानो उपयोगी बने छे ते तैजस शरीर अने जेना
द्वारा जीव कर्म ग्रहण करे छे ते कार्मण शरीर.

औदारिक अने वैक्रिय शरीर ने जे भव पुरता
होय छे उपरान्त वैक्रिय अने आहारक शरीर कारण वशात्
बनावे त्यारेज होय छे. तैजस अने कार्मण शरीर आत्मा
नी साथे अनादि काल थी रहेलाज छे. ए बन्ने शरीरो
आत्मा ज्यारे कर्म थी मुक्त बने त्यारेज अलग पडे
छे. जीव ज्यारे कोई पण प्रवृत्ति वारंवार करे छे
त्यारे ते प्रवृत्ति ना योगे वारंवार तेना संस्कार पडवाथी
ते प्रवृत्ति जीवना स्वभाव रूप बनी जाय छे. तेम
अहीं पण संसारी आत्मा अनादि काल थी संसार
मां राग-द्वेष ना योगे कार्मण शरीर ना कारणे कर्म
बंध करे छे. कर्म ना बंध योगे संसार मा जन्म, जीवन
अने मृत्यु रूप भव करवा पडे छे. वली कर्म बंध करे
छे अने वली पाछा भवो करे छे. आम कर्म बंध नी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भावार्थ [illegible]

पोताना [illegible] जाप ने सांभळे छे, [illegible] जोई पूजा

ग्रहण करे छे [illegible] भक्तो नो उद्धार पण करे छे

विवेचन- जैन सिद्धान्त मुजब [illegible]
आ जगत ईश्वरे बनाव्यु नथी परन्तु [illegible] जगत
अनादि काल थी छे सुख अने दुख पण ईश्वर आपतो
नथी परन्तु जीव पोते उपार्जन करेल शुभाशुभ कर्मो ना
उदये सुख-दुःख पामे छे. निरंजन, वीतराग अने संसार थी
मुक्त बनेल ईश्वर ने जगत बनाववानु कोई प्रयोजनपण
नथी, माटे जगत नो कर्त्ता ईश्वर नथी आवी जैन
शासन नी मान्यता छे परन्तु जगत मा एक एवी
मान्यता पण प्रवर्ते छे के आ जगत ब्रह्मा बनावे छे,
विष्णु जगतनु रक्षण करेछे अने महादेव जगतनो नाश
करे छे एवी मान्यता वाला एटले ईश्वर ने जगत-कर्त्ता
तरीके माननार ने ग्रथकार श्री प्रत्युत्तर आपे छे के
इन्द्रिय अने हाथ रहित एवो ईश्वर जेम कान वगर
भक्तोना जाप ने सांभले छे, चक्षु वगर भक्त ने जोई

ने हाथ विना पण पूजा ग्रहण करे छे, अने हाथ विना पण जगत ना जीवो नो उद्धार करे छे, तेम इन्द्रिय अने हाथ विना आत्मा नी कर्म ग्रहण करवानी शक्ति ना योगे जीव कर्म ग्रहण करे छे.

मूलम्-

पापं हरत्याशु कृतंस्वकीयं-मनन्तशक्तेः सहजात्तथाऽऽत्मा ।
लोके यथावा गुटको रसस्य,सिद्धो निरक्षेन्द्रिय पाणिमुक्तः ।४

गाथार्थ-जेम ईश्वर पोताना भक्तो ना पापो ने पोतानी स्वाभाविक अनन्त शक्ति थी दूर करे छे अथवा जेम लोक मा इन्द्रिय अने हाथ रहित एवी अचेतन गोली तेवा प्रकारनी औषधि थी संस्कार पामेल होवाथी पारा ना रसने ग्रहण करे छे, तेम इन्द्रिय अने हाथ रहित एवो आत्मा पोताना तेवा प्रकार ना स्वभावथी कर्म ग्रहण करे छे

विवेचन- हवे तेज वस्तुने दृष्टांत द्वारा दृढ करता जणावे छे के जेम इन्द्रिय अने हाथ वगर पण आत्मा पोताना कर्म ग्रहण करवाना स्वभाव ना लीधे शुभाशुभ कर्मो पण ग्रहण करे छे

चेतन वस्तु नुं दृष्टांत आप्या बाद हवे तेज वस्तु ने अचेतन वस्तुनु दृष्टात आपी दृढ करता जणावे छे के अचेतन एवी गोली इन्द्रियादि नही होवा छता पण

पारा ना रस ने ग्रहण करे छे तेम इन्द्रियादि रहित
एवो आत्मा पण तेवा प्रकार ना कर्म ग्रहण करवाना
पोताना स्वभाव ना लीधे शुभाशुभ कर्मो ग्रहण करे छे

मूलम्—

दुग्धादि त्रपुनीर शोषी सशब्दवेधी बल शुक्रदश्च ।
सूतोऽपिचैतत्कुरुतेनिरक्षोजीमस्तुशक्तोनकरोतिकिम् ५।

गाथार्थ—अचेतन एवो पारो पण दुध आदि पिये छे
तरवाना रस नु शोषण करे छे, लक्ष्य नो वेध करे छे
बल अने वीर्य ने आपे छे, तो शक्ति वालो एवो जिव
शु-शु न करे ? अर्थात बधु ज करे छे

विवेचन—शक्ति बे प्रकार नी छे—एक सामान्य शक्ति
अने बीजी योग, उत्साह, बल, वीर्य एवी विशिष्ट शक्ति
सामान्य शक्ति तो जड एवा दरेक पदार्थो मा पण रहेली
[illegible] छे पुद्गल एक समय मा चौद राज लोक ना
[illegible] गुणी जई शके छे ते सिवाय
[illegible] पण [illegible] पुद्गल मय एवा जड पदार्थो
[illegible] छे परन्तु ते सघळी शक्ति आ चेतन द्रव्य
[illegible] जीव द्रव्य पोताना उद्यम
[illegible] प्रगट करी शके छे सामान्य शक्ति
[illegible] एवो पारो पण दुध आदि नु पान
[illegible] नु शोषण करे छे, शब्दानु
[illegible] सामर्थ्य धरावे छे अने

बल-वीर्य आपे छे तो अनंत शक्ति वाळो आत्मा पोताना कर्म ग्रहण करवानी स्वाभाविक शक्तिना लीधे केम कर्मो ग्रहण न करी शके ? अर्थात् जरुर ग्रहण करे छे.

मूलसूत्र—

वनस्पतिनामपिवायथाहृति-र्यन्नालिकेऽर्यादिषुदृश्यतेऽपिच ।
यद्वाघर्नंकिलवस्तुसत्त्व, सङ्गृह्यनीरस्वदमार्द्रतरयन्तु ६

गाथार्थ- जेम वनस्पतिओ नो आहार नालियेर आदि मां देखाय छे, घणुं शु कहिये ? सर्व वस्तु पाणीने संग्रही ने पोता नी मेळे भीनी थाय छे.

विवेचन- स्वाभाविक शक्ति वस्तु मा केवीरीते रहेल छे, ते ग्रंथकार श्री दृष्टांत द्वारा बतावी ने विषय ने विशेष पुष्ट करे छे.

दरेक वनस्पति ना मूलमांज पाणी नु सिंचन थाय छे, परन्तु पाणी नालीयेर मा पण जणाय छे तो मूल मा सिंचायेल पाणी ने वृक्षना टोच सुधी कोण पहोंचाड़े छे ? एटले नक्की थाय छे के वनस्पति पोतानी स्वाभाविक शक्ति थी पाणी ने ग्रहण करी ऊंचे टोच सुधी पहोंचा-डवानुं कामकरे छे वधारेशु कहिये ? बधी वनस्पतिओ एज रीते पाणी ने संग्रही ने पोतेज दरेक वस्तु ने भीनी राखे छे तेवीज रीते आत्मा पण पोताना कर्म ग्रहण करवाना स्वभाव ना लीधे कर्म ग्रहण करे छे.

मूलम्-

नचेतिवाच्यपयसोऽस्तिशक्ति-स्तद्भेदनेयद्व्यभिचारितास्ति।
नभेदनं मुद्गशिलासुतद्वत्, धान्येऽम्भसः किंकदुकानभेद्या। ७

गाथार्थ- पदार्थ भेदवा मां पाणी नी शक्ति छे एम न कहेवुं, कारण के मगशेलिया पत्थर ने पणी भेदी शकतुं नथी जो पाणी धान्यने भेदी शके छे तो कागडु ने पाणी केम भेदी शकतुं नथी ?

विवेचन- ग्रही वादी शंकाउठावे छे के पदार्थ भेदवामा पाणीनी शक्ति छे परन्तु वनस्पति नी शक्ति नथी, एटले वनस्पतिना मूल मा पाणी सिंचवाथी जे वृक्षना टोच सुधी पाणी जाय छे ते शक्ति पाणी नी छे, वनस्पति नी नथी. एम कहेवुं दोषरूप छे. ते बतावता तेनो प्रत्युत्तर ग्रापता ग्रथकार श्री कहे छे के पदार्थ भेदवामा पाणी नी शक्ति छे तो पाणी मगशेलियो पत्थर ने केम भेदी शकतु नथी वली वादी कहे छे के मगशेलियो पत्थर कठोर होवा थी पाणी मगशेलिया पत्थर ने भेदी शकतु नथी. तेना पण जवाबमा ग्रथकार श्री जणावे छे के जो मगशेलियोपत्थर कठोर होवा थी पाणी तेने भेदी शकतुं नथी, परन्तु ज्यारे बधा धान्यो ने पाणी भेदी शके छे तो शा माटे कागडु ने पाणी भेदी शकतुं नथी ? एटले निश्चय थाय छे के पदार्थो ने भेदवानी शक्ति पाणी मां नथी तेथीज वनस्पति ना मूल मा सिंचायेल पाणी ने टोच सुधी पहो-

वाडवानु काम वनस्पति पोतानी स्वाभाविक शक्ति थी करे छे, पाणी नी शक्ति थी नही. दरेक पदार्थ मां पोतानी स्वाभाविक शक्ति रहेली छे तेवीजरीते आत्मा पोतानी कर्म ग्रहण करवानी स्वाभाविक शक्ति थी कर्म ग्रहण करे छे

मूलम्-

सिद्ध तथेदगृहणीयमेव, वस्त्वत्र यस्यास्ति तदेव लाति ।
चुम्बकोलोहमथान्य-धातूनन्यांश्चगृह्णातितथास्वभावात् ८

भावार्थ- एटलुं सिद्ध थयुं के जे वस्तु ग्रहण करवा योग्य होय तेज वस्तु ने ग्रहण करे छे शुं लोह चुम्बक तेवा प्रकार ना स्वभाव थी लोढा ने छोडी बीजी धातुओ ने ग्रहण करे ?

विवेचन— आ जगत मा पदार्थो बे प्रकार ना छे- चेतन अने अचेतन बन्ने प्रकार ना पदार्थो ने पोत पोता ना स्वभाव अवश्य होय छे स्वभाव प्रमाणे दरेक पदार्थो काम करेज ज्ञानादि गुणो मा रमणता करवी ए आत्मा नो स्वभाव छे. सड़ण-पडण विध्वंस ए पुद्गल नो स्वभाव छे शीतलता ए पाणी नो स्वभाव छे. उष्णता ए अग्निनो स्वभाव छे एम दरेक वस्तुनो पोत पोतानो स्वभाव होय छे स्वभाव सम्बन्धमा प्रश्न होई शकतो नथी जेमके पाणी शीतल केम ? तो एकज जवाब के ते तेनो स्वभाव छे दरेक पदार्थ पोताना मूल स्वभाव ने छोडतो

नथी. परन्तु पोताना गुण स्वभाव पर पाछी आवे
जेमके पाणी गरम करवा थी पण पाछु ठंडु थई
जाय छे तेम लोह चुंबक पोताना लोढाना आकर्षण
करवाना स्वभाव ना कारणे लोढाने छोडी बीजी
धातुओ ने ग्रहण करतो नथी

मूलम्—

अप्येवमात्मापरपुद्गलोत्करान्,विहायगृह्णातिहिकर्मपुद्गलान्।
यादृक्षयादृक्ष भविष्यदायतिः,तादृक्ष तत्प्रेरणपारवश्यत. ॥६

गाथार्थ– ए प्रमाणे जेवा प्रकार नो भविष्य काल होय तेवा प्रकार नी प्रेरणा ना वश थी अने आत्मा ना ग्रहण ना स्वभाव थी पर पुद्गलो छोडी कर्म पुद्गलो ने जीव ग्रहण करे छे.

विवेचन चौद राज लोक मा आठ प्रकार ना पुद्गलो रहेला छे अर्थात पुद्गलो नी आठ प्रकार नी जाति छे जैन पारिभाषिक शब्दो मा जाति ने वर्गणा कहे छे– (१) औदारिक वर्गणा (२) वैक्रिय वर्गणा (३) आहारक वर्गणा (४) तैजस वर्गणा (५) श्वासोश्वास वर्गणा (६) भाषा वर्गणा (७) मन वर्गणा (८) कार्मण वर्गणा जेना द्वारा औदारिकशरीर बनावीशकायते औदारिकवर्गणाजेना द्वारा वैक्रिय शरीर बनावी शकाय ते वैक्रिय वर्गणा, जेना द्वारा आहारक शरीर बनावी शकाय ते आहारक वर्गणा, शरीर मा जे गरमी रहेली ते तैजस शरीर अने एवु

तैजस शरीर जेना द्वारा बनेलु छे ते तैजस वर्गणा, जेना द्वारा श्वासोश्वास बनावीशकाय ते श्वासोश्वासवर्गणा जेना द्वारा भाषा-वचन योग बनावाय छे ते भाषा वर्गणा जेना द्वारा मन योग बनावाय छे ते मन वर्गणा अने जे कार्मण नामनु शरीर जेनाद्वारा बनेलु छे ते कार्मणवर्गणा

कार्मण शरीर विना आत्मा आठे वर्गणाओ ना पुद्गलो पण ग्रहण करी शकतो नथी अर्थात् कार्मण शरीर द्वाराज आठे वर्गणा ना पुद्गलो ग्रहण करे छे माटे जेवा प्रकार नो भविष्य काल होय तेवा प्रकार नी प्रेरणा ने वश आत्मा ना कर्म ग्रहण करवाना स्वभाव थी जीव अन्य पुद्गलो ने छोडी कर्म पुद्गलो ने ग्रहण करे छे

मूलम्-

सुप्तोयथावाकिलकश्चिदङ्गभृत्, स्वप्नान्प्रपश्यन्कुरुतेसमाःक्रिया नोइन्द्रियेणैव न तत्रकिञ्चनेन्द्रिय द्वयप्राणमहो प्रवर्तते ।।१०।।

गाथार्थ- जेम कोई निद्राधीन प्राणी स्वप्नो ने जोतो छतो मन वडे सर्व क्रियाओ करे छे. तेमा क्याय ज्ञानेन्द्रिय अने कर्मेन्द्रिय नु तेज प्रवर्ततु नथी

विवेचन इन्द्रिय विना पण जीवो कर्म ग्रहण करी सके छे ते दृष्टात द्वारा विशेष पुष्ट करता जणावे छे के इन्द्रियो ना बे प्रकार छे-एक ज्ञानेन्द्रिय अने बीजी

कर्मेन्द्रिय [illegible] घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय
अने श्रोत्रेन्द्रिय आदि(चामडी, जीभ, नाक, आंख अने
कान ए पांच ज्ञानेन्द्रिय. हाथ, पग आदि कर्मेन्द्रिय
ज्यारे प्राणी ऊंघतो होय त्यारे ज्ञानेन्द्रिय अने कर्मेन्द्रिय
एम बे इन्द्रियो मांथी एक पण इन्द्रिय नी प्रवृत्ति होती
नथी. छता पण प्राणी मन वडे स्वप्न मा बधी क्रियाओ
करे छे तेम इन्द्रिय विना जीव पण कर्म ग्रहण
करी शके छे

मूलम्—

जीवस्तथा कर्मभरंहिलाति, स्वप्नो भ्रमोऽयं ननु नैवमाख्यः ।
महत्तमे तस्य फले च दृष्टे, पात्र हियत्स्वप्नमयं स्मरत्यहो ११

गाथार्थ— तेवीज रीते जीव कर्म समूह ने ग्रहण करे छे
स्वप्न ए भ्रम छे एम न कहेवु कारण के उत्तम स्वप्नोनु
फल देखाय छे, स्वप्ननु स्मरण थाय छे एम न केहवु,

विवेचन— इन्द्रिय विना पण प्राणी स्वप्न मा
बधी क्रियाओ मन थी करे छे तेम इन्द्रिय विनापण
जीव कर्म ग्रहण करे छे ते बाबत मा वादी शका करता
जणावे छे के आ दृष्टात बराबर घटतु नथी कारण के
स्वप्न ए तो भ्रम छे कर्मो नुं फल देखाय छे परन्तु
स्वप्नो नु फल देखातुं नथी, माटे स्वप्न ए भ्रम छे तेनुं
[स]माधान करता ग्रथकार श्री जणावे छे के स्वप्न ए

थाय छे परन्तु कर्मो नुं तो स्मरण थतुं नथी माटे स्वप्न नु दृष्टान्त बराबर घटतुं नथी. तेना प्रत्युत्तर मा जणाववानुं के जेम कोई स्वप्नों न स्मरणमा थाय छे तेम ज्ञान विशेष थी विशिष्ट ज्ञानी पुरुषो ने कर्मो नु पण स्मरण थाय छे माटे दृष्टान्त बराबर घटे छे एटले जीव जेम इन्द्रिय विना मन थी घणी क्रियाओ करे छे तेम इन्द्रिय विना पण जीव कर्मो ग्रहण करे छे

मूलम्-

स्यादन्विनः संशय एव नात्र, व्यर्थोभवत्स्वप्न भरस्य जन्तोः।
स्वप्नोयथाकेवलिनस्तथास्ति, कर्मग्रहस्तत्क्षणनाशनो यत् ।१४

भावार्थ-जेम प्राणी ने स्वप्नो नो समूह व्यर्थ थाय छे आ विषय मा प्राणी ने संशय नथी. तेम केवली भगवत ने पण जे समये कर्म बंध थाय छे तेज समये कर्म नो नाश पण थाय छे.

विवेचन- हजू वादी शंका करे छे के स्वप्न सम्बन्धी आपेल दृष्टांत बराबर घटतु नथी, कारण के प्राणी ने जे स्वप्नो आवे छे ते स्वप्नो नो समूह जागृत थया बाद तरतज नाश पामी जाय छे आ बाबत मां कोई पण प्राणी ने संशय नथी, परन्तु कर्मो तो नाश पामता नथी. तो जबाब मा जणाववानु के जेम स्वप्नो नो समूह तात्कालिक नाश पामे छे, तेम केवली भगवतो ने पण जे समये कर्म नो बंध थाय छे तेज समये कर्म

नो नाश थाय छे. माटे इन्द्रिय विना पण जीव कर्मो ग्रहण करी शके छे.

मूलम्—

तथानिजात्मन्यपि पश्यतोऽत्र, सम्मीलयचेतः परिकल्प्यसुस्थम् ।
उत्पत्तिकालादवसानसमा-मात्मासृजेत्कार्मणतैजसाभ्याम् १५

गाथार्थ- तेवीज रीते तूं अही आखो खोली ने अने मन स्वस्थ वनावी ने जूए तो ध्यान आवशे के आत्मा उत्पत्ति कालथी माडी अन समय सुधी तैजस कार्मण वडे सृजन करे छे

विवेचन—जीव ज्यारे गर्भ मा आवे छे त्यारे तेने शरीर अने इन्द्रिय आदि होता नथी तो आहारादि ग्रहण रुप क्रिया केवी रीते करे छे ? आ वावत मा तू आखो खोली अने मन स्वस्थ करी विचारे तो मालूम पडशे के उत्पत्ति समय थी माडी अने अत समय सुधी जीव जे आहारादि ग्रहण रूप क्रिया करे छे ते सर्व तैजस अने कार्मण शरीर वडेज करे छे तो जेम इन्द्रिय विना आहारादि जीव ग्रहण करे छे तेवीज रीते इन्द्रिय विना पण जीव कर्म ग्रहण करी शके छे.

मूलम्—

गर्भस्थितः शुक्ररजोन्तरागतो यथोचिताहार विधानतोद्भुतम् ।
धातूंश्चसर्वानपिसर्वथास्वय-मात्माविधत्तेऽत्रविनाक्षवीर्यतः १६

[illegible]

[illegible] सर्व धातुओ ने [illegible] पुष्ट [illegible]

रीते इन्द्रिय विना पण जीव कर्म ग्रहण करी शके छे

मूलम्-

गर्भस्थितो जन्मनि सर्वदैव गृह्णन् स्त्रियाहारमशेषलब्धम् ।
ततस्ततस्तत्परिणामतः स्वयं धातून् विधायैव करोति पुष्टिम् १७

भावार्थ- गर्भ ना वश थी गर्भ मा हमेशा माताए करेल
मलेल आहार ने ते ते रूपे परिणमावी ने जीव स्वयं
धातुओ ने उत्पन्न करीने पुष्टि करे छे.

मूलम्-

तथाऽहनि रोमशिरादयश्चकः, खलंपरित्यज्यरसान् समाश्रयेत् ।
पुनःपुनःप्रोज्झतितन्मलंबलात्,दधद्रजःसात्त्विकतामसान्गुणान्
सज्ज्ञानविज्ञान कषायकामान् हिताहिता चारविचारविद्याः ।
रोगान् समाधींश्च दधान एव-मास्तेकथं सक्रिय एवदेहे ॥१८॥

भावार्थ-आ जीव ए प्राणो वडे आहार ने खेंची ने धारण करतो छतो रस भाग ने छोडी ने रसादि ने ग्रहण करे. वली बल पूर्वक मलो ने छोडे छे अने फरी राजस, सत्व अने तामस गुणो ने धारण करतो छतो फरी सम्यक् ज्ञान, निरूप विपर्यक ज्ञान, कषाय, भोगो हितकारक, अहितकारक, सद्व्यवहार, असद् व्यवहार, विचार, विद्या, रोग अने समाधि धारण करे छे आवो जीव देह मां केवी रीते क्रिया वालो रहे छे ?

सूत्रम्-

किंदेहस्थेऽस्य पाणीन्द्रियादिकं, सम्मितेनैव करोतिताद्दशम् ।
हिवेतन याप्यवद न्तुत हशा, प्राणधिर्यातिगृहेश्वरोयथा ॥२०

भावार्थ- शु शरीर मध्ये रहेल आ जीव ने हाथ अने इन्द्रियादि होय छे ? ते जेथी पहेला बतावेल आहारादि नु ग्रहण करवु, मल भाग नु छोडवु अने रसोनु ग्रहण करवु विगेरे पूर्ण काल पर्यंत जीव करे छे अने पछी जेम घर नो मालिक पूर्ण काल घरमा रही ने पछी बहार जाय छे तेम जीव पछी बीजा जन्म मा जाय छे

विवेचन- ससारी जीवन जीववा माटे प्राण अवश्य धारण करवो पडे छे प्राण धारण कर्या सिवाय ससारी जीवन जीवी शकायज नही एटलेज प्राण नो योग ते जन्म अने प्राण नो वियोग ते मरण कहेवाय छे

जे जीव स्व योग्य पर्याप्ति पूरी करी मरण पामे ते पर्याप्तो कहेवाय छे परन्तु स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी कर्या विना मरण पामे ते अपर्याप्तो कहेवाय छे. जीव ज्यारे एक भव मा थी बीजा भव मा जाय छे त्यारे ते भव सम्बन्धी शरीर छोड़ी ने जाय छे परन्तु तैजस अने कार्मण नाम ना बे शरीर मृत्यु पाम्या बाद बीजा भव मा पण साथे लई जाय छे एटले उत्पत्ति स्थान मा पण तैजस अने कार्मण सिवाय एकपण शरीर होतु नथी अने उत्पत्ति स्थान मा जई प्रथम पर्याप्ति रचवानु कार्य जीव करे छे

ससारी जीवन जीववा माटे पुद्गलो ना आलवन द्वारा जीव जे शक्ति प्राप्त करे छे ते पर्याप्ति कहेवाय छे

आहार पर्याप्ति — उत्पत्ति स्थान मा रहेल आहार ना पुद्गलो ने जे शक्ति वडे ग्रहणकरी खल एटले मल आदि अने रस एटले शरीर रचनादिमा उपयोगी रूपे परिणामावे तेनु नाम आहार पर्याप्ति.

शरीर पर्याप्ति — रस योग्य पुद्गलो ने जे शक्ति वडे सात धातु रूपे शरीर मय बनावे ते शरीर पर्याप्ति.

इन्द्रिय पर्याप्ति .— रस रूपे जुदा पडेला पुद्गलो मा थी तेमज सात धातु मय शरीर रूपे रचायेल पुद्गलो मा थी इन्द्रिय योग्य पुगद्लो ग्रहण करी इन्द्रिय रूपे परिणमाव वानी जे शक्ति तेनु नाम इन्द्रिय पर्याप्ति.

[illegible]

[illegible]

मूलम्

जीवः पुना रूपकरादिवर्जितः, देहेन्द्रियाणि कथं प्रवर्तयेत्
आहारपानादिक इन्द्रियार्थके, शुभाशुभारम्भककर्मणांहि ॥

गाथार्थ- रूप अने हाथ रहित एवो जीव शरी एव शरीर ने इन्द्रिय माटे आहारादि मा अने शुभ-अशु उपार्जन करनार कार्यो मा केम प्रवर्तावे ?

विवेचन—जीव शरीर ने इन्द्रियादि माटे आहार-पाण आदि ग्रहण करवामा अने शुभ-अशुभ कार्यो मा प्रवर्त छे ते समये जीव ने रूप- इन्द्रिय- हाथ आदि हो नथी छता पण ते इन्द्रियादि माटे आहार- पाणी आ ग्रहण करवानी अने शुभाशुभ कार्यो नी प्रवृत्ति म शरीर ने प्रवर्तावे छे तो रूप, इन्द्रिय, हाथ आदि वि पण जीव शुभाशुभ कर्मो केम ग्रहण न करे ? अथ ग्रहण करेज .

मूलम्-

चेदिन्द्रियैः पाणिमुखैरथाङ्गैः, सर्वाःक्रियाः स्युर्भविनं विनं
तदासमस्ताःकुणपैरजन्तुकैः,क्रियाःक्रियन्तेनकथंकरेन्द्रियैः ॥२४ ।

गाथार्थ- जो जीव विना इन्द्रियो, हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रिया थाय तो जीव रहित मडदाओ

हाथ आदि द्वारा सर्व क्रिया केम न करे ?

विवेचन- जीव विना इन्द्रियो अने हाथ मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रियाओ थाय छे एम मानिये तो शी वाधकता ? तेना प्रत्युत्तर मा जणाववानु के जो जीव विना इन्द्रियो अने हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रिया थाय तो जीव रहित मुडदाओ पण हाथ आदि द्वारा सर्व क्रियाओ केम न करे ? परन्तु जीव रहित मुडदाओ हाथ आदि द्वारा सर्व क्रिया करता नथी तेथी जीव विना इन्द्रियो अने हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रियाओ थती नथी

मूलम् -

सिद्ध तथैतद्यदशस्त शस्त कर्मात्मनैव क्रियते न चाङ्गैः ।
अरूपिणः रूपितनश्च कर्म, सूक्ष्मं कथंनामनगृह्यते तत् । २५

भावार्थ-आत्मा वडेज शुभ अने अशुभ कर्मो-कार्यो कराय छे परन्तु शरीरना अंगो वडे नही एम सिद्ध थयु तो आत्मा वडे रुपी अने सूक्ष्म वस्तु कर्म केम न ग्रहण थाय ?

विवेचन- आत्मा वडेज शुभ अने अशुभ कार्यो थाय छे परन्तु शरीर ना अवयवो वडे आत्मा विना शुभाशुभ कार्यो थता नथी एम सिद्ध थयु तो आत्मा जो शुभाशुभ कार्यो करी शके छे तो आत्मा रुपी अने सूक्ष्म वस्तु कर्म केम ग्रहण न करी शके ? अर्थात् ग्रहण करी शके छे

[illegible]

[illegible]

मूलम्

जीवः पुना रूपकरादिवर्जितः, इन्द्रियपूर्त्यपि कथं प्रवर्तयेत् ।
आहारपानादिकइन्द्रियार्थके, शुभाशुभारम्भककर्मणीह ।।२१

भावार्थ- रूप अने हाथ रहित एवो जीव क्यां एवा शरीर ने इन्द्रिय माटे आहारादि मा अने शुभ-अशुभ उपार्जन करनार कार्यो मा केम प्रवर्तावे ?

विवेचन—जीव शरीर ने इन्द्रियादि माटे आहार-पाणी आदि ग्रहण करवामा अने शुभ-अशुभ कार्यो मा प्रवर्तावे छे ते समये जीव ने रूप- इन्द्रिय- हाथ आदि होता नथी छता पण ते इन्द्रियादि माटे आहार- पाणी आदि ग्रहण करवानी अने शुभाशुभ कार्यो नी प्रवृत्ति माटे शरीर ने प्रवर्तावे छे तो रूप, इन्द्रिय, हाथ आदि विना पण जीव शुभाशुभ कर्मो केम ग्रहण न करे ? अर्थात् ग्रहण करेज .

मूलम्-

चेदिन्द्रियैः पाणिमुखैरथाङ्गैः, सर्वाःक्रियाः स्युर्भवितुं विनैव
तदासमस्ताःकुणपैरजन्तुकैः,क्रियाःक्रियन्तेनकथंकरेन्द्रियैः ।।

भावार्थ- जो जीव विना इन्द्रियो, हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रिया थाय तो जीव रहित मडदाओ

थ आदि द्वारा सर्व क्रिया केम न करे ?

विवेचन- जीव विना इन्द्रियो अने हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रियाओ थाय छे एम मानिये तो शी बाधकता ? तेना प्रत्युत्तर मा जणाववानु जे जो जीव विना इन्द्रियो अने हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रिया थाय तो जीव रहित मुडदाओ पण हाथ आदि द्वारा सर्व क्रियाओ केम न करे ? परन्तु जीव रहित मुडदाओ हाथ आदि द्वारा सर्व क्रिया करता नथी तेथी जीव विना इन्द्रियो अने हाथ, मुख आदि अवयवो वडे सर्व क्रियाओ थती नथी

मूलम् -

सिद्धं तथैतदवगम्यत शस्त कर्मेतरत्तत्क्रियते न चाङ्गैः ।
अरूपिणा रूपितमत्र कर्म, सूक्ष्मं कथंनामनगृह्यते तत् । २५

भावार्थ-आत्मा वडेज शुभ अने अशुभ कर्मो-कार्यो कराय छे परन्तु शरीरना अंगो वडे नही एम सिद्ध थयु तो आत्मा वडे रूपी अने सूक्ष्म एवु कर्म केम न ग्रहण थाय ?

विवेचन- आत्मा वडेज शुभ अने अशुभ कार्यो थाय छे परन्तु शरीर ना अवयवो वडे आत्मा विना शुभाशुभ कार्यो थता नथी एम सिद्ध थयु तो आत्मा जो शुभाशुभ कार्यो करी शके छे तो आत्मा रूपी अने सूक्ष्म एवु कर्म केम ग्रहण न करी शके ? अर्थात् ग्रहण करी शके छे.

पोतानी स्वाभाविक [illegible] [illegible] नी [illegible] शक्ति [illegible] हास आदि विना पण कर्मो धारण करी शके छे अर्थात् कर्मो धारण करे छे

जीव साथे लागेला कर्मो नु [illegible]

मूलम्—

कर्माणि जीवैकतरप्रदेशे ऽप्यनन्तसङ्ख्यानि भवन्ति चेत्तदा ।
कथंनदृश्यानिहितानिपिण्डी-भूतानिदृष्ट्यानिगदन्तु कोविदा.२६

भावार्थ- हे विद्वानो, जो आत्मा ना एकेक प्रदेश मा अनत कर्मो रहेला छे तो समूह रूप थयेला कर्मो दृष्टि वड़े केम देखाता नथी ते कहो.

विवेचन —ससार मा जीव ने घणे भागे प्रत्यक्ष नजरे वस्तु जोवानी आदत छे अने प्रत्यक्ष देखाय त्यारे वस्तु प्रत्येनी श्रद्धा पैदा थाय छे अने ते वस्तु माने छे तेम अहिया कर्मो नजरे प्रत्यक्ष देखाता नथी, तेथी शका थाय ते स्वाभाविक छे तेथी सशय थवा थी पूछे के शास्त्र मां कहेल छे के आत्मा ना असख्यात प्रदेश छे नाभि स्थाने रहेला आठ प्रदेशो छोडी दरेक आत्म प्रदेशे अनतानत कर्मो रहेला छे जो आत्मा ना एकेक आत्म प्रदेशे अनत कर्मो लागेला होय तो कर्मो नो आटलो समूह प्रत्यक्ष नजरे केम देखातो नथी ? आवो सशय थाय छे, माटे हे पडितो, तमो तेनो उत्तर आपो तेनो उत्तर आगल नी गाथा मा जणावे छे

मूलम्—

सत्यक्तिन् ! सूक्ष्मत्वान्निजानि,पश्यन्तिनोचर्महशोहिमादृशाः
ज्ञानीतुसज्ज्ञान दृशोदृशोद्या-श्पश्येद्यथात्रेव निदर्शनन्तणु ३०

गाथार्थ- हे पंडित, तारूं कथन सत्य छे. कर्मो अत्यन्त सूक्ष्म होवाथी आपणा जेवा चर्म चक्षु वालाओ कर्मो जोई शकता नथी, परन्तु सम्यग् ज्ञान रूपी दृष्टि वाला ज्ञानी पुरुषो कर्मो ने जोई शके छे तो दृष्टात साभल

विवेचन-जैन आगमो मा ज्ञान ना पाच प्रकार बताव्या छे—मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्याय ज्ञान अने केवल ज्ञान. ए दरेक नो विषय अलग अलग होय छे मतिज्ञानी पाच इन्द्रिय अने मन द्वारा पोत पोताना क्षयोपशम प्रमाणे द्रव्य अने पर्यायो जाणे छे तेमा इन्द्रिय अने मन नो विषय पण अलग अलग होय छे सफेद, लाल, पीलो, नीलो अने कालो ए पाच वर्णो ने चक्षु द्वारा जणाय छे सुगध अने दुर्गन्ध ए गधो नाक द्वारा जणाय छे तीखो, कडवो तूरो, खाटो अने मधुर ए पाच रसो जीभ द्वारा जणाय छे ठडो, गरम, चिकाश वालो, लूखो, हलको, भारे, खरबडो अने सुंवालो ए आठ स्पर्शो स्पर्शेन्द्रिय द्वारा जणाय छे सचित, अचित, अने मिश्र ए त्रण प्रकार ना शब्दो कान द्वारा जणाय छे. दरेक पदार्थो नु चिन्तवन करवु ते मन द्वारा थाय छे. एटले वर्ण, रस, गध, स्पर्श

श्रुत ए पाले इन्द्रिय नो विषय छे, अने पदार्थ नु चिन्तवन करवु ते मन नो विषय छे. **श्रुतज्ञानी** पोते इन्द्रिय अने मन द्वारा पोत पोताना क्षयोपशम प्रमाणे आगम अथवा साभलेल पदार्थ नु द्रव्य अने पर्याय थी जाणे छे **अवधिज्ञानी** अमुक हद सुधी इन्द्रिय अने मन विना रूपी पदार्थ नु प्रत्यक्ष पोत पोताना क्षयोपशम प्रमाणे द्रव्य अने पर्याय थी जाणे छे. **मनः पर्यवज्ञानी** अढी द्वीप मा रहेल सन्नी पंचेन्द्रिय ना मनोभावो जाणे छे **केवलज्ञानी** एकज समय मा त्रिकालवर्ती सर्व द्रव्य अने सर्व पर्यायो ने प्रत्यक्ष जाणे छे चक्षु नो विषय रूपी अने स्थूल पदार्थो जोवानो होवाथी चर्म चक्षु वालाओ फक्त रूपी अने स्थूल पदार्थो जोई शके छे परन्तु रूपी होवा छता सूक्ष्म पदार्थो चर्म चक्षु वालाओ जोई शकता नथी कर्मो रूपी होवा छता सूक्ष्म होवाथी चर्म चक्षु वालाओ जोई शकता नथी, परन्तु केवल ज्ञानी ओ कर्मसमूहो सूक्ष्म होवा छतां केवल ज्ञान वडे जाणी शके छे.

मूलम्-

पात्रेचवस्त्रादिषु गन्धपुद्गलाः.सौगंध्यदौर्गंध्यवतो हिवस्तुन ज्ञेयानसा तेन हिपिण्डभावं, गता अपीक्ष्या नयनादिभिस्तु

भावार्थ-पात्रमा अने वस्त्र आदि माँ सुगध अने दुर्गन्ध

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कारणे [illegible] जोई [illegible]

भगवनो केवल ज्ञान [illegible] जाणी [illegible]

छे अपने केवल दर्शन [illegible] शके छे [illegible]

मा पण औषधि थी मिश्र [illegible] पारा मा रहेलु सोनु

आंख नो विषय होता [illegible] जोई शकतु

नथी परन्तु प्रयोग थी ते पण जोई शकाय छे.

मूलम्-

यदा तु कश्चिद्रससिद्ध योगी, कर्षेद्यदैतन्ननु तस्य सत्ता।
एवंहिकर्माण्यपिजीवगानि, ज्ञानीविजानातिनचापरोऽत्र ॥३

गाथार्थ- जेम कोई सिद्ध पुरुष पारा ना रस माथी सोनु बहार खेंची काढे छे त्यारे सोनु तेमा रहेलु छे एम नक्की थाय छे. ए प्रमाणे जीव मा रहेल कर्मो पण ज्ञानी जाणे छे परन्तु बीजो जाणतो नथी

विवेचन—पाराना रस मा रहेलु सोनु औषधि आदि ना कारणे आख थी देखातु नथी परन्तु कोई सिद्ध पुरुष पाराना रस मा रहेल सोना ने बहार खेची काढे छे त्यारे सोनु आख थी देखी शकाय छे. ए प्रमाणे जीव मा रहेल कर्मो ना समूह ने ज्ञानी जाणी शके छे अने जोई शके छे परन्तु बीजो जाणी शकतो नथी अने जोई शकतो नथी

॥ अथ चतुर्थोऽधिकारः ॥

जीव अने कर्म नो आधार आधेय सम्बन्ध

मूलम्-

कर्माणि मूर्त्तान्य सुमानमूर्त्तः, साकृत्यनाकृत्य भियुक्तिरेषा ।
न्याय्या कथ येन हि वस्तुभिन्नं नाधारकाधेयकतां लभते । १

गाथार्थ- कर्मो रूपी छे अने आत्मा अरूपी छे तो साकार अने निराकार नो सयोग न्याययुक्त केवी रीते होय ? अलग जाति वाला नो आधार अने आधेय भाव केवी रीते घटे ?

विवेचन—सरखा स्वभाव वाली अने एक जाति वाला वस्तु नो सयोग थाय छे वस्तु भिन्न स्वभाव अने भिन्न जाति वाला वस्तु नो सयोग केवी रीते थाय एवो प्रश्न थाय ते स्वाभाविक छे अहिया पण कर्म रूपी छे अने आत्मा अरूपी छे, कर्म साकार छे अने आत्मा निराकार छे तो ते बन्ने नो सयोग केवी रीते थाय आवो प्रश्न थाय ते स्वाभाविक छे, वली जे वस्तु जेमा समाय ते वस्तु आधार कहेवाय छे अने जे वस्तु समाय छे ते वस्तु आधेय कहेवाय छे. जेम के द्रव्य मा गुण समाय छे माटे द्रव्य आधार गणाय छे अने गुण आधेय गणाय छे. आत्मा द्रव्य छे अने सम्यक् दर्शनादि

[illegible]

मूलम्-

यदा तु कश्चिद्रससिद्ध योगी, स्वर्णप्रदर्शयत्यनु तत्र सत्ता।
एवंहि कर्माण्यपि जीवगानि, ज्ञानी विजानाति न चापरोऽत्र ॥३॥

भावार्थ- जेम कोई सिद्ध पुरुष पारा ना रस माथी सोनु बहार खेंची काढे छे त्यारे सोनु तेमा रहेलु छे एम नक्की थाय छे. ए प्रमाणे जीव मा रहेल कर्मो पण ज्ञानी जाणे छे परन्तु बीजो जाणतो नथी

विवेचन—पाराना रस मा रहेलु सोनु औषधि आदि ना कारणे आंख थी देखातु नथी परन्तु कोई सिद्ध पुरुष पाराना रस मा रहेल सोना ने बहार खेंची काढे छे त्यारे सोनु आंख थी देखी शकाय छे. ए प्रमाणे जीव मा रहेल कर्मो ना समूह ने ज्ञानी जाणी शके छे अने जोई शके छे परन्तु बीजो जाणी शकतो नथी अने जोई शकतो नथी

॥ अथ चतुर्थोधिकारः ॥

जीव अने कर्म नो आधार आधेय सम्बन्ध

मूलम्-

र्माणि मूर्त्तान्य सुमान्मूर्त्तः, साकृत्यनाकृत्य भियुक्तिरेषा ।
ाध्या कथ येन हि वस्तुभिन्नं नाधारकाधेयकतां लभते । १

गाथार्थ- कर्मो रूपी छे अने आत्मा अरूपी छे तो साकार अने निराकार नो सयोग न्याययुक्त केवी रीते होय ? अलग जाति वाला नो आधार अने आधेय भाव केवी रीते घटे ?

विवेचन—सरखा स्वभाव वाली अने एक जाति वाला वस्तु नो सयोग थाय छे वस्तु भिन्न स्वभाव अने भिन्न जाति वाला वस्तु नो सयोग केवी रीते थाय एवो प्रश्न थाय ते स्वाभाविक छे अहिंया पण कर्म रूपी छे अने आत्मा अरूपी छे, कर्म साकार छे अने आत्मा निराकार छे तो ते बन्ने नो सयोग केवी रीते थाय आवो प्रश्न थाय ते स्वाभाविक छे, वली जे वस्तु जेमा समाय ते वस्तु आधार कहेवाय छे. अने जे वस्तु समाय छे ते वस्तु आधेय कहेवाय छे. जेम के द्रव्य मा गुण समाय छे माटे द्रव्य आधार गणाय छे अने गुण आधेय गणाय छे. आत्मा द्रव्य छे अने सम्यक् दर्शनादि

[illegible]
गुणाश्रयो [illegible]
[illegible]
[illegible]
सजोग [illegible]
वचन [illegible]
[illegible]
अनादि काल थी छे. [illegible] आत्मा ने कर्मो नो
सजोग पण अनादि काल थी छे. [illegible] द्रव्य ने
कर्मो लागता नथी, परन्तु आत्मा ने कार्माण नाम नु
शरीर अनादि कालथी लागेलु छे अने कार्माण शरीर
ना योगेज आत्मा मन, वचन अने कायाना योग नी
प्रवृति करता नजीक मा रहेल कर्मो ने पोताना तरफ
खेची ले छे अने पछी जीव कर्म बध करे छे. माटे
कर्म ना स्वभाव ना लीधे अने ससारी जीव नी तेवा
प्रकार नी शक्ति ना लीधे आत्मा अने कर्म नो सजोग
थाय छे. 'गुणाश्रयो द्रव्यम्' ए तार्किको नु वचन छे.

ए वचनना अनुसारे गुणोना आश्रय भूत द्रव्य छे, अर्थात् गुणो हमेशां द्रव्य मां रहे छे. तो आत्मा द्रव्य छे तेम कर्म ए आत्मा नी अपेक्षाए गुण पण छे जेम सम्यग् दर्शनादि आत्मा ना गुणो छे तेम कर्म धारी संसारी आत्मा नो कर्म पण गुण होवा थी आत्मा रूप द्रव्य मा कर्म रूप गुण रही शके छे माटे ए बन्ने नो आधार आधेय भाव घटी शके छे

मूलम्—

यदा हि ये केचन विश्वमेतत्, सकर्तृकं प्राहुरहो ! समस्तम् ।
कल्पान्तकाले महति प्रवृत्ते, भाव्येव लीनं खलु विष्णुनाम्नि ३

भावार्थ- केटलाक कहे छे के आ सर्व विश्व कर्त्ता थी थयेलुं छे तेओना मते उत्कृष्ट कल्पान्त काल थये छते विष्णु नाम ना कर्त्ता मा लीन थई जशे ज

विवेचन- लोकोनी एवी मान्यता छे के विष्णु आ सर्व जगत ने बनावे छे परन्तु ज्यारे उत्कृष्ट कल्पांत काल आवे त्यारे आ समग्र जगत विष्णु मा लीन थई जाय छे एवी मान्यता वाला ने जवाब आपता ग्रंथकार जणावे छे के जेम तमारा मत मुजब उत्कृष्ट कल्पान्त कालना समये आ समग्र विश्व विष्णु मा लीन थई जाय छे, तो जेम ईश्वर मा जगत समाई जवाथी ईश्वर अने जगत नो आधार आधेय भाव घटी

रूपी द्रव्यो, सिद्ध, धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय आदि अरूपी द्रव्यो, तथा धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय अने पुद्गलास्ति काय विगेरे सर्व द्रव्यो धारण करे छे तो अरूपी एवो आत्मा सर्व रूपी द्रव्यो ने धारण केम न करे ? अर्थात् करेज, एटले आत्मा अने कर्म नो आधार आधेय भाव घटी शके छे.

मूलम्—

मिथ्यात्वदृष्टिभ्रमकर्ममत्सराः, कषायकन्दर्पकलागुणास्त्रयः ।
क्रियाःसमग्राविषयाअनेकधा,किंकिनधत्तेऽत्रवपुर्गतोऽप्ययम् ६

भावार्थ– शरीर मा रहेल आत्मा, मिथ्यात्व दृष्टि भ्रान्ति, द्वेष, कषाय, काम, कला, सत्त्वादि गुणो अने अनेक प्रकार नी समग्र क्रियाओ शुं शुं धारण नथी करतो ? अर्थात् करेज छे

विवेचन-मिथ्यात्व, द्वेष, कषाय विषय विगेरे मोहनीय कर्म ना भेदो छे. भ्रान्ति ए ज्ञानावरणीय कर्म नो प्रकार छे. कला ए बुद्धि नो विषय छे. सत्त्वादि गुणो पण कर्मनाज प्रकार छे. तेमज कर्मना योगे बीजी अनेक प्रकार नी क्रियाओ ए बधुं जीवमांज छे, अर्थात् आ बधुं जीवे धारण करेल छे, तो आत्मा अने कर्म नो आधार आधेय भाव केम घटी न शके ? अर्थात् जरूर घटी शके छे.

॥ अथ पंचमोऽधिकारः ॥

सिद्ध भगवन्तो ने कर्म नु अग्रहण

मूलम् –

चेदा अत्राऽधेदक भाव एव सिद्धोऽस्ति कर्मात्म कयोरवश्यम्
जीवास्तु सिद्ध अपि सम्गनन्त चतुष्टयेद्धाः परमेष्ठिसञ्ज्ञा(:) १
पृच्छामि पूज्या ! ननु नहि सिद्धा-स्मान्नोनकर्माणि समाददन्ते ।
कथंतदेषामपि मोक्षपसत्वा-च्छातासुकर्माणि निषेधकःकः ? २

गाथार्थ-जो आत्मा अने कर्म नो आधार आधेय भाव सिद्ध थयो तो चार अनंत चतुष्टय वाला अने परमेष्ठि एवा सिद्ध भगवंतो केम कर्म ग्रहण न करे ? एमने पण सुख नो भाव होवा थी तेओने शुभ कर्मो ग्रहण करता कोण रोके ?

विवेचन- प्राण बे प्रकार ना छे-द्रव्य प्राण अने भाव प्राण पांच इन्द्रिय, मन, वचन अने काया नुं बल, श्वासोश्वास अने आयुष्य ए दश द्रव्य प्राण छे अने अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अने अनंत वीर्य ए चार भाव प्राण छे संसारी जीव ने द्रव्य प्राण अने भाव प्राण एम बन्ने प्रकार ना प्राणो होय छे, परन्तु सिद्ध भगवंतो ने फक्त ए चार भाव प्राणज

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नथी ? मानो के [illegible] कर्मो

ग्रहण न करे परन्तु [illegible] कर्मो

केम ग्रहण न करे ? [illegible] शुभ कर्मो [illegible]

तेमने कोण रोकनार छे ? [illegible] नी गाथा

मा जणावे छे

मूलम्—

सत्यं यतस्तैजसकार्मणाख्य-शरीर योगस्य विनाश भावः ।
सुकर्मणां तेन गृहीत्ययोगा-ज्ज्योतिश्चिदानन्दभरैश्च तृप्ताः ३
सुखासुख प्रापण हेतु काल-प्रयोजक नो यदिमे निष्क्रियत्वात् ।
यद्वाप्यनन्तानि सुखानि तेषां, कर्माणि नानन्तानि भवन्त्यमूनि ४
इतीव तत्सौख्य भरस्य कर्म हेतुर्भवेन्नो यदतुल्यमानात् ।
इत्यादि कुहेतुभिरेव सिद्धा-त्मानो न कर्माणि हि लान्ति नित्याः ५

गाथार्थ-तारु कहेवु सत्य छे, परन्तु तैजस कार्मण नामना शरीर नो विनाश थवाथी शुभ कर्मोना ग्रहण ना सम्बन्ध नो अभाव छे. ज्योति ज्ञान अने आनन्द ना समूह थी तृप्ति छे सुख अने दुःख ना हेतु भूतकाल नी प्रेरणा करनार नथी सिद्धो निष्क्रिय छे. सिद्धोनु

विवेचन माणस ज्यारे भूख अने तरस थी पीडातो होय त्यारेज तेने खावा अने पीवा नी इच्छा थाय छे परन्तु पूर्ण पेट भरायेल होय त्यारे भूख अने तरस थी मूकायेल माणस ने खावानी इच्छा थती नथी. तेमज ससारी जीव ने क्षुधा वेदनीय अने पिपासा वेदनीय ना उदयेज भूख अने तरस लागे छे, परन्तु सिद्ध भगवतो ने वेदनीय कर्म नो नाश थयेल होवाथी तेमने कोई प्रकार नी इच्छा थती नथी माटे सदा काल तेओ तृप्तज होय छे सतोषी अने इन्द्रिय जीतनार एवा योगी पुरूष ने कइ पण ग्रहण करवानी इच्छा थती नथी. तेवीज रीते सिद्ध परमात्माओ ने पण ग्रहण करवानी इच्छा थती नथी. पूर्ण पात्र मा जेम कई पण अधिक वस्तु समाई शकती नथी तेम ज्ञान रूप अमृत अने आनद रूप अमृत थी सिद्ध भगवतो पूर्ण भरेला छे एवा कारणो थी सिद्ध परमात्माओ कर्म ग्रहण करता नथी

मूलम्—

तथा च सिद्धेषु सुखं यदस्ति, तद् वेद्य कर्म क्षयजं वदन्ति ।
तत्कर्म हेतुर्न हि सिद्धसौख्ये, यत्कर्म सान्त सुखमेऽवनन्तम् ८

गाथार्थ- सिद्ध भगवतो ने जे सुख छे ते वेदनीय कर्म ना नाश थी थयेलु छे, तेथी सिद्ध भगवतो ना सुख मा कर्म

कारण रूप [illegible] नथी [illegible]
अने सिद्धो ने [illegible] सुख [illegible]

विवेचन- संसार मा जे सुख थाय छे ते शाता वेदनीय कर्म ना उदय थी थाय छे परन्तु सिद्ध भगवंतो ने जे आत्मा नु अनंत सुख प्राप्त थाय छे ते वेदनीय कर्म नो क्षय थवाथी थाय छे, माटे सिद्ध भगवंतो ना सुख मा कर्म कारण भूत थतु नथी जीव प्रथम अहिंसा आदि द्वारा शाता वेदनीय कर्म बांधे छे पछी ते कर्म नो अबाधा काल पूर्ण थये, ते शाता वेदनीय कर्म उदय मा आवे छे, अने ते कर्म नी स्थिति पूर्ण थये नाश पामे छे एटले संसारी आत्मा ओने जे सुख थाय छे ते वेदनीय कर्म ना उदय थी थाय छे अने ज्यारे वेदनीय कर्म नो नाश थाय, एटले ते सुख नो अंत थाय छे माटे कर्म थी प्राप्त थतु सुख अंत वालु छे, परन्तु सिद्ध परमात्माओ ने जे सुख थाय छे ते वेदनीय कर्म ना नाश थी थाय छे, अने ते सुख आत्मा ना घर नु होवा थी अनंत काल पर्यंत रहे छे ते सुख शाश्वत अने अनन्त होय छे

मूलम् –

यद्विश्ववृतान्तसमुत्थनृत्त—प्रेक्षाप्रभूतं सुखमाश्रितानाम् ।
सिद्धात्मनां नित्यसुखप्रवर्त्तते, यथानृजापद्भुतनृत्यदर्शिनाम् ६

पर आवे छे. पोताना बधा सम्बन्धी, कुटुम्ब, स्त्री,
पुत्र आदि नु मिलन थाय छे अने बधा हर्ष-विनोद
करे छे. हवे सम्बन्धीओ भील ने कुशल समाचार जाण्या
बाद पूछे छे के तमो आटला बधा दिवस क्यो गया
हता ? ते स्थान केवु हतु ? त्या तमे शेमा रहेता
हता ? त्या शु शु खाधू ? शु शु कर्यु आदि अनेक
प्रश्नो कर्या. आ बधा प्रश्नो ना भीले उत्तर आपता
जणाव्यु के एक रम्य नगर मा राजा ना जेवा मोटा
साद मा हु रहेतो हतो, पकवान विगेरे खातो हतो
ने नृत्य आदि जोतो हतो

आम नगर नु महेल नु, भोजन नु अने नाटक
आदि नु भीले वर्णन कर्यु परन्तु जन्मथीज अटवी मा
रहेनार ते लोकोए नगर महेल तेवा प्रकार नु भोजन
नाटक आदि नु नाम पण सामळ्यु न्होतु तो तेओ ते
वस्तु शी रीते जाणी शके के जोई शके, माटे कई पण
तेओ समझ्या नही त्यारे छोटे ने भील नगर ने पल्ली
साथे, महेल ने मोटा झुपडा साथे, लाडू आदि ने
टा कोठा ना फल साथे सरखावी समझाव्यु तेम
नी भगवतो पण सिद्ध भगवतो ना सुख ने ससारी
वस्तुओ साथे सरखावी समझावे छे. तेवीज रीते अहिया
पण जेम ससारी जीव ने ससार ना विचित्र प्रकार ना
नाटको जोवाथी जे सुख थाय छे तेम सिद्ध ना जीवो ने

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मूलम् –

सिद्धेषु [illegible] ।
अनन्त [illegible] ॥

भावार्थ हे पूज्यो, सिद्ध भग[illegible] ने [illegible] ज्ञानेन्द्रिय अने शरीर ना [illegible] नथी [illegible] अनन्त सुख केम मेळवे ? तेओने [illegible] सुख छे

विवेचन- ससारी जीव ने जे सुख नो अनुभव थाय छे ते चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रिय, हाथ आदि कर्मेन्द्रिय अने मुख आदि शरीर ना अवयवो द्वाराज थाय छे ज्यारे सिद्ध भगवतो ने चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रिय, हाथ आदि कर्मेन्द्रिय अने मुख आदि शरीर ना अवयवो नथी तो सिद्ध भगवतो ने सुख नो अनुभव केम थाय ? एम शका थाय ते स्वाभाविक छे. एटले तेनो उत्तर आपता ग्रथकार श्री जणावे छे के सुख बे प्रकार नु छे. एक शरीर सम्बन्धी अने बीजु आत्मिक शरीर सम्बन्धी सुख शुभ कर्मो ना योगे उत्पन्न थाय छे एटलेज ससारी जीव ने इन्द्रियादि [illegible]रा सुख नो अनुभव थाय छे, परन्तु आत्मिक सुख

वेदनीय कर्म नो नाश थया बाद आत्मा ना ज्ञानादि गुणो थी प्राप्त थाय छे अने सिद्धो ने वेदनीय कर्म नो नाश थवा थी ज्ञानादि गुणो द्वारा आत्मा नु अनंत सुख प्राप्त थाय छे, माटे सिद्धो ने ज्ञान एज सुख होय छे

मूलम्—

यथेहलोकेकिल कश्चिदज्ञो. ज्वरादिबाधाविधुर. कदाचित् ।
निद्रां प्रकुर्वन्निति तज्जनैरुक्त सुखं करोत्येष नबोधनीयः ११
इत्युच्यतेतन्ननतत्र किंचिच्चक्षुत सुखनादिक्रिया निरीक्ष्यते ।
तथापि सुप्तस्य नरस्यसौख्यं वाच्य यथास्याद्भुवितद्वदेव १२
जाग्रत्सु सिद्धेषु सदैव सौख्य. विनेन्द्रिय द्वैतमसुत्यभोगम् ।
यद्वाहि योगी निजरूप स्वबोधा-मृतार्णवमग्नस्मिसुखीतिमत्ता १३
तथाचकोऽपीहमुनिप्रयोगतः, सन्तुष्टिपुष्टोविजितेन्द्रियार्थ ।
अन्येनपुंसापरिपृच्छ्यतेचेत् त्वकीदृशोऽसीतिसुखीमजल्पेत् १४
कस्मिन्नक्षणेतस्यनकोऽपिवस्तुनः,स्पृहाःसतोनैवचभुवितथुक्ति ।
गन्धग्रहोनोनचदृष्टकृतीतदा, नपाणिपादादिभवा.क्रियापिच १५
तथापि सन्तोषवताहमस्मि, सुखीति सूय. प्रतिपद्यतेऽतः ।
तज्ज्ञानसौख्य हिसएववेत्ति, न ज्ञानहीनोगदितुं समर्थः १६

गाथार्थ- जेम अहिया संसार मा कोई प्राणी ताव आदि नी पीडा थी दुःखी थयेलो होय ते समये कदाचित् निद्रा लेतो होय त्यारे सगा सबंधीओ एम कहे छे के आ सुख मा छे माटे कोईए जगाडवो जोइये नही

नु दुःख होवा छतां पण तेनी जो मन पर असर न होय तो दुख जणातुं नथी अने बन्ने प्रकार नु दुख न होवा छता पण जो तेनी मन पर असर होय तो दुख जणाय छे एटले वास्तविक रीतिए मन नु ज दुख छे मन जो शुभ परिणाम मा वर्ततु होय तो दुख ना प्रसगे पण दुःख नो अनुभव थतो नथी. अने मन जो अशुभ परिणाम मा वर्ततु होय तो सुख ना प्रसगे पण दुख नो अनुभव थाय छे सम्यग् ज्ञान द्वाराज आत्मा मा शुभ परिणाम प्रगट थाय छे सम्यग् ज्ञान द्वारा प्रगटेल शुभ परिणाम मा वर्ततो आत्मा सच्चिदानन्द रूप सुखनो अनुभव करे छे

ससार मा पण एक मानस ताव नी पीडा थी बहुज व्याकुल थयेल होय अने तेज समये तेने निद्रा आवी गई होय त्यारे तेना सबधीओ कहे छे के, "भाई सुख मा छे, माटे कोई जगाडशो नही" हवे विचारो, के आ समये तेने कान विगेरे कोई इन्द्रियो नु सुख नथी, हाथ-पग आदि नी कोई क्रिया पण नथी छता पण ते सुखी कहेवाय छे तेमा मानसिक शान्ति एज सुख गणाय छे तेम इन्द्रियो थी उत्पन्न थता भोग विना पण आधि, व्याधि अने उपाधि सबधी दुख ना अभावे फक्त अनन्त ज्ञान द्वाराज सिद्ध भगवतो ने सुख होय छे. अथवा कोई योगी पुरुष पोताना आत्मज्ञान मा मस्त बनवाथी पोते

गाथार्थ-जीव नो कर्मग्रहण करवानो स्वभाव छे
मूलथी उत्पन्न थयेल अने स्वाभाविक छे एवो कर्मग्रहण
नो स्वभाव छोडीजीव केवीरीते सिद्धथाय छे ते जणावो

विवेचन:- तैजस अने कर्मण नामनु शरीर जीव
अनादिकाल नु लागेलु छे तेथीजीव नो कर्म ग्रहण
स्वभाव पण अनादि काल नो होवाथी ते स्वभाव स्
भाविक बनीगयोछे. तोआवो मूलगत अने स्वभाविकस्व
छोडी जीव सिद्ध केमबनेएवो प्रश्नथाय ते स्वाभाविक
तेथी आ प्रश्न पूछवामा आवेल छे हवे आगली गाथा मा
तेनो उत्तर देवाय छे

मूलम्-

कर्मात्मनोर्यद्यपिमौलसङ्ग-स्तथापिसामग्र्यतथोपलम्भात् ।
कर्मग्रहप्रोज्मयशिवसमेतः सिद्धोभवेदत्रनिदर्शनं यत् ॥२॥

गाथार्थ-जोके आत्मा अने कर्म नो संबंध अनादिकाल
नो छे परन्तु तेवाप्रकार नी सामग्रीना योगे जीव कर्म
ग्रहण नो स्वभाव छोडी मुक्तिमा जाय छे आ विषय मा
दृष्टान्त कहेवाय

विवेचन- आ संसारमा संबंधो पण अनेक प्रकारना
जोवामा आवे छे जेमके केटलाक संबंधो कोई बे वस्तु ना
संयोग थाय छे एटले नवो संबंध थाय छे अने पछी पाछो

संबंध छूटी पण जाय छे, जेम के सोनानी लीटी मा होरो मढवामां आवे छे. त्यारे सोना अने हीरानो संबंध थाय छे ते केटलाक एवा संबंधो पण होय छे जे संबंधो अनादि कालना होय अने अनंत काल सुधी रहे छे. जेमके आत्मा नो अने तेना गुण रूप ज्ञानादि नो सम्बन्ध. केटलाक एवा सम्बन्धो पण होय छे के जे अनादि कालथी होवा छता ते सम्बन्धो छूटी पण शके छे, जेमके माटी अने सोना नो सम्बन्ध. एवीज रीते आत्मा अने कर्मनो सम्बन्ध अनादि कालनो होवा छता तेवा प्रकार नी सामग्री ना योगे बन्ने नो सम्बन्ध छूटी पण जाय छे ते माटे दृष्टांत द्वारा बतावयामां आवे छे

श्लोक—

सूतस्य यावच्चलतास्वभावो, वह्नेस्तथास्थिरभावसंज्ञः।
यदातु तादृक् परिकर्मणाकृत-स्तदास्थिरो वह्निगतश्च तिष्ठेत् ॥३॥

व्याख्या-पारा मा चचलता नो स्वभाव छे तेमज अग्नि मा अस्थिरता नो मूल स्वभाव छे छता तेवा प्रकार ना संस्कार ना योगे अग्नि मा रहेल पारो स्थिर थाय छे

विवेचनः- पारो एटलो बधो चचल स्वभाव नो छे के आपणे तेने भेगो करिये तो पण हाथमाथी सरकी जाय छे. छतां तेजपारा ने तेवा प्रकार नी भावना दीधा

बाद तेज पाणो [illegible] मा [illegible] थई जाय छे
जेम पाणी नो मूल स्वभाव [illegible] होय छे
तेवा प्रकारना संस्कार ना योग [illegible] जाय छे
तेम आत्मा नो कर्म ग्रहण नो मूल स्वभाव [illegible] आत्मा ना [illegible]–
संयम नी आराधना, [illegible] ते स्वभाव पण बदली जाय छे

मूलम्—

यथापुनर्दाहकतागुणोऽग्ना–वग्निस्वभावो ननु मूलजातः ।
अस्यापिनाशोऽस्तितथाप्रयोगात्,सन्तसतीनैंवदहेत्कदापि ।४

गाथार्थ–अग्नि मा बालवानो स्वभाव मूल थी छे, छता तेवा प्रकारना प्रयोग थी तेनो नाश थाय छे साधु तथा सती स्त्रीने ते अग्नि कदापि बालतो नथी

विवेचन:- अग्नि मा बालवानो स्वभाव मूल थी होवा छता तेनी शक्ति ने घात करनार तेवा प्रकार नी सामग्री ना योगे अग्नि ना मूल स्वभाव नो नाश थाय छे, अथवा तपोबल थी, अथवा सत्यपणाना योगे साधु तथा सत्य वादी ने, तथा शियल ना प्रभाव थी सती स्त्री ने ते अग्नि बाली शकतो नथी

मूलम्—

वह्नीयथाप्येप च मन्त्रयोगात्,तथौषधीभिर्नदहेद्विशन्तम् ।
अश्नन्तमग्निच चकोरकंतथावह्निर्दहेन्नोविगतस्वभावः।५।

जाय छे ? ते बोलो

विवेचन:- तेज वस्तुनी पुष्टी माटे बीजा पण दृष्टांतो बतावाय छे जेम के अभ्रक, सुवर्ण, रत्नकम्बल अने पारो विगेरे औषधि थी सिद्ध थयेल होय तो तेने अग्नि बाली शकतो नथी. तो अग्नि नो मूल स्वभाव बालवानो छे, तो अग्नि मां रहेल दाहकता गुण क्यो गयो ? तेनो जवाब आपो. एटले जेम अग्नि मा दाहकता गुण होवा छतां औषधि थी सिद्ध थयेल अभ्रक आदि ने अग्नि बाली शकतो नथी अर्थात् औषधि आदि थी अग्नि नो दाहकता गुण रूप मूल स्वभाव नष्ट थाय छे तेम आत्मा नो कर्म ग्रहण स्वभाव पण तेवा प्रकारनी सामग्री ना योगे नष्ट थई शके छे.

मूलम्-

यथा स्वकग्रावणि,लोहग्राही,स्वभावग्रास्ते,सहजःसकोऽस्ति
तस्मिन्मृते वेतरयोगयुक्ते, -अपैतीत्थमेतेष्वपि कर्मयोगः।७।

भावार्थ-जेम लोह चुम्बक नामना पत्थर मा लोहुं पकडवानो स्वभाव मायेज थयेलो छे परन्तु ते लोह चुम्बक पत्थरने बाल्ये छते अथवा बीजी कोई तेनी नाशक शक्ति सामग्री ना योगे ते स्वभाव नाश पामे छे तेवी रीते सिद्धो मा ते कर्म ग्रहण नो स्वभाव नाश पामे छे

विवेचन :- एक लोह चुम्बक नामनो पत्थर एवो होय छे के तेनी पासे लोढूं मूकवा मा आवे तो ते लोढाने पोतानी तरफ खेंचे छे कारण के लोह चुम्बक पत्थर मा लोढा ने पोताना तरफ आकर्षवानी शक्ति छे ते स्वभाव पण लोह चुम्बक नो मूल स्वभाव छे- छता लोह चुम्बक पत्थर ने जो अग्नि थी बाली ने भस्म करवामा आवे अथवा ते शक्ति नाशक बीजी सामग्री ना योगे लोह चुम्बक ना केल लोढू पकड़वानो स्वभाव नाश पामे छे, तेम सिद्धो मा पण तेवा प्रकार नी सामग्री ना योगे जीव नो कर्म ग्रहण नो मूल स्वभाव नाश पामे छे

तुलना —

बीजतथाङ्कुरभवंदधाति,मौलात्स्वभावादविकारियावत्।
तस्मिस्तुदग्धेनकिलाङ्कुरोद्भव,एवंतुसिद्धेपुनकर्मबन्धः ।८।

भावार्थ - बीज विकार रहित थाय त्या सुधी बीज मा अंकुर नी उत्पत्ति रूप स्वभाव मूलथीज बीज धारण करे छे परन्तु ते बीज बाल्ये छते अंकुर नी उत्पत्ति रूप स्वभाव नष्ट थाय छे, तेम सिद्धो मा कर्म बंध रूप स्वभाव नाश पामे छे

विवेचन:- कोई पण प्रकार ना धान्य मां, कोई पण प्रकार ना बीज मां, अथवा कोई पण प्रकार नी वनस्पति

ना बीज मा अकुर नी उत्पत्ति थवा रूप स्वभाव मूलथीज
छे छता ते बीजा ने बाफी नाखवामा आवे अथवा बा
पामी, अथवा आदि ना कारणे बीज मा रहेल अकुर
उत्पत्ति रूप स्वभाव नाश पामे छे, तेम सिद्धो मा कर्म
रूप अकुर नी उत्पत्ति रूप स्वभाव नाश पामी जाय छे

मूलम् -

वायोस्तथाचंचलतास्वभावो, यो वर्तमानः सहजः समस्ति
खलस्यमध्येपवने निरुद्धे, कथं प्रयात्येव चल स्वभावः? ।९

गाथार्थ -पवन नो चचलता वालो स्वभाव पण मूलथीज छे, छता खल मध्ये रोकायेल छते ते स्वभाव केम चाल्यो जाय छे ?

विवेचन - पवन नो पण चचल स्वभाव मूलथीज छे छता मसक मध्ये पवन रोक्ये छते पवन नो चचल स्वभाव क्यां चाल्यो जाय छे ? अर्थात् जेम पवन नो चचल स्वभाव मसक मध्ये पवन रोक्ये छते रोकाई जाय छे तेम सिद्धो मा पण तेवा प्रकारनी सामग्री ना योगे कर्म ग्रहण नो स्वभाव नाश पामी जाय छे.

मूलम्—

आहारमुख्याःसहजाश्चतस्रः, संज्ञाइमाःप्रोज्झ्यशुकादयोऽमी ।
सिद्धाःप्रसिद्धाःपरब्रह्मरूपाः,जातास्ततोऽपैतिनिजस्वभावः।१०।

गाथार्थ-शुक आदि मुनिओ आदि आदि चार सज्ञाओ छोडी ने सिद्धि मा गयेला छता परब्रह्मरूप थया तेथी मूल स्वभाव चाल्यो जाय छे

विवेचन- अहिया ग्रथकार श्री शैव मत माननारा ने आश्रयी ने प्रत्युत्तर आपे छे के ससार मा जीव ने चार सज्ञाओ अनादि कालथी रहेली छे सज्ञा एटले संस्कार-ए सज्ञाना चार प्रकार छे आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा अने परिग्रह सज्ञा. ए चार सज्ञाओ तरीके ओलखाय छे आहार करवानी इच्छा ते आहार सज्ञा, पोतानी वस्तु कोई लई लेशे अथवा कोई पोताने दुख देशे अथवा पोताने कोई मारी नाखशे ए भय सज्ञा, विपय सेवन नी इच्छा ते मैथुन सज्ञा अने कोई पण वस्तु ने सग्रही राख-वानी इच्छा ते परिग्रह तमारा मत मा पण ए चार सज्ञाओ अनादि काल थी जीव ने मानेली छे तो शुक आदि मुनिओ मा पण ए चार सज्ञा अनादि काल थी हती अने ते चार सज्ञाओ जीवनो मूल स्वभाव होवा छता शुक आदि मुनिओ ए चारे सज्ञाओ नो त्याग करी परब्रह्मरूपे थया अर्थात् सिद्धथया तो ए चार सज्ञाओ जीव नो मूल स्वभाव होवा छता छोडी शकाय छे तो जीवनो कर्म ग्रहण नो मूल स्वभाव केम नाश न थई सके ? अर्थात् जरूर नाश थई शके छे

मूलम्

इत्यादिदृष्टान्तभरैः स्वभावो, जीवो यथा याति तथैव जन्तोः ।
कर्मग्रहोऽप्यस्त्वनादिमान्, [illegible] यात्यन्तगतिमत्र [illegible] ॥११॥

भावार्थ - इत्यादि [illegible] नो मूल स्वभाव नाश छे तो जीवनो कर्म ग्रहण नो मूल स्वभाव नाश [illegible] छे अने जीव सिद्धत्व पामे [illegible] शु ?

विवेचन - जीव अने अजीव मां अनादि काल थी रहे मूल स्वभाव पण तेवा प्रकारनी सामग्री के प्रयोग द्वा नाश पामी शके छे ए माटे जीव अने अजीव सबन्धी अने दृष्टान्तो द्वारा सिद्ध करी बताव्यु तो जेम जीव अने अजी मा रहेल अनादि कालनो मूल स्वभाव नाश पामी शके तेम आत्मा नो पण कर्मग्रहण नो अनादि काल नो मू स्वभाव पण नाश पामी शके छे अने ते स्वभाव नष्ट थव थी जीव कर्म थी मुक्त पण बनी शके छे अर्थात् जीव सि थई शके छे, एम सिद्ध थयु

॥ अथ सप्तमोऽधिकारः ॥

मुक्ति प्रवाह नी अविच्छिन्नता अने ससार मा भव्य नी अशुन्यता

मूलम् -

प्रश्नस्तथैकः परिपृच्छयतेऽसकौ,
सिद्धान्समाश्रित्य निजोपलब्धये ।

सर्वज्ञवाक्यात् किल मुक्तिमार्गको,

वहन् सदास्ते करकस्य नालवत् ॥१॥

नो पूर्यते मुक्तिरसौ कदापि,

संसार एषोऽपि च भव्यशून्यः ।

परस्पर द्वेषिवचो विलासै-

र्न सङ्गतिं मङ्गति वाक्यमेतत् ॥२॥

गाथार्थ—पोताना ज्ञान माटे सिद्धो सम्बन्धी एक प्रश्न पूछाय छे के सर्वज्ञना वचन थी मुक्ति नो मार्ग करनाल ना प्रवाह नी जेम हमेशा चालू छे, छता मुक्ति नु स्थान पूरातू नथी अने ससार भव्यो थी शून्य थतो नथी-तो आ वचनो परस्पर विरुद्ध अर्थसूचक नथी लागता ?

विवेचन केटलाक प्रश्नो एवा पूछाय छे के जेमा परस्पर वितडावाद ऊभो थाय छे अने तेनु खास फल कइ पण आवतु नथी उलटी द्वेष-बुद्धि पैदा थाय छे परन्तु जिज्ञासा बुद्धि थी पूछाता प्रश्नो परस्पर तत्त्वनी वृद्धि करनारा बने छे अहिया पण प्रश्नकार पोताना आत्मज्ञान नी प्राप्ति माटे सिद्ध भगवतो सम्बन्धी प्रश्न पूछता कहे छे के जैन आगम मुजब परम तारक अनत ज्ञानी वीतराग परमात्मा श्रीमद् अरिहत भगवते स्थापन करेल सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, अने सम्यग् चारित्र रूप मोक्ष नो मार्ग अनादि काल

थी चालू छे एटले अनतानत पुद्गल परावर्तन काल मा अनतानत जीवो मोक्षे गया छे, छता मोक्ष नु स्थान केम पूराई जतु नथी अने अनतानत काल थी ससार माथी भव्य आत्मोओज मोक्षे जाय छे, छता संसार भव्य आत्मा-ओथी शून्य केम थतो नथी ? एक पात्र मा थी बीजा पात्र मा एक वस्तु नाखवामा आवे तो अमुक काले एक पात्र जरूर खाली थाय अने बीजू पात्र भराई जाय, छता आ बाबत मा तेवु न बनवाथी परस्पर विरुद्ध वचन लागे छे तो आ विरोधाभास केम ।

मूलम् :—

न हि व्यलीकं भगवद्वचोऽस्त्यदः,

पर न चित्तेऽल्पधियामभिव्रजेत् ।

दृश्योऽस्ति दृष्टान्त इहैव लौकिको,

य शृण्वतां श्रोतृनृणां मनः स्थिरः ।।३।।

गाथार्थ.- भगवत नु वचन झूठ होतु नथी परन्तु अल्प बुद्धिवाला ना मन मा न पण बेसे-आज विषय मा लौकिक दृष्टात विचारणीय छे जे साभलतो साभलनार नु मन स्थिर थाय छे

विवेचन - कोई पण वस्तु नो निर्णय करवा माटे ज्ञान ए प्रथम साधन छे ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशम मुजब दरेक

ने ज्ञान थाय छे, एटलेज केटलीक वस्तुओ विशिष्ट ज्ञानीओज समजी शके छे. परन्तु अल्प ज्ञान वाळा आत्माओ न पण समजे, एम पण बने कदाचित् एम पण बने के एक व्यक्ति कोई पण वस्तु नु साचुं स्वरूप समजवा छतां पण स्वार्थ ने वश थवाथी वस्तु नुं प्रतिपादन न पण करे, ए पण संभवित छे माटे सत्य वस्तु समजवा माटे अने सत्य वस्तु नुं यथार्थ प्रतिपादन करवा माटे सम्पूर्ण ज्ञान अने राग-द्वेष ना अभाव नी पूर्ण आवश्यकता होय छे ज्यारे जिनेश्वर देवो सम्पूर्ण ज्ञानी एटले सर्वज्ञ अने राग-द्वेष थी मुक्त एटले वीतराग होवाथी सत्य वस्तु नु यथार्थ प्रतिपादन करी शके छे माटे एमनुं वचन असत्य होतुं नथी कदाच अल्प ज्ञानीओ न समजे एम पण बने माटे तेमने समजाववा माटे लौकिक दृष्टान्त बताववामा आवे छे जेथी साभळनार वर्गनुं ते दृष्टांत साभळताज मन स्थिर थई जशे

वृत्तम् :-

सिद्धालयः स्याल्लवणोदसोदरः
संसार एषोऽस्ति नदीहृदोदरः ।
नदीप्रवाहाश्च यथा महोदधौ,
पतन्ति निर्गत्य नदीहृदान्तरात् ॥ ४ ॥
नदीहृदा नैव भवन्ति रिक्ता,
न चाम्बुधिः कर्हिचिदस्ति पूर्णः ।

नदीप्रवाहोऽपि निरंतरं य
द्रहत्यविच्छिन्नतयाऽतिशीघ्रं ॥ ५ ॥

इत्थं हि भव्याः परियन्ति मुक्तौ,
नदीप्रवाहा इव सागरान्तः।
संसार एव ह्रदवन्न रिक्तः,
पयोधिवन्नैव भृतापि मुक्तिः ॥ ६ ॥

भावार्थ - मुक्ति लवण समुद्र ना भाई समान छे अने संसार नदियोना द्रह समान छे. जेम नदीना प्रवाहो नदियोना द्रहोमाथी निकली महान् समुद्र मा पडे छे नदियोना प्रवाहो आतरा रहित अति शीघ्र सतत वहे छे, परन्तु नदीना द्रहो खाली थता नथी अने समुद्र कदी पूर्ण थतो नथी—तेवीज रीते संसार माथी नदी ना प्रवाह नी जेम [illegible] आत्माओ सतत मोक्षे जाय छे छतां द्रहनी जेम संसार खाली थतो नथी अने समुद्रनी जेम मुक्तिनु स्थान पूर्ण थतुं नथी

[illegible] एक लाख जोजन प्रमाण वालो अने थालीना [illegible] आकार वालो जम्बुद्वीप नाम नो द्वीप छे तेनी चारे [illegible] लाख जोजन प्रमाण वालो लवण नामनो समुद्र [illegible] जम्बुद्वीप मा पद्मद्रह विगेरे घणा द्रहो [illegible] गंगा, सिन्धु विगेरे हजारो नदीओ

नीकले छे. ए बधी नदीओ लवण समुद्र मा जाय छे ए नदिओना प्रवाहो अति शीघ्र अने सतत वहे जाय छे छतापण द्रह विगेरे क्हो क्दापि खाली थता नथी, अने लवण समुद्र कोई दिवस पण पुरातो नथी तेवीज रीते संसार मांथी निकली अनादि कालथी अनतानंत भव्य आत्माओ मोक्ष मां निरन्तर जाय छे छता संसार भव्य आत्माओथी खाली थतो नथी अने मुक्ति नु स्थान भव्य आत्माओ थी पूर्ण भराई जतु नथी.

मूलम्—

दृष्टांतदार्ष्टान्तिकयोरितीदं, साम्यं समालोचयता नराणां ।
भवेत्प्रतीतिः परमार्हतानामर्हद्वचस्येव न चापरत्र ॥७॥

भावार्थ - दृष्टांत अने दार्ष्टान्तिकनु सरखापणु जो विचारवामा आवे तो परम श्रावको ने अर्हद्वचन प्रत्ये श्रद्धा पैदा थायज, परन्तु मिथ्यात्वी आत्माओने नज थाय

विवेचन.- कोई पण गहन विषय ज्यारे न समजाय त्यारे दृष्टांत द्वारा सुन्दर रीते समजाय छे माटे दृष्टांत आपवामा आवे छे तेम अहिया पण ससार खाली केम न थाय अने मुक्ति केम न पुराय, ए समजाववा माटे सुन्दर दृष्टांत आपवामा आव्यु छे. लवण समुद्र ने मुक्ति ना स्थाननी, संसार ने नदीना द्रहो नी अने सतत मुक्ति जता भव्य

[illegible]

मूलम् -

अन्योऽपि दृष्टान्त इहोच्यतेऽत्र-

माकर्णनीयो विदितप्रमाणः ।

यथा हि कश्चित्प्रति भान्वितः

स-आजन्ममृत्यूद्भवनात्मशक्त्या ॥८॥

हिन्दूकषड्दर्शन पारशीक-शास्त्राणि

सर्वाणि पठंस्त्रिलोक्याः ।

असंख्य मायुर्निवहन्नपीह,

हृदस्य पूर्णं न भवेत्कदाचित् ॥९॥

शास्त्राक्षरैरप्यथ योजनैवं,

यथैव शास्त्राणि भवस्तथाऽयं ।

भवन्ति शास्त्राक्षरवद् विमुक्ताः,

सुबुद्धिवक्षोवदियं हि सिद्धिः ॥१०॥

अश्रान्ततत्पाठवदेव मुक्ति-मार्गो

वहन्नस्ति निरन्तरायः ।

शास्त्रेष्वधीतेषु न शास्त्रनाश-स्तथैव
सिद्धेषु भवस्य नान्तः ॥११॥

भावार्थ - आ विषय मा वीजू पण दृष्टात कहेवाय छे, जे दृष्टात जाणीता प्रमाणे वडे साभलवा योग्य छे जेम कोई अतिशय बुद्धि वालो पुरुष जन्म थी आरंभी मृत्यु पर्यंत पोतानी शक्ति थी हिन्दू धर्म सम्बन्धी छ शास्त्रो, यवनोना शास्त्रो, त्रण लोक ना वधा शास्त्रो भणतो छतो असख्य वर्ष नु आयुकाल ने वहन करे तो पण तेनु हृदय कदापि शास्त्रो ना अक्षरोथी भरातु नथी हवे दार्ष्टान्तिक नी योजना आ प्रमाणे –शास्त्रो एटले संसार, शास्त्रो ना अक्षरो एटले सिद्धो, वुद्धिमान पुरुष नु हृदय एटले मुक्ति नु स्थान, सतत करातो पाठ एटले अंतराय वगर चालू मोक्ष नो मार्ग. शास्त्रोनो अभ्यास कराते छते शास्त्रो नो नाश थतो नथी. तेज प्रमाणे मोक्ष मा भव्य आत्माओ जते छते ससार नो नाश थतो नथी

विवेचन - ए विषय मा अही वीजू दृष्टात पण जाणीता प्रमाणो थी भरेलू आप्यु छे के जे खास साभलवा योग्य छे जेम कोई अतिशय वुद्धिशाली पुरुष जन्म थी माडी मृत्यु पर्यन्त पोतानी सर्व शक्ति थी न्याय सम्बन्धी, वैशेषिक सम्बन्धी, साख्य सम्बन्धी, योग सम्बन्धी, पूर्व मीमासक

[illegible]

मूलम् —

दृष्टान्तदार्ष्टान्तिक भावनेयं
विज्ञैः स्वयं चेतसि चिन्तनीया ।
एवं ह्यनेकेऽभिनिदन्ति भूयो,
दृष्टान्त संघा अपरेऽपि योज्याः ॥१२

गाथार्थ - विद्वान् पुरुषोए पूर्वे कहेल दृष्टान्त अने दार्ष्टान्तिक सबंधी विचारणा मनमा पोतानी मेले विचारवी, बीजापण अनेक दृष्टांतो आ विषयमा घटाववा

विवेचन :- आ विषय मा पूर्वे बतावेल दृष्टान्त अने दार्ष्टान्तिक सम्बन्धी घटना पोतानी मेले मनमा घटाववी जोइये कारण के आ बधा दृष्टांतो विद्वान् पुरुषोए वत वेल छे जेथी विशेष श्रद्धा उत्पन्न थाय छे तेमज आ

...गम मां बीजा पण अनेक कारणो छे. ते पण जन्म ...व्याख्या जेवी सम्यग् ज्ञान साथे सम्यग् दर्शन मा पण ...कारण भूत बने

॥ अथ अष्टमोऽधिकारः ॥

पर ब्रह्म नुं स्वरूप

मूलम्

स्वामिन् ! परब्रह्म किमुच्यते तत्, लीनं जगद्यत्र भवेद्युगान्ते ।
तदेव हेतुः पुनरेव सृष्टेः, स्यादीदृशं केन गुणेन वाच्यम् ॥१॥

शब्दार्थ :- हे स्वामि, जेमा युग ना अन्ते जगत लीन थाय छे ते पर ब्रह्म शुं छे ? अने वली ते कया गुण वडे सृष्टि नु कारण थाय छे ? ते कहेवा योग्य छे

विवेचन - ब्रह्मवादिओ नी एवी मान्यता छे के आ जगत नु निर्माण पर ब्रह्म ना योगे थाय छे. अने युग ना अंते जगत तेमा लीन थई जाय छे एवा ब्रह्मवादिओ जैन मत वादियों ने पूछे छे के युग ना अंते जगत जेमा लीन थाय छे ते परब्रह्म शु छे ? अने बीजो प्रश्न ए छे के जगत ना निर्माण मा पर ब्रह्म कारण रूप बने छे तो कया गुण वडे तेमा कारण रूप बने छे, एम बे प्रश्नो कर्या. तेनो उत्तर जैन शास्त्रकारो आगलनी गाथा मा आपे छे

मूलम् -

निशम्यतामार्य ! मनीषिणामपि,
सिद्धान्तवेदान्तविचारवेदिनाम् ।
स्वरूपमेतस्य निवेदितुं यतो,
वाचः स्फुरन्तीह न चर्मचक्षुषाम् ।

भावार्थ :— हे आर्य ! सांभलो. सिद्धान्त ज्ञान ना र
ना विचार ने जाणनार विद्वान् पुरुषोनी वाणी एनुं स्
कहेवाने स्फुरायमान थाय छे, परन्तु ए बाबतमां चर्म
वालाओ कहेवाने समर्थ नथी.

विवेचन :- जगतमां बधा पदार्थो चर्म चक्षु वाला
पण शकता नथी अने जाणी पण शकता नथी
केटलाकज पदार्थो चर्म चक्षु वाला जोई शके छे अने जाण
शके छे, बधा पदार्थो तो फक्त केवलज्ञानीओज जोई शके
छे अने जाणी शके छे तेम पर ब्रह्म पण चर्म चक्षुवालाओ
जोई शकता नथी. अने जाणी शकता नथी. ते पण केवली
भगवतोज जोई शके छे अने जाणी शके छे अर्थात् सिद्धान्त
ना रहस्य ने जाणनार पुरुषो जैन आगम अनुसार तेनुं
स्वरूप कहेवाने समर्थ थाय छे परन्तु चर्म चक्षु वालाओ
तेना स्वरूप ने कहेवाने समर्थ नथी

मूलम्.—

१ योगिनोनिर्मलदिव्यदृष्टय–श्चराचराचारविवेकचिन्तकाः।
लब्धाष्टसिद्धिप्रथनाहितेऽप्यहो! ,विचारयन्तोनहिपारमिय्रति३
तथापि येलोकविलोकनक्षमाः, सर्वार्थयाथार्थ्यसमर्थनार्थनाः।
सत्केवलज्ञानविशिष्टदृष्टयो,नीरागिणोऽन्योपकृतौपरायणाः ४
तेत्वीदृशब्रह्मपरंन्यवेदयन्, निर्विक्रियं निष्क्रियम प्रतिक्रियम्।
ज्योतिर्मयंचिन्मयमीश्वराभिध–मानंदसान्द्रंजगतां निषेवितम्५
निर्मायऽनिर्मोहमहंकृतिच्युतं, सम्यग्निराशंसमनोहितार्चनम्।
महोदय निर्गुणमप्रमेयकं, पुनर्भवप्रोज्झितमक्षरं यतः ॥६॥
विभुप्रभावत्परमेष्ठ्यनन्तकं, निर्मत्सरं रोध विरोध वर्जितम्।
ध्यानप्रभावोत्थितभवतनिर्वृति,निरञ्जनानाकृतिशाश्वतस्थिति७

गाथार्थ– निर्मल दृष्टिवाला, स्थावर जगम रूप ससार ना व्यवहार ना भेद ना चितवन करनारा अने आठ अणिमादि सिद्धि वाला एवा योगी पुरुषो पण ब्रह्म ना पार ने पामी शकता नथी, तो पण लोक जोवा मा समर्थ, सर्व पदार्थो नी सत्यता ना प्रतिपादक, केवलज्ञानी राग रहित अने परोपकार करवामां तत्पर एवाओ ए पर ब्रह्म नु स्वरूप ए प्रमाणे कह्यु छे के परब्रह्म ए विकार रहित, क्रिया रहित, प्रतिकार रहित, प्रकाश रूप, ज्ञानस्वरूप, ईश्वर नाम नु, निरन्तर आनन्द रूप, जगत सेवित, माया रहित,

मोह रहित, अहकार रहित, अतिशय निस्पृह, पूजा ना अभि लाप रहित, महा उदय वालू, गुणो रहित, मापी न शका एवु पुनर्जन्म रहित, अविनाशी, व्यापक, कान्ति वालू, पर पदे रहेलू, अत रहित, ईर्ष्या रहित, राग द्वेप रहित, ध्यान ना प्रभाव थी भक्तो ने सुख दायक, निरंजन, आकार रहित, अने शाश्वत स्थिति वालू छे.

विवेचन - अहिया पर ब्रह्म शु छे अने ते जाणवु केटलू कठिन छे, आ बावत ग्रथकार श्री दर्शावे छे आ पर ब्रह्म ने सामान्य आत्माओ तो जाणी शकेज नही, परन्तु निर्मल श्रेष्ठ दृष्टि वाला, त्रस अने स्थावर जीवो ना व्यवहार ना विवेक अने भेद ने चिन्तवनार अने कमल ना जेवा झीणा छिद्र मा पण प्रवेश करवानी शक्ति ते अणिमा, मेरू पर्वत करता पण मोटु शरीर विकुर्वी शकाय ते महिमा, अत्यन्त भारे थवानी शक्ति ते गरिमा वायु करता पण हलका थवानी शक्ति ते लघिमा, पृथ्वी ऊपर रह्या छता अगुलीना अग्रभाग वडे मेरू पर्वत नी टोच अने सूर्यादि ने स्पर्श करवानी शक्ति ते प्राप्त पाणी मा पृथ्वी नी जेम पगे चाले अने पृथ्वी ऊपर पाणी नी जेम डूबी जई बहार निकले एवी शक्ति ते प्राकाम्य, स्थावर पण आज्ञा माने तेवी शक्ति अथवा तीर्थंकर चक्रवर्तीनी ऋद्धि ने विस्तारी शके एवी प्रभुता ते ईशित्व जीव अने अजीव सर्व पदार्थ वश थाय एवी शक्ति

ने गुणो तथा जड़ नो स्वभाव अने गुणो अलग होवा थी
तन्य थी जड वस्तु बनी शके नही एटलेज आ प्रश्न थयो
के जगत रचना रूप घट बनाववा जेवी कुभार नी
क्रिया मा चैतन्य मय पर ब्रह्म केवी रीते कारण भूत बने?

बीजी वात ए छे के ब्रह्मवादी एम कहे छे के जगत
रचना करवामा पर ब्रह्म भले स्वय कारण भूत न बने,
परन्तु पर ब्रह्म ने जगत रचना करवामा बीजो कोई प्रयो-
जक मानवामा शुं बाधो ? काल, स्वभाव, भवितव्यता,
कर्म आदि कोई पण वस्तु बनाववामा अथवा कोई पण
बनवामा प्रयोजक तरीके होय छे. हवे ए माथी जो कोई
पण प्रयोजक मानिये तो पण बाधकता आवे छे, कारण के
कालादि सर्व वस्तुओ पण पर ब्रह्म मा समाई जाय छे माटे
कालादि पण प्रयोजक होई शकतो नथी माटे जगत नी
रचना अने संहार करवामा पर ब्रह्म नो कोई पण प्रयो-
जक होतो नथी

मूलम्:—

कुर्याद्यदीदं जगतां हि सर्जनं, तदेदृशं केन करोति विश्वम् ।
जन्मात्ययव्याधिकषायकैतव-कन्दर्पदौर्गत्यभियाभिराकुलम् ।९
परस्पर द्रोहि विपक्षलक्षितं, दुःश्वापदव्यालसरी सृपालिकम् ।
आखेटिकर्मैनिकसौनिकैश्चितं,दुश्चोरजारादिविकारपीडितम १०

अने गुणो तथा जड़ नो स्वभाव अने गुणो अलग होवा थी चैतन्य थी जड़ वस्तु वनी शके नही एटलेज आ प्रश्न थयो छे के जगत रचना रूप घट वनाववा जेवी कुभार नी क्रिया मा चैतन्य मय पर ब्रह्म केवी रीते कारण भूत वने?

वीजी वात ए छे के ब्रह्मवादी एम कहे छे के जगत रचना करवामा पर ब्रह्म भले स्वय कारण भूत न वने, परन्तु पर ब्रह्म ने जगत रचना करवामा वीजो कोई प्रयोजक मानवामा शुं वाधो ? काल, स्वभाव, भवितव्यता, कर्म आदि कोई पण वस्तु वनाववामा अथवा कोई पण वनवामा प्रयोजक तरीके होय छे. हवे ए माथी जो कोई पण प्रयोजक मानिये तो पण वाधकता आवे छे, कारण के कालादि सर्व वस्तुओ पण पर ब्रह्म मा समाई जाय छे माटे कालादि पण प्रयोजक होई शकतो नथी. माटे जगत नी रचना अने संहार करवामा पर ब्रह्म नो कोई पण प्रयोजक होतो नथी.

मूलम्—

कुर्याद्यदीदं जगतां हि सर्जन, तदेदृशं केन करोति विष्टपम्।
जन्माऽप्ययव्याधिकषायकैतव-कन्दर्पदौर्गत्यभियाभिराकुलम् ।९
परस्पर द्रोहि विपक्षलक्षितं, दुःश्वापदव्यालसरी सृपालिम्म् ।
साखेटिकंर्मैनिकसौनिकैश्चितं,दुश्चोरजारादिविकारपीडितम्१०

कस्तूरिकाचामरदन्तचर्मणो, सारङ्गधेनुद्विपचित्रकान्तकम् ।
दुर्मारिदुर्भिक्षकविड्वरादिकं, दुर्जातिदुर्योनिकुकीटपूरितम् ।।१।।
अमेध्यदौर्गन्ध्यकलेवराङ्कितं, दुष्कर्मनिर्मापणमैथुनाञ्चितम् ।
समाश्रयद्धातुकृताङ्गिपुद्गलं, सनास्तिकं सर्वमुनीशनिन्दितम् ।।२।।
कियत्स्वकीयाह्वयबद्धवैरं, कियत्स्व पूजा प्रवणाङ्गिजातम् ।
नानात्महिन्दूकतुरुष्कलोकं, कियत्परब्रह्मनिरासहासम् ।।३।।
षड्दर्शनाचारविचारडम्बरं, प्रचण्डपाषण्डघटाविडम्बनम् ।
सत्पुण्य पापोत्थितकर्मभोगदं, स्वर्गापवर्गादिभवान्तरोदयम् ।।
वितर्कसम्पर्क कुतर्ककर्कशं, नानाप्रकाराकृतिदेवताचंनम् ।
वर्णाश्रमाचीर्णपृथक्पृथग्वृषं, सद्रव्यनिर्द्रव्यनरादिभेदभृत् ।।

(सप्तभिः कुलकम्)

भावार्थ जो पूर्वोक्त स्वरूप वालू पर ब्रह्म जगत नी रचना करे तो जन्म, मृत्यु, रोग, कषाय, कपट, काम अने दुर्गति ना भय वड़े व्याकुल, परस्पर द्रोह करनारा शत्रुओ थी लदित, दुष्ट शिकारी पशुओ थी युक्त, शिकार करनार सैनिको थी व्याप्त, दुष्ट चोर अने व्यभिचारीओ ना उपद्रव थी पीड़ित, कस्तूरी, चामर, दात अने चामड़ विगेरे थी हरणा, गाय, हाथी अने वाघ ना नाश ने जगावनार, दुष्ट मारि रोग, दुष्काल थी युक्त, दुष्ट जाति अने दुष्ट योनि वाला दुष्ट जन्तुओ थी पूरित, मल, दुर्गंध, मड्दु विगेरे थी

युक्त, पापना कारण भूत मैथुन विगेरे थी युक्त, सात धातुओथी बनेला प्राणिओना शरीर वालू, नास्तिको सहित, सर्व मुनिवरोए निदेल, केटलाक ने ब्रह्म नी साथे वैर होय एवाओथी युक्त, ब्रह्म नी पूजा करनार एवा केटलाको थी व्याप्त, हिन्दू अने मुसलमानो थी युक्त, पर ब्रह्म नुं खंडन अने उपहास करनार थी युक्त, साख्यादि षड् दर्शन ना आचार ना समूह वालूं, पाखडीओथी विडवना पमाएल, पुण्य, पापना फल ने देनार, स्वर्ग अने मोक्ष विगेरे ना भवना उदय वालूं वितर्क नो संयोग अने कुतर्क थी कठोर एवुं, वर्णाश्रम ना धर्म वालूं, अने धन अने निर्धन मनुष्यो वालु ऐवा प्रकार ना जगत नी रचना केम करे ?

विवेचन - ब्रह्मवादिओ नो एवो मत छे के परब्रह्मज जगत रचनामां कारण भूत छे, परन्तु ते वात घटती नथी. ते माटे जैन शास्त्रकारो ब्रह्म वादिओने जणावे छे के कारण थी कार्यथी उत्पत्ति थाय छे कारण बे प्रकारना छे-एक निमित्त कारण अने बीजुं उपादान कारण जे वस्तु थी जे वस्तु बने छे, ते उपादान कारण अने जे वस्तु बनवामा जे वस्तु सहायक-निमित्त रूप बने छे, ते निमित्त कारण जेमके घडो बनाववामा माटी ए उपादान कारण छे अने दड, चक्र, कुंभार, गधेडो विगेरे निमित्त कारण गणाय छे

ाथार्थ- जे ब्रह्म थी उत्पन्न थयेल अने राग-द्वेषादिथी
कृत थयेल एवु जगत नु स्वरूप योगी पुरुषो वडे त्याज्य
तेज जगत नु स्वरूप ब्रह्म वडे युग ना अते पोताना मा
वी रीते धारण करवा योग्य होय ? एज आश्चर्य छे

ववेचन -ब्रह्मवादिओ ना मत मुजब युग ना अते आ
गत ब्रह्म मांज लीन थाय छे तेनो प्रतिकार करता जैन
ास्त्रकारो वतावे छे के एक सामान्य माणस पण निन्दनीय
ने त्याज्य वस्तु ग्रहण करतो नथो, तो विकृत अने निन्द-
ाय एवा ससार ने युग ना अते ब्रह्म पोताना मा केवी
ते समावेश करे ?

ूलम्: —

ा विवेकोऽस्ति न ब्रह्मरूपे-ऽसौ वा शुकाद्येषु न योगवत्सु ।
कार्यं च धार्यं च यदादिपुंसो निन्द्यं च हेयं च तदन्यपुंसाम् १९

ाथार्थ - त्यारे ब्रह्म रूप मा विवेक नथी अथवा योगी
एवा शुकादि मुनियो मा विवेक नथी कारण के जे जगत
शुकादि योगी पुरुषो ने निन्दनीय अने त्याज्य छे ते जगत
ने ब्रह्म केम धारण करे ?

विवेचन -विवेकी पुरुषो नी कोई पण प्रवृति हमेशा
आदरणीय अने प्रशंसनीय होय छे कारण के तेओ जे कोई
प्रवृति करता होय छे ते विवेक पूर्वकज करता होय छे

छन्द -

ब्रह्मजा सृष्टिरथापि कल्प-स्तज्जो वदद्भिस्त्विति ब्रह्म मूढं।
ज्ञाप्यते किं न च तैस्तथैषां, वान्ताहृतेर्ब्रह्मणि किं न दोषः २०

गाथार्थ :- ब्रह्मथी सृष्टि नी उत्पत्ति अने ब्रह्म थी सृष्टि नो नाश एम कहेनार ब्रह्मवादिओ शु पोताना मूर्खपणा ने सूचवता नथी ? एमना मते वमन करेल आहार नो शु दोष नथी ?"

विवेचन.- कोई पण माणस पोते वमन करेल आहार ने फरीथी भक्षण करतो नथी छता ब्रह्मवादिओ ब्रह्म थी उत्पन्न थयेल संसार ने फरीथी ब्रह्म मा लीन थई जवु ए जाणमे वमन करेल आहार ने फरीथी खावा तुल्य जेवु होवाथी आवी वादत करवी ए ब्रह्म वादिओनी शु मूर्खाई सूचक निशानी नथी ? वली वमन करेल आहार नो दोष शु ब्रह्म ने नथी लागतो ? अर्थात् जरूर लागेज.

मूलम्

लोके तथैकादिकब्राह्मणादि-घातेऽत्र हत्या महती निगद्या।
तन्निघ्नतो ब्रह्मण एव सृष्टिं,साऽकीदृशी स्याददया दयालोः? २१

गाथार्थ - ससार मा एकादि ब्राह्मणादि नो घात करे छते अहिया मोटी हत्या कही छे, तो ब्रह्मनी सृष्टि ने हणाना छता दयालू एवा तेनी केवा प्रकारनी निर्दयता ?

विवेचन - वळी तमने ईश्वर जगत मां बधा प्राणिओ करता ईश्वर परम दयालु गणाय छे. दयालु तो तेज गणाय के जे कोई पण जीव नी हिंसा करेज नहीं, करावे नहीं अने करनार नी प्रशंसा करे नहीं, परन्तु हिंसा नी वात सांभळताज जेने कंपारी छूटे कोई पण सामान्य जीवने पण हिसा करवी ते हिंसा गणाय छे ब्राह्मणादि एक ने हिसा करवी ते पण हिंसा गणाय छे, तो आखा जगत ना जीवोनी हिसा करनार ईश्वर ने दयालू गणवो के केम ? ते एक प्रश्न छे ए दृष्टि ए विचारता पण ब्रह्म ए सृष्टि नो कर्त्ता अने सृष्टि नो नाश करनार नथी एम नक्की थाय छे

मूलम्:—

तज्जातसृष्टि न हि तस्य हिसा, निर्हिंसतश्चेद् भवतीति चोद्यं
सम्पाद्यसम्पाद्यसुतान्स्वकीया-न्पितुघ्नंतस्तर्हि नकोऽपिदोषः २

गाथार्थ :-जो ब्रह्म ने पोते उत्पन्न करेल सृष्टि ने हणता दोष न लागतो होय तो पोताना पुत्रोने उत्पन्न करीने हणतां शु पिता ने दोष न लागे ?

विवेचन -ब्रह्मवादिओनु एवु कथन छे के पोताना बनावेल जगत ने हणता तेने दोष लागतो नथी अर्थात् हिंसा लागती नथी. तेना प्रत्युत्तर मां जैन शास्त्रकारो

जणावे छे के खरेखर आ तो विचित्र वात कहेवाय. व्यवहार मां पण एक माणस कोई पण जीव नी हिंसा करे तो हिंसा गणाय छे तो जगत ना बधा जीवो नी हिंसा करता हिंसा न गणाय ए केम मानी शकाय ? कदाच एम कहेशो के पोते उत्पन्न करेल जगत ने हणता तेने दोष लागतो नथी तो ते वात पण बराबर नथी, कारण के, संसार मा पोताना पुत्रो उत्पन्न करीने तेणे हणता शु पिता ने दोष न लागे ? जरूर लागेज तेम ब्रह्म ने पण जरूर हिंसा लागे छे माटे जगत ब्रह्म मा लीन थतु नथी

मूलम्—

लीलेयमस्यास्ति यदीति चेद्गी-र्निर्हिंसतस्तस्य न चास्ति पापम् ।
एवं हि राज्ञो मृगयां गतस्य,जीवान्घ्नतः पातकमेव न स्यात् ।२३

गाथार्थ :- आतो ब्रह्मनी लीलाछे, माटे जीवो ने हणतां ब्रह्म ने पाप लागतु नथी, एवु जो तेमनु वचन होय तो शिकारे गयेला राजा ने जीवो ने हणता शु पाप नथी लागतु

विवेचन.—ब्रह्मवादिओनु एवु कथन छे के आतो ब्रह्मनी लीला छे, माटे जीवो ने हणता ब्रह्म ने पाप लागतु नथी. तेना प्रत्युत्तर मां जैन शास्त्रकारो जणावे छे के लीला एटले बालक्रीडा. बालक्रीडा तो लायक होय तेज करे छे

अने बालक अज्ञानी होवा थी गमे तेवी रीते बालक्रीडा करे तो पण खराब न लागे अथवा तेनी उपेक्षा पण थाय, माटे अज्ञानी जीव नी जेवी बालक्रीडा ब्रह्म करे ते केम मनाय ? बीजी वात ए पण छे के बालक अज्ञानी होवा छता ... धूल ना घर बनावे छे त्यारे तेना घर ने कोई व्यक्ति तोड़ तो तेने घर भाग्या जेटलुंज दुःख थाय छे अने पोतान हाथे तो वणे भागे धूल ना घर ने भागतो पण नथी त ईश्वर जेवो ज्ञानी पुरुष पाते बनावेल जगत ना जीवो ... नाश केम करे ? अने आवी बालक्रीडा ईश्वर करे ईश्वर ने शोभतु नथी, तेम मान्यता मा पण आवे नहीं

वली तमो कहो छे के ईश्वर मात्र लीला खातर सृष्टि नो नाश करे छे, माटे तेने पाप लागतु नथी ते वात पण मान्यता मा न आवे एवी छे, कारण के बीजो माणस हिंसा करे तो पाप लागे अने ईश्वर हिंसा करे तो पाप न लागे ते केम मनाय ? अने आवो न्याय पण क्यानो ? जो तमारा मते ईश्वर हिंसा करे तो पाप न लागे, तो शु शिकार करनार राजाओ ने जीव हिंसा नु पाप नथी लागत ? जरूर लागे छे माटे ईश्वर सृष्टि नो संहारक है ... य वेसती नथी

मूलम् —

प्रयस्वाभावादथकालतोवा,सृष्टिघ्नतोनास्तिविभोरघाप्तिः ।
स्वभावकालौयदिचेदवलिष्ठौ,ब्रह्माप्यशस्तेनुदतःक्षयेऽस्मिन् २४
एतौ तदेवात्र च हेतु भूतौ,किं ब्रह्मणा युक्त्यसहेन कार्यम् ।
तद्ब्रह्मणःसृष्टिविधितथैव, संहारकत्व च वदन्ति ये तै २५
न ब्रह्ममहिमा प्रकटीकृतः किं, निर्दूषणे दूषणमादधे यत् ।
वन्ध्याममाम्बेतिसमंनिगद्यते,यन्निष्क्रियंब्रह्मनिगध कर्त्रिति २६

भावार्थ-स्वभाव अथवा कालनी प्रेरणा थी सृष्टि ने हणता ईश्वर ने पाप लागतु न होय अने सृष्टि सहार मा ब्रह्माने ते वे प्रेरणा करता होय तो स्वभाव अने कालने कारण भूत गणो युक्ति मा न घटे तेवा ब्रह्मनु शु प्रयोजन ? सृष्टि सृजन अने सृष्टि संहार मा कारण भूत ब्रह्म ने कहे छे ते ओ ब्रह्मनो महिमा प्रगट नथी करता, परन्तु निर्दोष एवा ब्रह्म मा दोप आपे छे ब्रह्म ने निष्क्रिय कहीने ब्रह्म ने जगत–कर्त्ता तरीके कहेवु एटले मारा माता वन्ध्या छे एम कहेवा बरोबर छे

विवेचन - ब्रह्मवादिओ हवे एम कहे छे के स्वभाव अने काल नी प्रेरणा थी सृष्टि ने हणता ब्रह्मने पाप लागतु नथी तेना प्रत्युत्तर मा जणाववानु के एक माणसे कोई नी प्रेरणा थी खून क्यु–हवे ज्यारे न्यायालय मा तेने खडो करवामा आवे अने त्या न्यायाधीश नी आगल तेने पूछवामा

पावता कहे के मे अमुक माणस नी प्रेरणा थी खून कर्युं
माटे हुं निर्दोष छुं तो शुं न्यायाधीश तेना गुन्हा ने मा
करशे खरा ? कदापि नहीं तेवीज रीते कोई नी प्रेर
थी पण पाप करवाथी पाप लागतु नथी ते वस्तु बराब
नथी वली स्वभाव अने कालनी प्रेरणा थी जो ब्रह्म
सहार करतो होय तो ब्रह्म करता पण स्वभाव अने का
बलवान गणवा पडे. ते पण ब्रह्मवादिओ ने इष्ट
कारण के ब्रह्मवादिओ ना मन मुजब स्वभाव अने क
आदि सर्व वस्तुओ नो पण ब्रह्म मा समावेश थाय छे. त
स्वभाव अने काल ब्रह्म थी बलवान नथी तेमज स्वभ
अने कालनी प्रेरणा थी ब्रह्म जो सृष्टि नो सहार कर
होय तो युक्ति पूर्वक विचार करता ब्रह्म ने कारण
गणवा करता स्वभाव अने कालनेज सृष्टि–सहार मा कार
भूत गणवो जोइये.

जे ओ ब्रह्म जगत कर्त्ता अने जगत नो नाश करना
छे एम कही ब्रह्म नो महिमा बतावबा मागे छे तेओ त
ब्रह्म नो महिमा बतावबाना बदले उलटो निर्दोष एवा ब्रह्म
ने दोषी बनावे छे, कारण के निष्पापी होवा छता ब्रह्मने
पापी बनावे छे

रन्त्वमी एकतनुं श्रिता य–त्तिष्ठन्त्यनन्ताः प्रतिजन्तुविद्धाः।
थक्पृथग्देहगृहप्रमुक्ताः, परस्परद्वेषकरात्मसंस्थाः ।।२७।।
प्रत्यन्तसङ्कीर्णनिवासलाभा-दन्योन्यसम्वद्धनिकाच्यवैराः ।
प्रत्येकमप्येष्वभिवर्त्तमान-मनन्तजीवैस्तत उग्रवैरम् ।।२८।।

गाथार्थ.- हे साधु पुरुषो ! निगोद ना जीवो कया कर्म थी अति दुःखी होय छे ते तमो जणावो ? उत्तर आपे छे के आ बावत ने केवली भगवत सिवाय कोई विद्वान् पण जाणवाने समर्थ नथी तो पण जाणवा माटे आ कर्म नो प्रकार जणावाय छे. जो अहिया निगोद ना जीवो स्थूल आश्रवो सेववाने समर्थ नथी, परन्तु प्रत्येक जन्तु ने वीधी ने एक शरीर मा अनंता जीवो रहेला छे, अलग-अलग शरीर थी रहित छे, परस्पर द्वेष ना कारण भूत तैजस कार्मण वडे स्थिति वाला छे, अत्यन्त संकीर्ण निवास मलवा थी परस्पर वाधेल निकाचित वैर भाव वाला अने प्रत्येक ने अनंत जीवो नी साथे उग्र वैर भाव वाला छे

विवेचन.–निगोद ना जीवो कोई पण जीव नी क्यारेय पण हिंसा करता नथी, क्यारेय पण झूठूं वोलता नथी, क्यारेय पण चोरी करता नथी, क्यारेय पण मैथुन सेवता नथी तेमज क्यारेय पण अल्प पण परिग्रह राखता नथी, एटले मोटां पापो क्यारेय पण करता नथी छता कया कर्म ना योगे

मूलम् -

लोके यथा गुप्तिगृहास्थितानामन्योन्यसंमर्दनिपीडितानाम्
प्रत्येकमाबद्धनिकामवैर-भाजां नराणां किल कर्मबन्धः॥१
भावस्त्वमीषामलमीदृशः स्या-द्यद्येषु कश्चिन्म्रियतेऽपयाति
तदाहमासीय सुखेन भक्ष्य-मायातिकिञ्चिद्घनमंशतश्च॥२
इत्यादिकं वैरमतुच्छमीदृक्, प्रवर्धमानं प्रतिबन्दि यत्स्यात्
तस्मादमीषामतिदुष्कृतं स्या-देवंनिगोदाङ्गभृतामपीक्ष्यम्॥३

भावार्थ - जेम संसार मा अन्योन्य संमर्दन थी पी
पामता अने प्रत्येक नी साथे बांधेल वेर भाव वाला कैदि
ने खरेखर कर्म बंध होय छे एओनो एवो भाव होय छे
एमानो कोई मनुष्य मरी जाय अथवा नासी जाय तो
सुखे रहू अने खावानु पण अधिक मले, ए प्रमाणे अधि
आवा प्रकार नुं वृद्धि पामतुं वेर भाव प्रत्येक वदी प्र
ते ओने होय छे. तेथी कैदिओ ने दुष्कर्म बंध थाय छे ते
निगोद ना जीवो ने पण जाणी लेवु .

विवेचन -निगोद ना जीवो ने वैर भाव थी केवी रीते क
बंध थाय छे ते समझाववा माटे कैदीओनु सुन्दर दृष्ट
बतावता ग्रंथकार श्री फरमावे छे के जेम संसार मा ए
कैदखाना मा दश समाई शके त्यां पचास भरेला होय अ
दश ने जोइये तेटलो खोराक पचास जण ने अपातो हो
त्यारे तेओ परस्पर सकडामण ना कारणे पीडा पाम

वाथी वैर भाव बांधवानो प्रसग उपस्थित थाय ते स्वाभाविक छे दरेक कैदी ने ते समये एवा प्रकार ना परिणाम आवे के एमांथी कोई मरी जाय अथवा नाशी जाय तो हुं सुखे रही शकु अने मने तेटलो खोराक नो भाग पण अधिक आवे एटले आवा कलुपित भाव थी दरेक कैदी नी साथे वैर भाव वधतो जाय छे अने ए वैर भाव ना योगे भयकर कर्म वधन पण थया करे छे तेवीज रीते निगोद मा रहेला जीवो ने पण एक शरीर मा अनता जीवो रहेला होवाथी सकड़ामण ना कारणे परस्पर पीडा पामता होवा थी आ वधा जीवो मरी जाय तो मने रहेवा माटे नी वरावर जग्या मलवाथी हु सुखे रही शकु अने एक जीवने जोइये तेटला आहार मा अनत जीवोनो भाग होवा थी आ वधा मरी जाय तो मने खावा ने अधिक मले एवा कलुषित परिणाम थी अनत जीवो नी साथे वैर भाव वधतोज जाय छे, अने वेर भाव वधवा ना कारणे अनंत काल सुधी दुष्कर्म वध थयाज करे छे अने तेथी अनतानंत काल निगोदमांज रहे छे अने अनत दु खना भोक्ता पण निगोद ना जीवो वने छे

मूलम् —

तथातिसङ्कीर्णरूपञ्जरस्थिताः,विंद्वेपभाजश्चटकादिपक्षिणः ।
तलादिगावातिमयोमिथोभव-द्विवाधनद्वेषचिताःसुदुःखिनः।३४।

भावार्थ – ते प्रमाणे अत्यन्त साकडा पांजरा मा ..
चकला विगेरे पक्षियो वैर युक्त होय छे अथवा जाल ..
बधन मा रहेला माछलाओ परस्पर पीडा थी वैर युक्त थ..
अत्यन्त दु खी होय छे

विवेचन –तेवीज रीते बीजा दृष्टातो पण बतावाय
जेमके अत्यन्त साकडा पाजरा मा रहेल चकलादि पक्षि
अथवा जाल विगेरे मा रहेल एक प्रकार ना माछला वि
परस्पर पीडा पामवाथी वैर भाव बाधता अत्यन्त दु
थाय छे तेम निगोद ना जीवो पण परस्पर पीडा पाम
वैर भाव बाधी अत्यन्त दु.खी थाय छे

मूलम्

तथा पुनस्तस्करके निहन्य-माने च सत्यामनले विशन्त्य
कौतूहलार्थपरिपश्यतांनृणां,द्वेषंविनोत्तिष्ठतिकर्मसञ्चयः
बुधास्तमाहुःकिलसामुदायिकं, भोगोयदीयो नियतोऽप्यने
एवंहिचेत्कौतुकतः कृतानां, स्वकर्मणामत्र सुदुर्विपाकः।
अन्योऽन्यबाधोत्थविरोधजन्मना-मनन्तजीवैःकृतकर्मणांत
भोगोऽप्यनन्तेऽपगते हिकाले,निगोदजीवैर्नहि जातुपुर्यते।

भावार्थः– तेज प्रमाणे चोर हणाये छते अने पति
स्त्री अग्नि मा प्रवेश करते समये कुतुहल थी जोता
मनुष्यो ने द्वेष विना पण कर्मनो बंध थाय छे. विद्वान् ..

ने सामुदायिक बध कहे छे एनो अनुभव पण अनेक प्रकारे
निश्चित छे जो ए प्रकारे कुतुहल वश करेल पोताना
कर्मो नु आ संसार मा अत्यन्त दु:ख दायक फल छे. तो
अनंत जीवो नी साथे परस्पर द्वेष भाव थी उत्पन्न थयेल
कर्मो ना फल नो अनुभव अनत काल व्यतीत थये छते
निगोद ना जीवो थी कदाच न पूराय.

विवेचन.— केटलीक वखत द्वेष विना मात्र कुतुहल थी
पण कर्म वंधाय छे ते वतावता ज्ञानी भगवतो कहे छे के
चोर ने फासी देवाती होय अथवा पतिव्रता स्त्री पोताना
पति पाछल अग्नि मा प्रवेश करी सती थती होय ते समये
कुतुहल थी जोवा छतां पण मनुष्यो ने कर्म नो वध थाय
छे तेने ज्ञानी भगवतो सामुदायिक बंध कहे छे. एनु फल
पण अमुक प्रकारे भोगववु पडे छे जेमके अग्नि थी अथवा
पाणी थी गाम नो नाश थाय त्यारे गामना वधा लोकोनो
नाश थवाथी वधा ने एक साथे पाप नो उदय थवाथी पाप
नु फल भोगववु पड़े छे तेने सामुदायिक कर्मो नो उदय
कहे छे ए प्रकारे आ संसार मां कुतुहल वश करेल पोताना
कर्मो नु अत्यन्त दु:ख दायी फल भोगववु पडे छे तो
अनंत जीवो नी साथे परस्पर द्वेष भाव थी उत्पन्न थयेल
कर्मो ना फल नो अनुभव अनत काल व्यतीत थये छते पण

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मूलम् –

पूज्याः! निगोदासुमतांमनोऽस्तिनो, केनेदृशंतन्दुलमत्स्यवद्भ्रं
प्रजायते कर्म गतस्त्वनन्त-कालप्रमाणं परिपाकएवम्।

भावार्थ –हे पूज्यो, निगोद ना जीवो ने मन होतु छता तदुलिया मच्छ नी जेम कया कारण थी एवा प्र[illegible] कर्म बंधाय छे जेथी तेना फल नो अनुभव अनंतकाल रहे छे ?

विवेचन –शास्त्र मा एम लखेलु छे के 'मन एव [illegible] मनुष्याणा कारण बंध मोक्षयो' एटले मनुष्यो ने मन बंध अने मोक्षनु कारण छे अर्थात् शुद्ध मन द्वारा [illegible] मोक्ष थाय अने अशुद्ध मन द्वारा कर्म नो बंध था[illegible] जेमके प्रसन्नचन्द्र राजर्षिए अशुभ मन द्वारा सातमी [illegible] नां दलिया एकठा कर्या अने शुभ मन द्वाराज केवल[illegible] प्राप्त कर्यु तो ए प्रश्न थाय छे के निगोद ना जीवो [illegible] नथी होतु छता तदुलिया मच्छनी जेम कया कार[illegible] एवा प्रकार नु कर्म बंधाय छे के जेना फल नो [illegible] अनंत काल पर्यंत करवो पडे ?

ऽम्

। जडा संश्रयितुं स्वयं नो, शक्तातुविष्णुःपरब्रह्मतुल्यः ।
।न्स्वयंनाश्रयतेहिमायां,यत्पारतन्त्र्यादजडोजडश्रयेत् ।३६।

थार्थ — जड एवी माया तो विष्णु नो आश्रय लेवाने
।र्थ नथी पर ब्रह्म तुल्य विष्णु पण जाणता छता पोते
।ा नो आश्रय न ले, जे कारण थी चेतन पराधीन होते
। जड़ नो आश्रय ले छे

।वेचन – ससार मा कोई पण प्रवृत्ति करवाने चेतनज
।तन्त्र छे जड पदार्थ कोई पण प्रवृत्ति स्वतन्त्र रीते करी
के नही आजे जड द्वारा जे प्रवृत्ति देखाय छे तेमा प्रेरक
रीके अवश्य चेतनज होय छे तो माया जड होवाथी
वतन्त्र विष्णु नो आश्रय लेवा समर्थ नथी अने शुद्ध चैतन्य
।य एवो आत्मा पण कदापि जड वस्तु नो आश्रय लेतो
।थी. तेथी पर ब्रह्म तुल्य शुद्ध चैतन्यमय एवा विष्णु पण
जाणता छता जड एवी माया नो आश्रय ले नही. परन्तु
जड थी पराधीन बनेल चेतन जड वस्तु नो आश्रय ले छे.

मूलम् –

अथैव विष्णुर्युगपन्नुदेत्तां, पृथक्पृथग्वा प्रतिजीवमीर्त्ते ।
आद्ये यदीमां तु नुदेत्रिलोकी, तदैकरूपास्तु न भिन्नरूपा ।४०
तदकरूप्याद्यदि तां पृथक्पृथग्, जीवान्प्रतीर्त्तेनुभवेत्तदानीम् ।
आनन्त्यमस्या इयमप्यनेक-रूपा च जीवाअपिभिन्नरूपाः ।४१।

भावार्थ विष्णु माया ने एक साथे प्रेरणा करे छे के अलग-अलग प्रेरणा करे छे ? जो एक साथे प्रेरणा करता होय तो त्रणे लोक ना जीवो एक सरखा होय परन्तु जुदा रूप वाला नही जो माया ने जूदा-जूदा जीवो प्रत्ये प्रेरणा करे तो माया नु अनन्त पणु थई जाय तो माया पण अनेक स्वरूप वाली अने जीवो पण अनेक स्वरूप वाला थाय

विवेचन - हवे जो एम मानिये के विष्णु माया ने प्रेरणा करे छे तो शु विष्णु माया ने एक साथे प्रेरणा करे छे के दरेक जीव प्रति अलग-अलग प्रेरणा करे छे ? जो विष्णु माया ने एक साथे प्रेरणा करे छे, ए मानवामा आवे तो पण दोष आवे छे, कारण के जो विष्णु माया ने एक साथे प्रेरणा करे तो त्रण लोक ना जीवो एक सरखा होवा जोइये एटले बधा जीवो सुखी अथवा बधा जीवो दुखी थवा जोइये, परन्तु भिन्न स्वरूप वाला थवा न जोइये अर्थात् केटलाक जीवो सुखी अने केटलाक जीवो दुखी न थवा जोइये परन्तु जीवो जूदा-जूदा स्वरूप वाला होवाथी विष्णु एक साथे माया ने प्रेरणा करे छे ते वात घटती नथी

जो विष्णु माया ने दरेक जीव प्रत्ये अलग-अलग

प्रेरणा करे छे एम मानिये तो दोष आवे छे कारण के दरेक जीव प्रत्ये अलग-अलग जो विष्णु प्रेरणा करे तो माया नुं अनन्त पणु थई जाय छे तो माया पण अनेक स्वरूप वाली थाय अने जीवो पण भिन्न स्वरूप वाला थाय परन्तु माया एक स्वरूप वाली होवाथी अनन्त स्वरूप वाली माया घटती नथी

मूलम् -

नामैवमस्त्वत्र तथापि माया, जडासतींकि चरितुं क्षमास्यात् ।
कर्त्तुश्च शक्तेरथ सा समर्था, तदैवकर्त्तासुखदुःखदोऽस्तु ।४२।
किं कर्त्तुरेतैरपराद्धमस्ति, चेदीदृशं तां प्रति जीवमीर्त्ते ।
निरागसांप्राणभृतांय ईद्दग्दुःखादिकर्त्तासकथंहिकर्त्ता ?।४३।

गाथार्थ-भले एम हो तो पण माया जड होवाथी शु करवाने समर्थ होय ? जो कर्त्ता नी शक्ति थी समर्थ थाय तो सुख-दुःख नो कर्त्ता विष्णु थाय ते जीवोए कर्त्ता नो शुं अपराध कर्यो छे के जेथी विष्णु ते जीवो प्रत्ये तेवा प्रकार नी माया ने प्रेरणा करे ? जो निरपराधी जीवो ना दुःखादि नो कर्त्ता होय तो ते कर्त्ता केवी रीते गणाय ?

विवेचन-अनन्त स्वरूप वाली माया तमारा कहेवा मुजब मानिये तो पण जड एवी माया कइं पण करवाने शु समर्थ थाय ? अर्थात् जड एवी माया कइ पण करवाने

विवेचन - वैष्णवो नुं एवु कथन छे के जे जीवो ईश्वर
नुं ध्यान करता नथी ते जीवो ईश्वर ना अपराधी होवाथी
तेमने ईश्वर दुःख आपे छे अने जे जीवो ईश्वर नु ध्यान,
वादि करे छे तेमने ईश्वर सुख आपनार थाय छे

मूलम् –
द्वेषी च रागी भवतां स कर्त्ता, य ईदृशीमाचरति प्रतिक्रियाम् ।
तामेवमस्त्वस्तु परं य एनं, निन्देन्न वन्देत गतिस्तु कास्य ।४५।

भावार्थ - आवा प्रकार नी प्रति क्रिया करवाथी ईश्वर
रागी अने द्वेषी थशे भले तेम हो, परन्तु ईश्वर नी निन्दा
पण न करे अने वन्दन पण न करे तेनी कई गति ?

विवेचन -जो ईश्वर पोतानु ध्यान करनार ने सुख आपे
छे अने न करनार ने दुःख आपे छे एवा प्रकार नो ईश्वर
तो रागी अने द्वेषी गणाय तमारा कहेवा मुजब भले ईश्वर
रागी अने द्वेषी गणाय, एम मानिये तो पण एक बीजो
वांधो ए आवशे के ईश्वर नी भक्ति करनार सुखी थशे अने
भक्ति न करनार दुःखी थशे. परन्तु जेओ ईश्वर नी भक्ति
करता नथी, नमस्कार करता नथी अने तेनी निन्दा पण
करता नथी तेमनी कई गति थशे ?

मूलम्—
लोके त्रिधा स्याद्गतिरेकवस्तुनो-
यत्सेवकासेवकमध्यमात्मिकाः ।

[illegible] नो [illegible] दुः[illegible] नहि,
[illegible]नोऽपि [illegible] कानिचित् ॥४९

भावार्थ संसार मा [illegible] पदार्थो नी त्रण दशा होय छे
सेवक, [illegible] नी गति होय ना म
नी कई गति ?

विवेचन -संसार मा [illegible] पदार्थ नी त्रण गति होय
तेम जीवो ना पण त्रण प्रकार होय छे—सेवक, अने
अने मध्यम तेमनी त्रण प्रकार नी दशा होय छे
तमारा कहेवा मुजब ईश्वर नु ध्यान करनार सुखी
छे अने ईश्वर नी निन्दा करनार दुःखी थाय छे परन्तु
ईश्वर नी निन्दा पण करतो नथी अने ईश्वर नु ध्
पण करतो नथी तेनी एटले मध्यस्थ नी कई गति थाय

मूलम् -
अस्यापि काचिन्नियता गतिः
स्या-दस्यागतेस्तर्हि च कोऽस्ति कर्त्ता
तर्हीति वाच्यं सुखदुःखमुख्यं,
यथा कृत कर्म तथैव लभ्यम् ॥४

भावार्थ- एनी पण कोई नियत गति होय तो पूर्व
तेनी गति नो कर्त्ता कोण ? तो कहेवु पडे के तेणे

कार नु कर्म करेल होय तेवा प्रकार नु सुख–दुख ले छे

वेवेचन –मध्यस्थ नी पण कोई पण प्रकार नी गति तो वश्य होय छे गति वगर केम चाले ? ईश्वर नु ध्यान रनार अने ईश्वर नु ध्यान न करनार एम वे ना सुख- ख नो कर्त्ता ईश्वर छे परन्तु मध्यस्थ ना सुख-दु ख नो र्त्ता कोण ? तेनो प्रत्युत्तर वैष्णवो तरफ थी न मलवाथी न शास्त्रकारो तेनो प्रत्युत्तर आपे छे के मध्यस्थ पण वा प्रकार नु शुभ अथवा अशुभ कर्म करे छे तेवा प्रकार सुख-दु ख तेने मले छे

पोतानी मेले ईश्वर द्वारा जीवो नी उत्पत्ति अने संहार नी वन्ने नी अनुपपत्ति

मूलम् –

त्थं च ये केचन सङ्गिरन्ते, कर्त्ता स्वतो जीवगणान्प्रसृज्य ।
ंसारिभावं प्रणिदाय तेषां, महालये संहरते पुनस्तान् ।४८।
गच्या अमी किं जगदीश्वरोऽयं, जीवान्मतः किंप्रकटीकरोति।
किंवानवानेवकरोतिकर्त्ता, चेदादिपक्षःशृणुतर्हिवार्त्तम् ।४९।

भावार्थ केटलाक लोको एम कहे छे के कर्त्ता पोते जीव समूह ने उत्पन्न करी संसारी भाव पमाडी महा प्रलय समये करीने तेमने संहरी ले छे तेमने पूछवानु के शु आ ईश्वर

विद्यमान जीवो ने प्रगट करे छे के नवा प्रगट करे
जो आदि पक्ष होय तो तेनो उत्तर सांभलो.

विवेचन - केटलाक यवनाचार्यो एम वोले छे के ई
पोतेज जीव समूह ने उत्पन्न करी ससारी भाव ने प
छे अने महा प्रलयकाल समये जीवो ने पोताना मा प
सहरी ले छे त्यारे जैन शास्त्रकारो तेमने पूछे छे के ई
जीवो ने उत्पन्न करे छे ते विद्यमान जीवो ने उत्पन्न
छे के नवा जीवो ने उत्पन्न करे छे ? जो ईश्वर विद्य
जीवो ने उत्पन्न करतो होय तो तेनो उत्तर साभलो

मूलम्:—

इष्टे पदे चेत्परिरक्ष्य जीवान्, यः कार्यकाले प्रकटी करोति
सोऽस्मादृशःकर्मणिवस्तुरक्षी,प्रस्तावनोप्राप्तिभयाद्विभीतः

भावार्थ - जो ईश्वर इष्ट स्थले जीवो ने राखी ने क
अवसरे प्रगट करे छे तो अवसरे प्राप्ति ना भय थी डरे
ते ईश्वर क्रिया अवसरे अमारी जेम वस्तु नो सग्रह करन
थाय

विवेचन –जो प्रथम पक्ष मुजब ईश्वर विद्यमान जी
ने उत्पन्न करतो होय तो एम नक्की थाय छे के ईश्व
जीवो ने इष्ट स्थले राखी मूके छे अने कार्य अवसरे प्रग
करे छे जेम एक सामान्य माणस जे वस्तु नी पोताने जरू

छे, ते वस्तु तेने अवसरे मलशे के केम ? एवी वस्तु प्राप्ति ना भय थी वस्तु ने सग्रही राखे छे तेम ईश्वर पण अवसरे जीवो नी प्राप्ति पोताने थशे के केम ? एवा भय थी जीवो ने सग्रही राखे छे तो तेम सग्रह करनार मनुष्य भय ना कारणे सग्रह करनार होवाथी ते भयभीत गणाय छे तेम ईश्वर पण 'मने अवसरे जीवो मलशे के केम' एम भय ना कारणे भयभीत गणाशे.

मूलम् —

अशक्तिरप्यस्य निवेदिता य-न्नो भिन्न भिन्नार्थक मेलवीर्यः ।
कर्तुं स्त्वचिन्त्याकिलशक्तिरस्ति,तत्किसलोभीतिनिगद्यतेहो५१

गाथार्थ — कहेल पक्ष मा कर्त्ता नी अशक्ति जणावी छे, कारण के जूदा-जूदा जीव पदार्थो मेलववा नी शक्ति कर्त्ता ना नथी जो वादो कहे के कर्त्ता नी शक्ति अचिन्त्य छे तो ते कर्त्ता लोभी कहेवाय

विवेचन – ईश्वर प्रथम जीवो ने अमुक स्थले राखी मूके छे एटले सग्रही राखे छे अने पछी अवसरे प्रगट करे छे एम जो तमो मानता हो तो कदाच ईश्वर ने ते वस्तु पाछी मेलववानो जो भय न होय तो ते जीवो अने पदार्थो पाछा मेलववा माटे नी ईश्वर नी शक्ति नथी. त्यारे वादी एम कहे छे के जीवो ने अने पदार्थो ने पाछा मेलववानी ईश्वर

नी शक्ति ने [illegible] के जो ईश्वर मां [illegible] शक्ति मानो [illegible]
जो तमो ईश्वर ने मां [illegible] शक्ति [illegible] मानो छो [illegible]
ईश्वर जीवो ने [illegible] मां [illegible] छे, माटे ईश्व
[illegible] होवो जोइये एम [illegible] नथी

मूलम् -

कृत्वा नवानेव यदैव जन्तून्, संसारिभावं प्रति लाभयेच्चेत्
मीलान्कथंमोचयितुंक्षमोन,येनस्वक्लृप्तानितिकिंविडम्बयेत्

भावार्थ :- जो अवसरे नवा-नवा जीवो ने उत्पन्न क
ससारी भाव ने पमाडे तो ते जीवो ने मुक्त करवाने
समर्थ नथी के जेथी पोते वनावेल जीवो ने आ रीते वि
वना करे छे ?

विवेचन - तमारा कहेवा मुजब सृष्टि सर्जन ना अ
ईश्वर नवा-नवा जीवो ने उत्पन्न करी ससारी भाव
पमाडे छे एम मानिये तो शु ईश्वर मा नवा-नवा ज
ने वनावी संसारी भाव ने पमाडवानी शक्ति छे तो ते
जीवो ने मुक्त करवानी ईश्वर नी शक्ति नथी ? जो ई
नी ते जीवो ने मुक्त करवानी शक्ति होय तो पोता
वनावेल जीवो ने आ रीते शा माटे विडवना करतो ह
तो तेनो दया भाव क्या गयो ? अने ईश्वर ने निर्दय गर
ते पण ठीक नथी

मूलम्

कृतानपीत्थं यदि संहरेत् पुनः कोऽयंविवेकोजगदीशितुःसतः।
बालोऽपियोवस्तुनिजंप्रक्लृप्तं, धर्तु क्षमस्तावदयं दधाति ।५३।

भावार्थ जो ईश्वर ए प्रमाणे पोते बनावेल जीवो नो नाश करतो होय तो तेनामा विवेक क्या थी ? बालक पण पोते बनावेली वस्तु ने रक्षण करवाने समर्थ होय तेटला काल सुधी रक्षण करे छे.

विवेचन -बालक ज्यारे धूल ना घर चोमासा मा बनावे छे ते घर बनावता-बनावता पडी जाय छे छता ते घर ने साचववा माटे केटलो प्रयत्न करे छे, अने कोई ते घर ने पाडी नाखे तो तेने केटलु दु:ख थाय छे कारण के बालक ना मन मा पोताना घर पणा नो भाव बैठो छे, एटले पोते शक्ति मुजब तेनु रक्षण करवा प्रयत्न करे छे तो ईश्वर जेवो शक्तिशाली पोतानाज बनावेला जीवो ने मारी नाखे छे तो शु ईश्वर मा विवेक नथी.

मूलम् —

लीलेति चेत्तर्हि जनोऽपि लीलां, कुर्वन्न निन्द्यो भवति प्रवीणैः।
तपोयमध्यानमुखैःसलभ्य-श्रेत्तानि रुच्यैर्यदिसन्ति तस्मै ।५४।
एतानि यस्मै रुचये भवन्ति, स नेदृशीं जातु करोति लीलाम् ।
लोकेऽपिजीवादिकघातनीत्था,लीलानिषिद्धान्तिसमंयतेन।५५

गाथार्थ जो आ लीला छे तो लीला करतो मनुष्य ...
पुरुषो वडे शु निन्द्य नथी वनतो ? जो तप, यम अने ...
वडे ईश्वर प्राप्त करवा योग्य छे तो तपादि ईश्वर ...
प्रीति माटे थाय छे जो ईश्वर ने तपादि प्रत्ये प्रीति ...
तो ते आवा प्रकार नी लीला कदापि करे नही ससार ...
पण जीवो ना घात थी उत्पन्न थयेल लीला ईश्वरेज निं...
करेली छे.

विवेचन—जो तमो कहेशो के नवा-नवा जीवो ...
करवा अने पछी तेनो नाश करवो एतो ईश्वर नी ...
छे तो तमोने प्रश्न पूछवानु मन थाय छे के एक स...
माणस पण आवा प्रकार नी हिसामय लीला क...
विद्वान् पुरुषो वडे निन्दनीय वने छे तो शु ईश्वर ...
ज्ञानी पुरुष आवी प्रकार नी हिंसामय लीला करे तो नि...
नीय न वने ? अवश्य वनेज

वली ईश्वर तप, यम अने ध्यानादि वडे प्राप्त थाय ...
छे एटले ईश्वर ने तप, यम अने ध्यानादि प्रत्ये प्रीति छे ...
एम नक्की जणाय छे व्यवहार मा पण माणस जे वस्तु ...
प्रत्ये प्रीति होय छे तेवीज क्रिया करे छे तो ईश्वर जीव-
हिसा वाली आवा प्रकार नी क्रीडा केम करे ? व...
ससार मा पण जीव-हिंसादि वाली सर्व क्रिया ईश्व...
निषेधी छे

ूलम्—

न्यान्निपेधन्पुनरात्मनासृजं-स्तदासक्तोऽतीवविनिन्दितःस्यात्।
ं त्वनालोचन कर्मकारं, वयं न कर्त्तारमिमं वदामः ।५६।

ाथार्थ –जे बीजाने निपेध करतो होय अने पोतेज ते
तु करतो होय तो ते अति निन्दनीय बने छे, ए प्रमाणे
चार कर्या वगर करनार ने अमे कर्त्ता कहेता नथी

वेचन –जे वस्तु त्याज्य होय तेनोज निपेध करवामा
वे छे जे वस्तु नो निपेध ईश्वरे पोतेज कर्यो होवा छता
वर पोतेज त्याज्य अने निन्दनीय एवी वस्तु करतो होय
' अति निन्दनीय बने एमा शु आश्चर्य ? ईश्वर जेवो
नी पुरुप आवा प्रकार नी निन्दनीय अने त्याज्य वस्तु
ारे विचार कर्या विना आचरे छे त्यारे एवी रीते विचार
र्या वगर करनार ने अमे कर्त्ता तरीके मानता नथी

ूलम्—

त्वद्वचोन्यास भरः स कर्त्ता, पूतः स्वयं स्वीयजनान्पुनानः ।
ोतिर्मयाद्योत्थगुर्णविशिष्टः,सोऽपिस्वकाशान्स्वरसाद्विमोहे५७
सार भावे विरचय्य सद्यो, जीवत्वमेवं वहुदु:ख पात्रं ।
स्वयं चेन्नहि तर्हि कर्त्तु-रंशा इमे प्राण भृतोऽपरेयत्।५८

ाथार्थ :- तमारा वचन मुजब ते कर्त्ता स्वयं पवित्र छे
ने बीजाओ ने पवित्र करे छे, ते ज्योतिर्मय विगेरे थी

मूलम्.—

र्त्ता कथं संकटपेटकोदरे, दौर्गत्यदौस्थ्यादिमये भवेऽस्मिन् ।
ाानन्निजांशान्सहसैवनुद्यात्,स्वकस्वरूपाद्विनिपात्यरम्यात् ५९

ाथार्थ.- ईश्वर जाणतो छतो विचार कर्या विना
ोताना अशो ने मनोहर एवा पोताना स्वरूप थी पाडी ने
ंकट नी पेटी रूप गर्भ वाला, दुर्गति अने दु.ख ना स्थान
ूप आ संसार मा केम पाडे ?

विवेचन:- अज्ञानी अने अविवेकी एवा मा-बापो पण
ोताना बालको ने सुख ना स्थान थी दु ख ना स्थान मा
ाडवानी प्रेरणा करता नथी तो आ ससार के जे अनन्त
ुख ना भंडार रूप छे आवु जाणवा छता ईश्वर विचार
र्या विना पोताना अश रूप जीवो ने मनोहर एवा स्वरूप
ी पाडी ने भयकर सकट नी पेटी रूप गर्भ वाला, दुर्गति
ने दु ख ना स्थान रूप आ ससार मा नाखवा नी प्रेरणा
ेम करे ? अर्थात् नज करे

मूलम् -

या तु लीलाऽस्ति यदीश्वरस्य, संसार एवैष ततस्तदिष्टः ।
दातुसंसारिजनैस्तदाप्त्यै, कष्टादिकेनाथविधेयमुग्रम् ॥६०॥

ाथार्थ -जो आ ईश्वर नी लीला छे तो ससार ईश्वर ने

[illegible]

[illegible] जी जीवो ने पोताना [illegible] स्थान मां नाख- वानी प्रवृत्ति [illegible] नी लीला कहे [illegible] होय ना जीवों ने दुःख ना स्थान मां नाखवानी प्रवृत्ति ईश्वर ने प्रिय छे एम जणाय छे जो आवी प्रवृत्ति ईश्वर ने प्रिय छे तो जगत ना जीवो शा माटे ईश्वर नी प्राप्ति माटे तपादि उग्र कष्ट सहन करे ?

मूलम् -

पूर्वापरानाश्रितवाक्यमेतत्, प्रजल्पता काऽपि न वाक्प्रतीतिः
य सर्वसद्रूपगुणानदोषान्, कर्त्तुर्वरांशानिति पातयन्ति ।६१

गाथार्थ -जे सर्वोत्तम स्वरूप वाला अने दोष रहित एवा ईश्वर ना अंशो ने नाश करे छे, आ पूर्वा पर आ असम्बद्ध वालु वाक्य बोलनार ना वचन नी प्रतीति थती नथी.

विवेचन:- कोई पण माणस पोताना श्रेष्ठ भागो ने नाश पमाडे एवु बनतु नथी सर्वोत्तम स्वरूप वाला अने दोष रहित एवा पोताना श्रेष्ठ भागो ने ईश्वर नाश पमाडे एवु

...स्पर असम्बन्ध वालु बोलता एवा यवनाचार्यो नुं वचन
...मपात्र नथी

कर्म थी जीव ने सुख-दुःख थाय छे तो पण
ईश्वर ऊपर कर्त्ता नु आरोपण

...क्तम् —
...हिवाच्यंशृणुकिञ्चिदस्ति, ज्योतिर्मयं चिन्मयमेकरूपम् ।
...प्रजाना सुखदुःख हेतुं, योगीश्वरध्येयतनरव भावम् ।६२।

...थार्थ· तो कडक कहेवा योग्य छे ते साभलो प्रकाश
...रूप, ज्ञानमय, अद्वितीय स्वरूप, एक रूप, प्रजाना सुख-
...ख ना दर्शक अने योगीश्वरो ने ध्येय रूप एवु ब्रह्म छे

...विवेचन -हवे ईश्वर जगत नो कर्त्ता अने जगत नो नाश
...रनार छे एवी मान्यता वाला ने जैन शास्त्रकारो प्रत्युत्तर
...आपे छे के तमो ईश्वर एटले ब्रह्म तेने जगत नो कर्त्ता अने
...संहारक तरीके मानो छो, परन्तु पहेला ब्रह्म नुं स्वरूप
कैवुं छे ते साभलो प्रकाश स्वरूप, ज्ञान मय, एक रूप,
प्रजाना सुख दुःख ना दर्शक अने योगीश्वरो ने ध्येय रूप
एवा प्रकार ना स्वरूप वालुं ब्रह्म छे

...मूलम् :
दौर्गत्यदुःखे सुगति सुखं च, प्राप्नोति तादृक्कृत कर्म योगात् ।
जीवो यदा त्वेप समान भावं, ध्येत्तदागच्छतिब्रह्मरूपम् ।६३।

भावार्थ :- जीव तेवा प्रकार ना करेल कर्म ना योगे
अने दुःख, सुगति अने सुख प्राप्त करे छे अने ज्या
जीव सम भावना आश्रय ले छे त्यारे ब्रह्मत्व ने पामे

विवेचन -ससार मा जीव राग अने द्वेष ने वश
जीव हिसा, असत्य, चोरी, मैथुन, परिग्रह, क्रोध
माया, लोभ, राग, द्वेप, कजीओ, खोटुं आल, चाडी
आनन्द, शोक, माया मृषावाद अने मिथ्यात्वशल्य
पापो नु सेवन करवाथी पाप नो बध थाय छे, अने
ना उदये निगोद, नरक अने तिर्यचादि दुर्गति मा
अने त्या भूख, तरस, रोग, शोक, दारिद्रय, गर्भवेदना,
वेदना अने निगोद नी वेदना विगेरे अनेक प्रकार ना
पामे छे अने दर्शन, पूजा, सामायिक, दान, शियल,
भाव, पौपध, प्रतिक्रमण, व्रत, नियम अने ध्यानादि
पुण्य नो बध करवाथी ए पुण्य ना उदये मनुष्य गति
गति, शरीर नुं आरोग्य, दीर्घ आयुष्य, बुद्धि ना
इन्द्रिय नी सपूर्णता, लक्ष्मी, मान, यश आदि अनेक
ना सुखो मेलवे छे परन्तु जीवन मा समता भाव प्राप्त
थी जीव ब्रह्मत्व एटले मोक्ष पामे छे

श्लोकम्

तुष्टिर्जनानां परमेश्वरस्य, चेत्सृष्टि संहारकथाप्रवृ
त्तिप्रभाव प्रतिपादनार्थं,तदेति वाच्या स्तुतिरीश्वरस्य।

भावार्थ-जो ईश्वर नी सृष्टि रचना अने संहार नी कथा
प्रवृत्ति वड़े लोको ने तुष्टि थती होय तो देदिप्यमान
भाव प्रतिपादन करवा माटे ईश्वर नी स्तुति कहेवा
य छे.

विवेचन-जो तमारे लोको ने ईश्वर नो देदिप्यमान
भाव प्रतिपादन करवा द्वारा खुश करवा होय अथवा
को ने खुशी जोडती होय तो ईश्वर नी सृष्टि सर्जन नी
ा अने ईश्वर नो सृष्टि संहार नी कथा करवा करता
वर नो कोई देदिप्यमान प्रभाव जेमा होय एवी ईश्वर
स्तुति करवी जोइये.

...म्

स्तामयंश्रीपरमेष्ठिनामा, तद्ध्यानवानेपजनोऽभिनिध्यात्।
ांसुखस्यात्मनिसविधानात्,संहारकश्चात्मतमोपहारात्।६५

भावार्थ- तमो परमेष्ठि ने कर्त्ता तरीके कहेवानुं रहेवा
परमेष्ठि नुं ध्यान करवाथी पोतानामा सुख ने करवाथी
न्य कर्त्ता छे अने पोताना अज्ञान नो नाश करवाथी ते
न्य-संहारक छे.

विवेचन -ईश्वर ने जगत नो कर्त्ता अने संहारक तरीके
ना नुं रहेवा दो, परन्तु मनुष्य परमेष्ठि नुं ध्यान
वाथी पोताना आत्मा मा सुख ने करे छे माटे ए दृष्टिए

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यथैव लोके किल कोऽपि शूरः, स्वाम्याप्तशस्त्रैरपि स
संजित्य तत्संहृतिकृन्निगद्यते, सुखस्य कर्तापि भवेत्स्वकस्य

भावार्थ— जेम लोक मां कोई शूरवीर स्वामि
नोधेल शस्त्रो वडे सर्वशत्रुओने जीती ने शत्रु नो
कर्त्ता अने पोताना शरीरे सुख थवाथी सुख कर्त्ता
गणाय छे

विवेचन— हवे ग्रंथकार श्री लौकिक दृष्टान्त ह
वस्तु ने स्पष्ट करता बनावे छे के जेम संसार मां क
वीर रण योद्धो युद्ध ना समये पोताना स्वामी नी
शस्त्रो लई ते शस्त्रो वडे सर्व शत्रुओने जीते छे अने
कारण थी पोताने सुख थाय छे तेथी शत्रुओ ना
करवाथी संहारक तरीके गणाय, अने पोताना
करनार होवा थी कर्त्ता तरीके गणाय छे तेम मनुष्
श्वर नुं ध्यान करवाथी पोताना आत्मा मां सुख थतुं
पोताना सुखनो कर्त्ता गणाय छे, अने ईश्वर ना

आत्माओ [illegible] शूरवीर [illegible] पोताना स्वामी ना [illegible]
उपकार माने छे तेम [illegible] ना [illegible]
भगवान मुक्तिना कर्त्ता नथी, ईश्वर न माने छे

विवेचन व्यवहार मां कारण मां कार्य नो उपचार
थई शके छे जेमके द्रव्य सामायिक ए भाव सामायिक
कारण छे छता द्रव्य द्रव्य सामायिक करनार पण 'मे सा-
यिक कर्युं' एम बोली शके छे अने बोले पण छे वास्तवि
रीते तो समता आवे त्यारेज सामायिक कर्युं कहेवाय, प
द्रव्य सामायिक ने पण सामायिक कही शकाय छे ते
आलंबन मा पण कर्त्ता नो उपचार करी शकाय छे जेमके
आत्मा पोताना उद्यम द्वाराज संसार थी तरी शके छे, छत
श्री जिनेश्वर देव नुं आलंबन आत्मा ने संसार तरवा माटे
परम आलंबन होवाथी 'हे भगवान, त मने तार्यो. हे
भगवान, तुं मने तार' एम बोलाय छे अहिया पण आल-
बन मा कर्त्ता नो उपचार थाय छे, तेथी तेनो उपकार
मानवामा आवे छे

शूरवीर मनुष्य पोताना बलथीज शत्रु ने जीते छे, छता
'शस्त्र आपनार स्वामिए मने जीताड्यो' एम शस्त्रदाता
स्वामी नो उपकार माने छे अहिया पण आलंबन रूप
शस्त्रदाता ने कर्त्ता तरीके माने छे, तेम ईश्वर ना ध्यान थी
[illegible]-भक्त सुख पामे छे, छता ईश्वर रूप आलंबन मा

र्त्ता नो उपचार करी तेने सुख-कर्त्ता तरीके अने उपकारी रीके पण माने छे

मूलम् —

एव ह्यनेके खलु सन्ति संतो, दृष्टांतसङ्घाः सुधिया सुमुह्याः
तथासतोशोमहिमापिविश्रुतो,भक्तुश्च सर्गप्रतिसर्गकर्तृता ६६

भावार्थ - ए प्रमाणे खरेखर अनेक दृष्टांत समूहो छे ते बुद्धिमान पुरुषे विचारवा तेमज ईश्वर प्रसिद्ध छे, तेनो महिमा प्रसिद्ध छे अने ईश्वर ना भक्त नुं सृष्टि सर्जन अने संहारक पणुं पण प्रसिद्ध छे

विवेचन.—हवे उपसंहार करता शास्त्रकार महाराजा फरमावे छे के अनेक दृष्टांतो संसार मा तेमज शास्त्र मा छे तेनो बुद्धिमान पुरुषोए विचार करवो जोइये जेथी ख्याल मा आवशे के ईश्वर जगत-कर्त्ता नथी अने जगत नो नाश करनार पण नथी परन्तु ईश्वर ए शुद्ध तत्त्व रूप छे, एम प्रसिद्ध छे ईश्वर नो महिमा पण प्रसिद्ध छे तथा ईश्वर ना भक्त नुं सृष्टि-सर्जन अने संहारक पणुं पण प्रसिद्ध छे

—

त्म ना ध्यान रूप वहाण नी खास आवश्यकता होय
ाटे ब्रह्म नुं ध्यान ए वहाण रूप छे जेम गृह मा
पहेला वहाण नी जरुर पडे छे परन्तु प्रवेश करता
ा नो त्याग करवो पडे छे. तेम मोक्ष रूप गृह मा
करता ध्यान रूप वहाण नो पण त्याग करवो पडे
ने पछी आत्मा पोतानी शुद्ध अवस्था मा स्थिर थई
छे माटे मुक्ति रूप गृह मा जवानी इच्छा वाला
पुरुषो ब्रह्म ना ध्यान ने भव रूप समुद्र मा वहाण
ा छे

कालादि पांच थकी जगत नी उत्पत्ति अने तेनो नाश

न् –

। यदीयंनहिसृष्टिरुत्थिता,सकाशतोब्रह्मणइत्यवाच्चिचेत्
: स्यादपयाति वा कुतो, निगद्यतामद्य रहस्यमेतपद् ।२।

ार्थ — हे स्वामी, जो ब्रह्म थकी जगत नी उत्पत्ति न
ाय तो जगत कोनाथी उत्पन्न थयु अने जगत नो नाश
कोने थाय तेनुं रहस्य आप कहो

अत्र -हे स्वामी ! आ संसार मा दरेक पदार्थो ना
थापणे प्रत्यक्ष देखाय छे, अने आप तो कहो छो के
नी रचना ब्रह्म थको थई नथी अने तेनो नाश पण
ग्रही थवो नथी तो जगत कोनाथी उत्पन्न थयुं अने

जगत नो नाश कोनाथी थाय छे एम संशय थाय छे
आप तेनुं रहस्य अमोने जणावो. तेनो उत्तर ग्रंथकार
आगल नी गाथा मां जणावे छे

मूलम् -

त्रिकालविज्ञा इति योगिनोये,निरागिणस्तेऽभिदधुर्वि
कालात्स्वभावान्नियतेश्चवीर्यतःसृ। ....यौस्त.स .वायप

गाथार्थ - त्रिकाल ज्ञानी, निरागी अने विशि
योगी पुरुषो कहे छे के काल, स्वभाव, नियति, क
उद्यम ए पाच समवाय कारण ना योगे सृष्टि नुं स
सृष्टि नो संहार थाय छे

विवेचन –जैन शासन नो एवो सिद्धान्त छे के व
कार्य मा पाचे कालादि कारणो अवश्य रहेला
अर्थात् कालादि पाच कारणो कोई पण कार्य मा
होय छे कदाच गौण-मुख्य पणे होय ते संभवित
आवा ऊनाला मा थाय छे तेमा काल कारण छे अ
गोटलीज आवा थाय परन्तु बीज कोई चीज थी
थाय, तेमा स्वभाव ए कारण छे अर्थात् आवानी गं
आवा थवानो स्वभाव छे ऊनालो होवा छता घणा
ऊपर आवा आवता नथी, तेमा काल अने आवा
स्वभाव छतां भवितव्यता ना कारणे आवा नथी

भवितव्यता ए कारण छे ए बधुं होवा छतां आवा
नार नां उद्यम अने तेनु भाग्य होय तोज आवा आवे छे
दरेक कार्य मां पांच कारणो रहेला होय छे तेम आ
त नी रचना अने तेनो संहार रूप कार्य मां कालादि
। कारणो रहेलां होय छे. एटले ए पांच कारणो जगत
ना अने संहार मां कारण भूत छे, एम ज्ञानी भगवंतो
कथन छे.

ब्रह्म नुं ब्रह्म मां लीन थवुं अने ज्योति नुं ज्योति मां मिलन

श्लोकम्

मुनयः! ब्रह्मणिब्रह्मलीयते,ज्योतिस्तथा ज्योतिषि संविशेदिति
र प्रवादो घटते महात्मना-मयं विनाब्रह्मपुराणवेदिनाम् ।४।

भावार्थ :– हे मुनिवरो ! ब्रह्म मां ब्रह्म नुं लीन थवुं अने
ज्योति मां ज्योति नुं मळवुं एवुं पुरातन तत्त्व ज्ञानी एवा
महात्माओनुं आ कथन ब्रह्मा विना केम घटे ?

विवेचन : जैन शासन नी एवी मान्यता छे के कोई पण
भवी आत्मा मनुष्य भव, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल अने
गुरु नो संजोग पामी जिनेश्वर देवनी वाणी नुं अमृत
पान करता सम्यक्त्व पामी संसार नी असारता जाणी
आदि तत्वो नुं सम्यग् ज्ञान मेळवी सर्व विरति रूप
सम्यक् चारित्र नी आराधना करी, चार घाती कर्मो खपावी,

केवल्य ज्ञान प्राप्त करी अने चार अघाति कर्मो नो क्ष
छे, त्यारे ब्रह्म मा ब्रह्म लीन थाय अने ज्योति मा
मली जाय छे आवुं प्राचीन तत्व ज्ञानिओनुं कथन छे
आ कथन ब्रह्म विना केम घटे ? तेनो प्रत्युत्तर आगल
गाथा मा बतावाय छे

मूलम् —

निशम्यतां ज्ञानमिदं वदन्ति, ब्रह्मेति वा ज्योतिरथेति वि
तदेकसिद्धस्यहिब्रह्मयावत्, क्षेत्रं श्रयेत्सर्वदिशा स्वनन्तम् ॥

तावद् द्वितीयस्य तृतीयकस्य, सिद्धस्य ब्रह्माश्रयते तदेव
एव ह्यनन्तामितसिद्धनाम्नां,ब्रह्माश्रयेत्क्षेत्रमहोतदाश्रितम् ।

तेनेतिगीर्वह्मणिब्रह्मलीयते,ज्योतिस्तथाज्योतिषिसम्मिलत्य
अयं प्रवादो मुनिभिःपुरातनैः,समाश्रितोब्रह्मयथार्थवेदिभि ॥

गाथार्थ :- सांभलो, तत्व ज्ञानिओ ज्ञान ने ब्रह्म अथवा
ज्योति कहे छे तो एक सिद्ध नुं ज्ञान सर्व दिशाओ मा
अनंत प्रमाण क्षेत्र ने आश्रयी रहे छे बीजा, त्रीजा ए
अनंत सिद्धो नुं ज्ञान पण अनंत प्रमाण क्षेत्र ने आश्रयी रहे
छे ते कारण थी ब्रह्म मा ब्रह्म लीन थाय छे, ज्योति मा
ज्योति मले छे एम ब्रह्म ने यथार्थ जाणनार प्राचीन मुनि
ओनुं आ कथन छे

ऊत्तर:-शब्द शास्त्र मा एक शब्द ना अनेक अर्थो थाय जेमके 'पय' एटले 'पाणी' अने 'दूध' पण थाय छे तेम ईया ब्रह्म ने ज्ञान पण कहे छे अने ज्योति पण कहे छे ई पण आत्मा ज्यारे केवल-ज्ञान पामे छे त्यारे तेमनुं ज्ञान लोकालोक प्रमाण आकाश क्षेत्र ने स्पर्शे छे लोकालोक क्षेत्र अनंत आकाश क्षेत्र प्रमाण छे, तेथी एक सिद्ध नुं ज्ञान दिशाओमा अनंत क्षेत्र प्रमाणमा व्यापी ने रहे छे तेम सिद्धोनुं, त्रण सिद्धोनुं, यावत् अनंत सिद्धोनु पण ज्ञान दिशाओ मां अनंत क्षेत्र प्रमाण व्यापी ने रहे छे माटे तीन तत्त्वज्ञानी मुनि पुंगवो नी वाणी एवी छे के ब्रह्म मा लीन थाय छे अने ज्योति मा ज्योति मले छे.

ब्रह्म अने सिद्धनुं अनंतीगं पणुं

प्रश्न

मतिप्राज्ञवराः! कथं न तत्, क्षेत्रस्य सान्द्र्यमथो भवेत्तदा।
परालिङ्गितवक्षसोऽप्यहो! ,सङ्कीर्णता केन भवेत्तत्र ।८।

भावार्थ:-हे श्रेष्ठ विद्वानो ! ए प्रमाणे होने छते क्षेत्र संकीर्णता न थाय ? परस्पर आलिंगन पूर्वक रहेता तो शुं संकीर्णता न थाय ?

उत्तर:-व्यवहार मा एम जोवा मा आवे छे के एक ज समये एक वस्तु जेटली जग्या मा रही होय तेट-

विवेचन - ब्रह्म, ज्ञान अथवा ज्योति ए त्रणे परस्पर आलिंगन दईने रहेल होवा छतां एक बीजा परस्पर एकठा केम थई जता नथी, अने एक रही शके तेटली जग्या मां अनंत ब्रह्म, अनंत ज्ञान अथवा अनंत ज्योति रहेवा छतां परस्पर संकडामण केम थती नथी? तेना प्रत्युत्तर मां जणाववानुं के जेम कोई विद्वान् ना हृदय मां घणां शास्त्रो ना अक्षरो नो संग्रह थयो होवा छतां पण तेना हृदय मां संकडामण थती नथी अने अक्षरो एकठा थई जता नथी. तेम ब्रह्म, ज्ञान अथवा ज्योति ए त्रणे परस्पर आलिंगन दईने रहेल होवा छतां एकठा थई जता नथी अने संकडा-मण पण थती नथी, एम चतुर अने विद्वान् पुरुषो कहे छे.

श्लोक —

इत्थंहि सिद्धैःपरिपूरितंशिव-क्षेत्रंनसङ्कीर्णमहो भवेत्कदा ।
सिद्धास्तथासिद्धपरम्पराश्रिताः,सान्द्रंयबाधारहिताजयन्तिभोः ११

भावार्थ — ए प्रमाणे सिद्धो थी पूरायेल सिद्ध क्षेत्र सांकडुं थतुं नथी अने सिद्ध नी परम्परा थी आश्रित सिद्धो संकडा-मण अने बाधा रहित जय पामे छे.

विवेचन - जे आत्माओ सकल कर्मों नो क्षय करी मुक्ति मां जाय छे तेमनुं स्थान अने तेओ केवी रीते रहेला छे ते बताववामां आवे छे, ऊर्ध्वलोकमा बार देवलोक, नवग्रैवेयक

॥ अथ दशमोऽधिकारः ॥

ना जीवोनुं अनन काल पर्यन्त निगोद ना दु ख मा रहेवु

म् –

नःपृच्छयत्एपपूज्याः! ,निगोदजीवानधिकृत्य तद्वत् ।
जीवाश्चनिगोदएव,तिष्ठन्ति केनाऽशुभकर्मणा ते ।१।
जन्मात्ययमाचरन्तः,कर्माणि कर्त्तुं न लभन्तिवेलाम् ।
णाकेनपरेतदुःखा–नन्तव्यथां तेऽनुभवन्तिदीनाः । २ ।
चिद्व्यवहारराशि-मायान्ति ते स्युः क्रमतोविशिष्टाः।
पुनर्येव्यवहारनाम्नो,निर्गत्य जीवाअभियान्ति तेऽपि।३।
जीवत्वमथो लभन्ते, कथं व्यवस्था कुत आविरस्ति ।
रतां सम्यगयंविचारो,विचारसञ्चारितचित्तवृत्ते ।४।

अर्थ.-हे पूज्यो, पूर्व नी जेम निगोद ना जीवो ने आश्रगी
ा थी प्रश्न पूछुं के निगोद ना जीवो क्या अशुभ
ा योगे निगोद मा रहे छे. तेओने जन्म अने मरण
-करता कर्म करवानो समय पण मलतो नथी. क्या
कर्म थी नरक ना जीवो करता अनन गणी
दीन एवा तेओ अनुभवे छे तेमाथी केटलाक
र राशि मा आवे छे. तेओ अनुक्रमे विशिष्ट होय छे.
ाण व्यवहार राशि मां थी निकली फरी थी निगोद
े पामे छे, तो कया प्रकारे व्यवस्था छे ? कयाथी

अनादि काल थी निगोद मा रहेला जीवो अनंत काल
' निगोद मां रहे छे, एटले तेओनुं जन्म अने मरण ते
द माज थया करे छे तो कया अशुभ कर्मोना योगे
द ना जीवो निगोद माज रहे छे ? ए प्रश्न थाय ने
ाविक छे वली निगोद ना जीवो ने जन्म-मरण अनंत
रहेवा थी कर्म करवानो समय पण मलतो नथी छता
कर्म ना योग निगोद मां नरक ना जीवो करता पण
ने गुणी वेदना निगोद ना जीवो भोगवे छे ? केटलाक
ो निगोद मां थी निकली व्यवहार राशि मा आवे छे
' पाछा निगोद मा जाय छे, तेनी व्यवस्था शुं ? अर्थात्
ा प्रकारे ? अने क्या थी प्रगट थाय छे ? आ बधानो
ुसार ग्रंथकार श्री तेमने आपतां कहे छे के हे बुद्धिमान् !
ी सुन्दर विचार वाला होवा थी समज पूर्वक तेनो
ुसार मानजो.

ाहन्यू —

गोदजीवेषु सदैव दुःखं, यदस्ति तत्तादृगजातिभावात् ।
ावाविधर्मे स्वजनिप्रलम्भा-न्नहास्तिदो दर्शनघातघातात् ।५।

ावार्थ.- तेवा प्रकार नी जाति ना स्वभाव थी. तेवा
ार ना क्षेत्र मां उत्पन्न थवाथी अने दुःख दायक ...

उत्तर काल मा जेमने मलवानुं छे एवी भवितव्यता
निगोद ना जीवो दुःख पामे छे

विवेचन - निगोद ना जीवो निगोद मा त्रण प्र
कारण थी दुःख पामे छे प्रथम कारण तो ए छे के
ना जीवो नो तेवा प्रकार नो स्वभावज छे. वीजुं
छे के ते क्षेत्र मा उत्पन्न थयेला जीवो दुःख पामेज
त्रीजुं कारण ए छे के तेओनी भवितव्यताज एवा
नी छे के उत्तर काल मा तेमने दुःख मलवानुं छे
स्वभाव, क्षेत्र अने भवितव्यता ना कारणेज निग
जीवो त्या दुःख पामे छे

मूलम् -

यथैव लोके लवणोदवारि, क्षारं सदा दुःसहक
अनन्तकालेऽपि भवेन्न पेयं, यन्नैव वर्णान्तरमाश्रयेत्

गाथार्थ - जेम संसार मां लवण समुद्र नुं पाणी
कर्म ना योगे खारु थाय छे. ते अनन्त काले पण
योग्य न थाय अने वर्णान्तर पण न थाय

विवेचन - दरेक वस्तु नो स्वभाव अलग-अलग
एटले स्वभाव वाचन मा प्रश्नज न थाय माटे
वाचन नुं दृष्टांत ग्रंथकार श्री आपे छे के जेम मस

गाथार्थ- जे प्रशस्त मंत्र संबंधी वर्णो मांत्रिक ना हृदय मा रहेला होय छे ते श्रेष्ठ वर्णो कह्या छे श्रेष्ठ मंत्र संबंधी वर्णो उच्चाटन दोष मुक्त थाय छे

विवेचन -तेज अक्षरो मांत्रिक ना हृदय मा रहेला जो सारा मंत्र संबंधी होय तो श्रेष्ठ कह्या छे कारण के सारा मंत्र संबंधी अक्षरो उच्चाटन दोष थी मुक्त होय छे अर्थात् अक्षरो तेना तेज होवा छता सारा मंत्र संबंधी वर्णो शुभ बने छे अने उच्चाटन मंत्र संबंधी अक्षरो अशुभ बने छे

मूलम् —

क्षेत्र निगोदस्य यथा तथेदं, दुर्मान्त्रिकस्याशुभ वर्णभृद् हृद् ।
दुर्मन्त्रवर्णाभनिगोददेहिनः, सन्मन्त्रवर्ण व्यवहारिजन्मिनः १२

गाथार्थ -दुष्ट मांत्रिक ना अशुभ वर्ण थी पूर्ण हृदय जेवुं निगोद नुं क्षेत्र, उच्चाटन मंत्र ना अक्षरो जेवा निगोद ना जीवो अने सारा मंत्र ना अक्षरो जेवा व्यवहार राशि ना जीवो जाणवा.

विवेचन -दृष्टांत द्वारा वस्तु ने घटाववा थी बराबर समझाय छे **माटे** हवे दृष्टांत बतावे छे के अक्षरो बधा सरखा होवा **छतां दुष्ट** मांत्रिक ना हृदय रूप क्षेत्रना प्रभावे ते अक्षरो **खराब** तरीके ओलखाय छे. तेम जीवो बधा

गरमा होवा छना निगोद जेवा क्षेत्र ना प्रभावे निगोद ना जीवो तरीके गणाय छे अने सारा मान्त्रिक ना हृदय रूप क्षेत्र ना प्रभावे ते अक्षरो सारा मन्त्र तरीके गणाय छे, तेम व्यवहार राशि रूप क्षेत्र ना प्रभावे व्यवहार राशि ना जीवो गणाय छे अने ते सारा गणाय छे.

मूलम् .

दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकतेयमात्मना, संयोजनीया समभावभाविना।
एवंच नूदमागुरवश्रपण्डितैर्दृश्यास्तुदृष्टांतगणाःस्वबुद्धितः १३

भावार्थ— दृष्टांत अने दार्ष्टान्तिक नी योजना समभावी आत्मा ए पोतानी मेले घटाववी ए प्रमाणे नाना मोटा अनेक दृष्टांतो पंडितोए पोतानी मेले बुद्धि थी विचारवा

विवेचन :-ए प्रमाणे शांत चित्त वाला आत्माए पोतानी मेले दृष्टांत अने घटाववा योग्य वस्तु ने दार्ष्टान्तिक नी योजना करवी. फक्त आटलोज दृष्टांतो छे एम नथी परन्तु बीजा नाना मोटा अनेक दृष्टांतो आ वाचन पर छे तेने बुद्धि पुरुषोए पोतानी मेले विचारवा.

निगोद ना जीवो नी [illegible]

मूलम् —

आः! निगोदासु[illegible]:ममन्तं, संख्या[illegible] लोकं [illegible] [illegible]
[illegible] नावान्निहृदाःपदपदे, घनीभवन्तोऽपि[illegible] ।१४।

भावार्थ - हे सद्गुरु ! जो निगोद ना जीवो लोक
मां भरेला होय तो कया कारण थी दृष्टि
मां आवता नथी ? अने परस्पर भीडाई ने रहेला होवा
केम बाधा पामता नथी ?

विवेचन - जगत मां जे वस्तुओ रहेली छे ते वस्
आपणी दृष्टि मां आवे छे तो जैन सिद्धान्त मुजब नि
ना जीवो चौद राज लोक मां ठांसी-ठांसी ने भरेला
तो ते ओ आपणा दृष्टि-पथ मां केम आवता नथी ?
परस्पर भीडाई ने रहेला होवा छता तेओ बाधा
न पामे ?

मूलम् -

सत्यं निगोदा अतिसूक्ष्मनाम - कर्मोदयात्सूक्ष्मतराभवन्ति
एकां तनुं तेऽधिगताअनन्ता-स्तथाऽप्यदृश्यानतुचर्मदृग्भि।

भावार्थ -तमारुं केहवुं सत्य छे परन्तु निगोद ना जी
अति सूक्ष्म नाम कर्म ना उदय थी अति सूक्ष्म होय छे
शरीर मां अनता रहेला छे अने चर्म चक्षुथी अदृश्य छे.

विवेचन .-जैन सिद्धांत मा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणी
वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र अने अंतराय
कर्म नी मूल प्रवृत्ति आठ छे, तथा उत्तर प्रकृति १५८ छे

प्रमाणे.—ज्ञानावरणीय कर्म नी ५, दर्शना वरणीय
र्म नी ६, वेदनीय कर्म नी २, मोहनीय कर्म नी २८, आयुष्य
र्म नी ४, नाम कर्म नी १०३, गोत्र कर्म नी २ अने अन्त-
ाय कर्म नी ५ जाणवी नाम कर्म नी १०३ प्रकृति मा सूक्ष्म
ाम कर्म नामनी १ प्रकृति छे ए प्रकृति ना उदये जीवो
सूक्ष्म शरीर ने धारण करनारा होवा थी सूक्ष्म होय छे
ए जीवो एक शरीर मां अनंता रहेला छे आवा अनंता
जीवो ए शरीर मा रहेला होवा छता सूक्ष्म नाम कर्म
ना योगे एटला सूक्ष्म होवा थी चर्म चक्षुथी देखाई शकता
नथी. परन्तु फक्त केवली भगवंतोज देखी शके छे

सूत्रम् —

यथोग्रगन्धामृतदेहिरामठा-दिकोत्थगन्धोपहृता दया मिथो ।
श्लिष्टोऽभितिष्ठेन्नतदन्यवस्तुनः, सङ्कीर्णतानापि नभोभुवस्तथा॥१६

भावार्थ – जेम वज्र, कलेवर अने हिंग आदि थी उत्पन्न
थयेलो गंध परस्पर अनेक प्रकारे भेगो थई छे परन्तु
अन्य वस्तु थी संकीर्णता थती नथी, अने आकाश भूमि नी
पण संकीर्णता थती नथी.

विवेचनः-जेम एक स्थानमा वज्र, कलेवर अने हिंग
आदि अनेक गंध वाली वस्तुओ भेगी होय अने ते हिंगादि
गंध वाली वस्तुओ भेगी होय छे. ते वार गमे वस्तुओ

नो गध परस्पर अनेक प्रकारे मलेलो होवा छता वी
वस्तुओ नी साथे सकडामण थती नथी, तेमज जग्यानी प
सकडामण थती नथी

मूलम् —

एवं निगोदासुमतांपरस्परा-श्लेषेऽस्ति तेषामतिबाधनं सदा
तथाऽपिचाऽन्यस्यनवस्तुनोऽस्ति,संकीर्णतानैवविहायसश्च॥

भावार्थ – ए प्रमाणे निगोद ना जीवो परस्पर मलेल हं
थी अति पीडा थाय छे परन्तु वीजा पदार्थो ने पीडा न थ
अने जग्या नी संकड़ामण पण न थाय.

विवेचन –निगोद ना जीवो एक शरीर मा अनंत रहे
होवा थी तेओ परस्पर जरूर अति पीड़ा पामे छे पर
वीजी वस्तुओ ने पीडा थती नथी अने आकाश नी सक
मण पण थती नथी.

मूलम् —

यथाऽत्रगन्धादिकवस्तुसत्ता,ज्ञेया नसा नैव दृशाभिदृश्य
एवंनिगोदात्मभृतोऽपिजैन-वाग्याद्विबोध्यामनसानवीक्ष्याः

भावार्थ जेम अही गधादिक वस्तुओ नाक थी जाण
योग्य छे परन्तु आंख थी नही तेम निगोदादि जीवो जि
वाणी थी मन वड़े जाणवा योग्य छे परन्तु आख थी नहीं

विवेचन:-पांचे इन्द्रियो ना विषयो अने मन ना विषयो अलग अलग होय छे जेमके स्पर्शेन्द्रिय नो विषय स्पर्श करवा योग्य वस्तु ने जाणवानो, रसेन्द्रिय नो विषय स्वाद लेवा योग्य वस्तु ने जाणवानो, घ्राणेन्द्रिय नो विषय सुंघवा योग्य वस्तु ने जाणवानो, चक्षुरिन्द्रिय नो विषय जोवा योग्य वस्तु ने जाणवानो, श्रोत्रेन्द्रिय नो विषय सांभलवा योग्य वस्तु ने जाणवानो अने मन नो विषय विचारवा योग्य वस्तु ने जाणवानो होय छे तेवीज रीते त्रैलोक्य पदार्थो ने केवली भगवंतो केवल ज्ञान वडे जाणी शके छे अने केवल दर्शन वडे जोई शके छे तेज प्रमाणे केवल [illegible] वस्तुओ नाक थी जाणी शकाय छे परन्तु आंख थी नहीं; तेम निगोद ना जीवो जिनवाणी थी-मन थी जाणवा योग्य छे, आंख थी नहीं.

मूलम्:

ते केवलज्ञानवता हि दृश्याः, यथा हि सर्वत्र रजोऽतिसूक्ष्मम् ।
वहीयमानन्दृश्यतेऽक्षणा,नन्नापि[illegible]िनयनेऽदिवीक्ष्यम् ।१६।
परं यदा[illegible]नरश्मि-समुद्भवतो रजरेणुरूपम् ।
प्रकाशयोगादभिवीक्ष्यतेऽस्य,दृश्यास्तथा[illegible]निगोदाः ।२०।

भावार्थ:-[illegible]

[illegible]

नथी अने घणो जत्थो भेगो थवा छता जणातो नथी।
परन्तु जेम आच्छित प्रदेश मा रहेल छिद्र ना सूर्य ना
किरणो थी उत्पन्न थयेल किरण ना प्रतिबिम्बो मा उडतो
रज जे त्रस रेणु गणाय छे ते प्रकाश ना सयोग थी देखाय
छे, तेम निगोद ना जीवो दिव्य दृष्टि थी देखाय छे.

विवेचन—दरेक पदार्थ चर्म चक्षु थी जोई शकाय छे ते
नथी. जेमके अति सूक्ष्म रज सर्व स्थले उडे छे परन्तु ते र
आख थी जोई शकाती नथी. वली एज रज नो समूह भे
थवा छता पण जोई शकातो नथी तेम निगोद ना जी
चर्म चक्षु वडे जोई शकाता नथी परन्तु कोई मकान ना
छापरा मा जे छिद्र होय छे ते छिद्र मांथी सूर्य ना किरणो
थी उत्पन्न थयेल जे किरण ना प्रतिबिम्बो मा जे धूल
उडती देखाय छे ते त्रस रेणु कहेवाय छे. ते त्रस रेणु सूर्य
ना प्रकाश ना सयोग थी देखी शकाय छे. तेम निगोद ना
जीवो चर्म चक्षु थी नथी देखाता परन्तु दिव्य दृष्टि थी
एटले केवल-ज्ञान थी केवली भगवंतो जोई अने जाणी
शके छे

निगोद ना जीवो नु आहार करवा छता पण भारे पणु नही

मूलम्

स्वामिन्निगोदाद्यसुमानन्यदनसन्,नगौरवंकेनलभेदगुणेन च।
यथाहिसूतोविविधांश्च धातू-नश्नन् भजत्येव गरिष्ठतां नो ।२

...ं यथा चम्पकपुष्पवासितं, यथाचकृष्णागुरुधूपधूपितम् ।
नीलभारान्नुयातिगौरवं, दृष्टान्तएकःपुनरत्रशान्तगः।२२।
...द्वीयथातोलकमानपारदः, स्विन्नः स हेम्नः शततोलकेन ।
...धंतेऽसौ निजतोलकाद्भरा-देवंनजीवेऽपिभरःकृताहृतौ२३

...भावार्थ.- हे स्वामी, निगोद ना जीवो आहार करवा छतां
...ा गुणनो भारे थता नथी तेनो उत्तर छे के जेम विविध
...ार नी धातुओ नुं भक्षण करतो छतो पारो भारे थतो
...ी चंपक ना पुष्प थी वासित अने कृष्णा गुरु धूप
धूपित वस्त्र स्वाभाविक भार थी भारे थतुं नथी, तेमज
तोला सोना थी पाक थयेल तोला प्रमाण पारो भारे
...ो नथी तेम आहार करवा छतां निगोद ना जीवो भारे
...ो नथी.

...विवरण - दरेक वस्तु मां बीजी वस्तु भळवाथी तेनुं वजन
...ी भार छे तो हे स्वामिन् ! निगोद आदि ना जीवो
...हार करवा छतां कया गुण थी भारे थता नथी ? तेना
...त्तर मां जणाववानुं के जेम घणा प्रकारनी धातुओनुं
...क्षण करवा छतां पारा नुं मूल वजन [illegible]
...ी चंपक ना पुष्प थी वासित अने [illegible]
[illegible] वस्त्र नुं [illegible]
...े. [illegible] सोना थी [illegible]

ए जीवो दु खी होय छे ? तेना प्रत्युत्तर मां जणाववानु
आ बावत सवधी केवली भगवत विना कोई विद्वान्
जाणवा समर्थ नथी तो पण जाणवा माटे आ कर्म
प्रकार अही जणावाय छे. जोके निगोद ना जीवो मोटा
जीव हिसादि करवाने समर्थ नथी, परन्तु ते ओने अ
शरीर न होवाना कारणे एक शरीर मा अनता जीवो प्र
ने वीधी ने रहेला होवा थी परस्पर द्वेष भाव रह्या
छे अने द्वेप भावना कारणे अत्यन्त कर्म वंध पण थया
छे. वली जग्यानी पण अत्यन्त सकडामण थवा थी पर
निकाचित वैर भाव पण वधाय छे ए रीते प्रत्येक जी
साथे अत्यन्त उग्र वैर भाव वंधावाथी निगोद ना जी
भयकर कर्म वांधे छे अने ए भयंकर कर्म ना उदये ए ज
अत्यन्त दु खी होय छे

मूलम् -

एकस्य जन्तोर्यदपीह वैर-मेकेन जीवेन तदप्यजेयम् ।
एकस्य जन्तोर्यदनन्तजीवं-वैरं भवेच्चेत्तदनन्तकालः ॥
कथं न भोग्यं पुनरेधमानं, तदेव तेनैव ततोऽप्यनन्तम् ।
एव निगोदासुमतां न वैर,सान्तं न दुष्कर्मचनाऽपि कालः॥३०॥

भावार्थ - अहिया एक जीव ने एक जीव नी साथे वैर
होय तो पण अजेय होय छे तो एक जीव ने अनत जीवो

मूलम् -

लोके यथा गुप्तिगृहाश्रितानामन्योन्यसंमर्दनिपीडितानाम्।
प्रत्येकमाबद्धनिकामवैर-भाजां नराणां किल कर्मबन्धः॥
भावस्त्वमीषामलमीदृशः स्या-द्यदेषु कश्चिन्म्रियतेऽपयाति
तदाहमासीय सुखेन भक्ष्य-मायाति किञ्चिद्घनमंशतश्च॥
इत्यादिकं वैरमतुच्छमीदृक्, प्रवर्धमानं प्रतिबन्दि यत्स्या
तस्मादमीषामतिदुष्कृतंस्या-देवंनिगोदाङ्गभृतामपीक्ष्यम्॥

गाथार्थ - जेम ससार मा अन्योन्य समर्दन थी
पामता अने प्रत्येक नी साथे बाधेल वेर भाव वाला कैं
ने. खरेखर कर्म, बंध होय छे एओनो एवो भाव होय
एमानो कोई मनुष्य मरी जाय अथवा नासी जाय तं
सुखे रहू अने खावानु पण अधिक मले, ए प्रमाणे अ
आवा प्रकार नु वृद्धि पामतु वैर भाव प्रत्येक बदी
ते ओने होय छे तेथी कैदिओ ने दुष्कर्म बंध थाय छे
निगोद ना जीवो ने पण जाणी लेवु

विवेचन:-निगोद ना जीवो ने वैर भाव थी केवी री
बंध थाय. छे ते समझाववा. माटे कैदीओनु मुन्दर ह
बतावता ग्रंथकार श्री फरमावे छे के जेम ससार मा
कैदखाना मा दश समाई शके त्या पचास भरेला हो
दश ने जोइये तेटलो खोराक पचास जण ने अपातो
त्यारे तेओ परस्पर सकड़ामण ना कारणे पीड़ा

भावार्थ – ते प्रमाणे अत्यन्त सांकडा पांजरा मां रहेल चकला विगेरे पक्षिओ वैर युक्त होय छे अथवा जाल ना बंधन मा रहेला माछलाओ परस्पर पीडा थी वैर युक्त थइ अत्यन्त दुःखी होय छे

विवेचन –तेवीज रीते बीजा दृष्टांतो पण बतावाय छे जेमके अत्यन्त सांकडा पाजरा मा रहेल चकलादि पक्षिओ अथवा जाल विगेरे मा रहेल एक प्रकार ना माछला विगेरे परस्पर पीडा पामवाथी वैर भाव वाधता अत्यन्त दुःखी थाय छे. तेम निगोद ना जीवो पण परस्पर पीडा पामवाथी वैर भाव वाधी अत्यन्त दुःखी थाय छे

मूलम्

तथा पुनस्तस्करके निहन्य-माने च सत्यामनले विशन्त्याम् ।
कौतूहलार्थंपरिपश्यतांनृणां,द्वेषंविनोत्तिष्ठतिकर्मसञ्चयः ।।३५
बुधास्तमाहुःकिलसामुदायिकं, भोगोयदीयो नियतोऽप्यनेकशः
एवंहिचेत्कौतुकतः कृतानां, स्वकर्मणामत्र सुदुर्विपाकः ।।३६
अन्योऽन्यबाधोत्थविरोधजन्मना-मनन्तजीवैःकृतकर्मणातदा ।
भोगोऽप्यनन्तेऽपगते हिकाले,निगोदजीवैर्नहि जातुपुर्यते ।।३७

भावार्थ.- तेज प्रमाणे चोर हणाये छते अने पतिव्रता स्त्री अग्नि मां प्रवेश करते समेये कुतुहल थी जोता छता मनुष्यो ने द्वेष विना पण कर्मनो बंध थाय छे. विद्वान् पुरुषो

निगोद ना जीवो भी कल्पान न पूगाग एन् पण वधे आश्चर्य नही ।

निगोद ना जीवो ने मन विना पण कर्म बधन –

मूलम् :–

पूज्याः! निगोदासुमतांमनोऽस्तिनो,केनेदृशंतन्दुलमत्स्यवद्भृ
प्रजायते कर्म यतस्त्वनन्त-कालप्रमाणं परिपाकएवम् ॥

गाथार्थ :–हे पूज्यो, निगोद ना जीवो ने मन होतु छता तदुलिया मच्छ नी जेम कया कारण थी एवा प्रका कर्म बधाय छे जेथी तेना फल नो अनुभव अनतकाल प रहे छे ?

विवेचन :–शास्त्र मा एम लखेलु छे के 'मन एव ष्याणा कारण बध मोक्षयो' एटले मनुष्यो ने मन बध अने मोक्षनु कारण छे अर्थात् शुद्ध मन द्वारा कर्म मोक्ष थाय अने अशुद्ध मन द्वारा कर्म नो बध थाय जेमके प्रसन्नचन्द्र राजर्षिए अशुभ मन द्वारा सातमी न नां दलिया एकठा कर्या अने शुभ मन द्वाराज केवल– प्राप्त कर्यु. तो ए प्रश्न थाय छे के निगोद ना जीवो ने नथी होतु छता तदुलिया मच्छनी जेम कया कारण एवा प्रकार नु कर्म बंधाय छे के जेना फल नो अनु अनत काल पर्यंत करवो पडे ?

मूलम् —

सञ्ज्ञाश्चतस्त्रोऽप्यथवेत्तु मिथ्या,योगःकषायोऽविरतिश्च
इमानिसर्वाण्यपिकर्मबन्ध-बीजान्यनन्तैस्त्वधिकोविरोधः

गाथार्थ - निगोद ना जीवो मा मिथ्यात्व, योग,
अने अविरति ए सज्ञाओ पण होय छे ए चार कर्म
ना कारणो छे तेमा अनन्त जीवो साथे नो द्वेष
पछी शु कहेवुं ?

विवेचन.—जोके आहार, भय, मैथुन अने परिग्रह
सज्ञाओ ज वधारे प्रसिद्धि मा छे, छता अहिया ग्रथ
ए मिथ्यात्व, कषाय, अविरति अने योग ने पण सज्ञ
गणेल छे. ए चारे कर्म बधना हेतु तरीके गणेल छे,
आत्मा आ चार हेतु माथी कोई पण एक, बे, त्रण
चारे हेतु थी कर्म बधन करे छे जिनेश्वर देवोए
जीवादि नवतत्त्वो प्रत्ये अरुचि तेनुं नाम मिथ्यात्व, प
आदि मोटा व्रतो अने स्थूल प्राणातिपात विरमण अ
अनुव्रतो त्रण गुणव्रतो अने चार शिक्षाव्रतो विगेरे
आदि व्रतो ग्रहण न करवा ते अविरति. क्रोध, मा
अने लोभ ए चार कषाय; अने मन, वचन, काया
ते योग ए चार कर्म बधन नां मूल कारणो छे.
ना पांच प्रकार, अविरति ना बार प्रकार, कषाय

वादित्रनाद छदमर्मरादि, सर्वाणि मान्तीह तथाऽवकाशः ।
एवं षद्रव्यं निचितेऽपिलोके-वकाशएषोऽपिचताहशोऽस्ति ।८।

भावार्थ-जेम ससार मा वन खड मा धूल, सूर्य ना किरणो नो प्रतिबिम्बो, सूर्य नो ताप, अग्नि नो ताप, पुष्पो नो गध, पवन, पशु-पक्षी नो शब्द, वाजित्र नो नाद, पादडो नो अवाज विगेरे सर्व वस्तुओ समाई जाय छे तेम द्रव्योथी प्राप्त एवा लोक मा आनो पण तेवीज रीते समावेश थई जाये छे.

विवेचन:- अथवा आ ससार मा जेम वन खड मा धूल, सूर्य ना किरणो नो प्रतिबिम्बो नी उडती रज जे त्रण रेणु कहेवाय छे ते, सूर्य नो तडको, अग्नि नो ताप, पुष्पादि नो गध, पवन, पशु-पक्षिओ ना शब्दो, अनेक प्रकार ना वाजिन्त्रो ना अवाजो, पादड़ा नो अवाज विगेरे सर्व वस्तुओ समाय छे, तेम निगोदो थी सपूर्ण भरायेल आ विश्व मा कर्मनी वर्गणाओ, पुद्गल नी राशिओ, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय विगेरे द्रव्यो, वीजा जीवो विगेरे अनेक वस्तुओ पण तेमा समाई शके छे आवी रीते अनेक दृष्टांतो द्वारा वस्तु सिद्ध करवामा आवी छे

कर्ता, यमराज अथवा भगवान कर्म ना समूह नो प्रेरक छे माटे जगत सुख-दुःख भोगवे छे

विवेचन कर्म ना प्रेरक तरीके विधाता आदि ने माननार कहे छे के जीवने सुख दुःख भोगववानी इच्छा होती नथी छता अशुभ कर्म ना योगे जीव ने दुःख भोगववुं पडे छे माटे कर्म नो प्रेरक होवो जोइए अने तेथी प्रेरक तरीके विधाता, नव ग्रहो, परमेश्वर, जगत कर्ता ब्रह्मा, यमराज अथवा भगवान एमानो कोई कर्मनो प्रेरक होवो जोइये

मूलम् —

नैवं यदेतानि भवन्ति कर्म-नामानि शास्त्रे पठितानि तद्यथा।
भाग्यं स्वभावो भगवानदृष्टं, कालो यमो दैवतदैवदिष्टम् ।३
अहो ! विधानंपरमेश्वरःक्रिया, पुराकृतंकर्मविद्याविधिश्च।
लोकःकृतान्तोनियतिश्चकर्ता,प्राक्कीर्णप्राचीनविधातृलेखाः ।४
इत्यादिनामानिपुराकृतस्य, शास्त्रेप्रणीतानितु कर्मतत्त्वगैः।
तदात्मनोनस्वकर्मणोविना, सुखस्यदुःखस्यचकारकोपरः ।५।

भावार्थ तमारु आ कथन बराबर नथी जे कारण थी शास्त्र मा कर्म ना नामो कहेला छे, ते आ प्रमाणे भाग्य, स्वभाव, भगवान्, अदृष्ट, काल, यमदैवत, देव, दिष्ट, विधान, परमेश्वर, क्रिया, पुराकृत, विधा, विधि, लोक, कृतान्त, नियति, कर्ता, पाककीर्ण लेख, विधाता लेख

मूलम् -

एवंतु कालोगदितोऽस्ति कर्मणो, वातादिवस्तुनितयस्यनाऽपि
परंयदाकश्चनशान्त्युपाय:,उग्रोभवेत्तर्हि पियातिचान्तरात्।
किञ्चित्कदाचित्स्वदनयदात्मन:,वातादिकृत्तत्क्षणतोऽपिजा
कर्माणिकानीह तथात्मनोऽस्यो-प्राग्गिक्षणात्तत्फलदान्यनीर

भावार्थ - वातादि त्रण वस्तु नी जेम कर्म नो पण का
कहेलो छे परन्तु जो कोई शान्ति नो उपाय उग्र होय तो
पहेला पण शान्त थाय छे क्वचित् पोते करेल भोजन
तत्काल पवनादि ने उत्पन्न करे छे तेम केटलाक कर्मो जीव
ने जल्दी फल देनार वने छे

विवेचन:-वात, पित्त अने कफ नी उत्पत्ति, स्थिति अने
शान्ति माटे कालादि ज कारण भूत छे कोई वखत वायु,
पित्त अने कफ नो उग्र उपाय करवाथी तरतज वायु आदि
शान्त थई जाय छे तेम कोई वखत कर्मो पण तेवा प्रकार ना
अध्यवसाय ना योगे उदीरणा आदि द्वारा कर्म ना उदयकाल
पहेला पण शान्त थई जाय छे, अथवा नाश पण पामी जाय
छे. कोई वखत भोजन करनारने वायु आदि नो तत्काल
प्रकोप थई जाय छे तेम उग्र कर्मो जीव ने तत्काल फल
दाता पण वने छे

मूलम्-

यदा पुनः स्त्री पुरुषं भजन्ती, यदृच्छया स्वार्थपरा विनेरकम्।
विपाककालेपरिपूर्णतांगते,प्रसूयमानासुखिताथदुःखिता ।।२३

कर्माण्यपीत्थं पुनरेष आत्मा, गृह्णन् न जानाति शुभाशुभानि
यदातुतेषांपरिपाककाल-स्तदासुखीदुःखयुतोऽथवास्वयम् ।

भावार्थ —अथवा कोई रोगी औषध खातो छतो
हितकारी अने आ अहितकारी छे, एम जाणतो नथी. छ
तेना विपाक समये सुख अने दुःख ने मेलवे छे-तेवीज क
ने ग्रहण करतो छतो शुभाशुभ ने जाणतो नथी, छता विपा
समये सुखी तथा दुःखी थाय छे

विवेचन —कर्मो नुं फल सारु मलशे के खराब, ते अ
जीव जाणतो न होवा छता पण कर्मो पोतानुं फल आप
वगर रहेता नथी ते माटे दृष्टांत द्वारा बतावाय छे जेम
कोई रोगी औषध खातो छतो ते हितकारी छे के अहित
कारी छे, एम जाणतो न होवा छता पण तेना फलना अ
सरे ते सुख अने दुःख ने प्राप्त करे छे. तेम आ जीव कर्म
ने ग्रहण करवाना समये कर्मोना शुभ अने अशुभ फल ने
जाणतो नथी तो पण कोई नी प्रेरणा विना कर्मो तेना
विपाक समये जीव ने सुखी अने दुःखी बनाव्या वगर
रहेता नथी

मूलम् —

विष तथा कृत्रिमपोटशंम्या-तत्कालनाशाय तथकमाणान् ।
दृष्यावरणस्य कर्यकाल-द्विपर्ययंप्रयतोऽपिनाशकृत् ॥२७॥

एवंत प्रकार ना मनुष्यो राजा राणे अनेक प्रकार नी स्थिति वाले कर्मो पाडी नी पण प्रेरणा विना पोता पोताना उदय काले जीव ने पोतानी मेले तेवा प्रकार नुं शुभाशुभ फल आपे छे

मूलम् -

सिद्धोरसोवेंयथवेद्यसिद्धः, सर्वांगृहीतोऽप्यमितेनकेनचित् ।
समागतेतत्परिणामकाले, दुःखमुखंवाभजतेतदाशकः ॥२९॥
तथात्मगादुःपिटिकाचवालको, दुर्वातशीताङ्गकसन्निपाताः ।
स्वयंत्वमीकालवलंसमेत्य,तद्वन्तमात्मानमतिव्यथन्ते ॥३०॥
अमी तथैते ऋतवोऽपि सर्वे,स्वं स्वं च कालं समवाप्य सद्यः ।
मनुष्यलोकाङ्गभृतोनयन्ति,सुखंतथादुःखमिमान्स्वभावतः ॥३१॥
एवंहिकर्माणिनिजात्मगानि,स्वकंस्वकंकालमवाप्यसत्वरम् ।
विनापरप्रेरणमेतमात्मकं,नयन्तिदुःखंसुखमप्यथोस्वयम् ॥३२॥

गाथार्थ-कोई रोगीए सिद्ध के असिद्ध एवो सर्व प्रकार नो ग्रहण करेल पारो परिणाम ना काले तेना भक्षक ने दुःख अथवा सुख आपनार थाय छे. शरीर मा रहेल खराब फोडाओ, वाला नामनो रोग, दुष्टवात, शिताङ्गक, सन्निपात विगेरे आ रोगो पोतानी मेले काल बल ने पामीने ते रोग वाला ने पीडा आपे छे तथा आ सर्व ऋतुओ पण पोत पोताना काले स्वभाव थी मनुष्य लोक मां रहेल आ मनुष्यो ने सुख-दुख आपे छे तेम पोताना आत्मा मा रहेला

भावार्थ — [illegible] रोग, [illegible] नो रोग, [illegible], [illegible] वायु, [illegible] रोग विगेरे रोगो [illegible] ना जाण-कार वैद्यो पोताना ज्ञान थी ते रोगो नो परिपाक हजार दिवस नो गणाय छे. ते प्रकारे [illegible] कोई नी प्रेरणा विना, पोताना [illegible] काल ने पामीने कर्मो नो परिपाक पण [illegible] सिद्धान्त ना जाणकार पंडितोए कहेल छे

विवेचन.--दरेक वस्तु नो परिपाक कालेज थाय छे, ए फल आपे छे. ते बतावता जणावे छे के जेम क्षय रोग, अ नो मोतिओ, उग्र एवो पक्षाघात, अर्द्धांग वायु, अंग ठडु जाय तेवो रोग विगेरे रोगोनो काल वैद्यक शास्त्र जाणकार एवा वैद्योए पोताना ज्ञान थी हजार दिवस बताव्यो छे तेम कोई नी पण प्रेरणा विना पोतानी मे कर्मो नो परिपाक पण थाय छे, एटले कर्मो फल आपे एम जैन सिद्धान्त ना जाणकार पडितो कहे छे

मूलम् -

तापोयथापित्तभवोदशाहं, सश्लेष्मिकोद्वादशरात्रमात्रम्
सवातिकस्तिष्ठतिसप्तरात्रं,त्रैदोषिकःपञ्चदशाहमानम् ।३
एवं ज्वराणां परिपाककालः, स्वकःस्वकोऽयंपृथगेष उक्तः
यथातथैषांकृतकर्मणामपि,पृथक्स्वकीयःस्थितिकालएष्यः ।३

भावार्थ —जेम पित्त नो ताव दश दिवस नो, श्लेष्म नो ताव बार दिवस नो, वायु सहित ताव सात दिवस नो अने

त्रण दोष नो ताव पदर दिवम नो होय छे ए प्रमाणे ताव नो परिपाक काल पोत पोतानो अलग-अलग कहेलो छे तेम आ करेल कर्मो नो काल पण अलग-अलग कह्यो छे

विवेचन—जेम एकज ताव अलग-अलग प्रकार नो होय छे तेथी तेनो काल पण अलग-अलग प्रकार ना होय छे तेम कर्मो नो काल पण अलग-अलग बताव्यो छे जेमके पित्त ना कारणे आवेल ताव दश दिवस, श्लेष्म नो ताव बार दिवस, वायु थी उत्पन्न थयेल ताव सात दिवस सुधी रहे छे अने वात, पित्त, कफ थी उत्पन्न थयेल ताव पदर दिवस सुधी रहे छे एम ताव नो परिपाक काल अलग-अलग होय छे तेम ज्ञानावरणीय आदि कर्मो नी स्थिति काल पण दरेक नो अलग-अलग होय छे.

मूलम् :-

यथायथावाचरितंपुरात्मना, फलंग्रहाणामिहभुज्यतेतथा ।
यावत्स्वसीमांसहजाद्दशान्त-दंशादियुक्तंपरिणोदकंविना ।३८
कर्माणि कर्मान्तरितानि चैवं, यथात्मनानेन ननु क्रियन्ते ।
स्वकालमेषांपरिपाकयुक्तं,भुङ्क्तेतथात्माफलमीरकंविना ।३९

गाथार्थ -जीवोए जे प्रमाणे पूर्वे शुभाशुभ करेलुं होय ते प्रमाणे सूर्यादि ग्रहो नुं फल कोई नी पण प्रेरणा विना स्वाभाविक पोतानी मर्यादा मुजब दशा अने अतर्दशा मा भोगवाय छे तेम जीव थी जे प्रमाणे कर्मो अने अतकर्मो करायेल होय ते मुजब कोई नी प्रेरणा विना तेनुं फल जीव परिपाक काले भोगवे छे

विवेचन.-कर्मो केटला प्रकार ना छे एम जिज्ञासा थवा थी पूछे छे के विद्वानो ए केटला प्रकार नुं कह्यु छे ? तेनो प्रत्युत्तर आपता जणावे छे के हे चतुर पुरुष ! तुं क्षण मात्र सभल; ते कर्म चतुर्भगी वडे चार प्रकार नुं वताव्युं छे (?) आ भव मा करेल कर्म नु फल आ भव माज मले छे, जेम के कोई सिद्ध पुरुष ने दान आपवाथी आ लोक मा लक्ष्मी आदि मने छे अथवा कोई साधु पुरुष ने दान आपवाथी मूलदेव नो जेम आभव मा पण राज्य आदि मले छे, अथवा कोई राजा ने भेटणुं विगेरे आपवाथी राजा नी प्रसन्नता प्राप्त थता आ भव मा पण अनेक प्रकार ना लाभो मले छे, ते आ लोक मा शुभ आचरेल तेनुं आभव माज शुभ फल मले छे. अने आ भव मां अशुभ आचरेल ते आ भव मा अशुभ आचरेल ते आ भव मा अशुभ फल मले छे जेम के आ भव मा चोरी, जारी विगेरे करवाथी राजा तरफ थी तेने फासी आदि थाय छे माटे आ भव मा अशुभ आचरेल तेनु आ भव मा अशुभ फल मले छे आ प्रथम भग शुभा-शुभ नो जाणवो

मूलम्—

भेदो द्वितीयोऽत्रकृतं परत्र, कर्मोदयेत्र यथा प्रशस्यम् ।
तपोव्रताद्याचरितं सुरत्वा—दिदं तदन्यन्नरकादिदायि ।४२।

विवेचन.-वली बीजो भेद बीजा दृष्टांतो द्वारा वधारे पुष्ट करता जणावे छे के जेम कोई सती स्त्री सीता नी जेम पतिव्रता धर्म नुं पालन करे छे अने परलोक मा देवलोके जाय छे अथवा कोई शूरवीर राजा प्रजा ना हित माटे शूरवीरता बतावे अने परलोक मा अनेक प्रकार ना भोगो प्राप्त करे छे ते आ लोक मा करेलुं अने परलोक मा फल मले छे ते बीजो भेद जाणवो-हवे त्रीजो भेद आ प्रमाणे परलोक मा आचरेल होय तेने आ भव मा फल मले छे ते त्रीजो भेद जाणवो

मूलम् -

एकत्र पुत्रे तु तथा प्रसूते, दारिद्रयमात्रादिवियोगयोगः ।
ग्रहाअप्यथजन्मकुण्डली-मध्येनशस्ताःकृतकर्मयोगात् ।४४
अन्यत्र पुत्रे तु तथा प्रजाते, सम्पत्तिमातादिसुखं प्रभुत्वम् ।
अपिग्रहाअस्यतुजन्मपत्रिका-मध्येविशिष्टाःपतिताःसुकर्मतः ।

भावार्थ.- एक पुत्र जन्मे छते तेने दारिद्रय अने मातादि वियोग थाय छे, अने तेनी जन्म कुंडली मा पूर्वे करेल कर्मोना योगे तेना ग्रहो पण सारा होता नथी अने बीजो पुत्र जन्मे छते तेने सपत्ति अने मातादि नुं सुख अने प्रभुत्व वगेरे तेने मले छे-तेनी जन्म पत्रिका मा पूर्व ना शुभ कर्म ना योगे ग्रहो पण सारा पड़ेला होय छे

विवेचन - हवे परलोक मा आचरेल शुभाशुभ कर्मो
फल आ भव मा मले छे ते नाम नो त्रीजो भेद बतावे छे
जेमके कोइक जीवे पूर्व जन्म मा कोई ने खावा-पीवा न
अन्तराय कर्यो होय अथवा नानां बच्चा ने दूध नो अन्त-
राय कर्यो होय अथवा माता दिनो वियोग कराव्यो होय
एवा प्रकार ना अशुभ कर्मो नो बंध करवा थी ते आत्म
आ भवे पुत्र रूपे जन्मते छते तेज समये दारिद्रय अने मात
दिनो वियोग विगेरे अशुभ फल मले छे अने तेनी जन
पत्रिका मा सूर्यादि ग्रहो पण अशुभ कर्मो ना योगे वीच
स्थान मा पडेला होय छे. अने कोइक जीवे पूर्व जन्म मा
कोई ने दान विगेरे आप्युं होय अथवा बीजुं कइ पण शुभ
कार्य कर्यु होय ते जीव आ भव मा पुत्र रूपे जन्मते छते
संपत्ति, मातादि नो योग, शेठाई, सत्तादि मले छे अने तेनी
जन्म पत्रिका मा सूर्यादि ग्रहो पण उच्च स्थान मां पडेला
होय छे एम अशुभ अने शुभ रूप आ त्रीजो भेद जाणवो

मूलम् —

चतुर्थभेदस्तु परत्र कर्म, कृतं परत्रैव फलप्रदं भवेत् ।
यदत्र जन्मेविहितंतृतीय, भवेविधत्तेफलमात्मगामुकम् ।४६।

गाथार्थ.—परलोक मा करायेल तेनुं फल परलोक मा
मले ते नाम नो चौथो भेद जाणअथ व वो जे भव मा
करायेल होय तेना त्रीजा भवे आत्मा ने फल देनार थाय छे

वेचन -हवे परलोक मा करेलुं अने त्रीजा भव मा तेनुं
मले छे ते सवधी चौथो भेद वतावाय छे. जेमके कोई
ाए पूर्व जन्म मा शुभ अथवा अशुभ कर्म करेल होय
ुं तेनुं फल तेने आ भव मा न मलता आवता भव मा
ोक मा आत्मा ने फल मले छे ते आ चौथो भेद जाणवो

ग्रम् —

त्र जन्मे व्रतमुग्रमाश्रितं, प्रागेव तस्मात्प्रतिबद्धमायुः ।
पश्वादिभवोत्थमल्पं,तदाततोऽन्यत्रभवेद्भुवेऽस्यतत् ।४७

ायुषाभोज्यमहोमहत्फलं, द्रव्यादिसामग्रयतथोदयाच्च ।
त्रकेनाऽपिचवस्तुकिञ्चित्त्रातंप्रगेमेभवितेत्यवेत्य ।४८

दिकालादितथाविधौजसा–त्यर्थतुतद्वस्तु न तेन तत्र ।
भुवतंहिततोऽन्यदात—द्भोक्तव्यमेताद्दगिदतुकर्म ।४९

ार्थ जेणे आ जन्म ने आश्रित उग्र व्रत करेल होय
ेला मनुष्य, देव अथवा पशु आदि नुं अल्प आयुष्य
ुं होय तेने द्रव्यादि सामग्री ना तथा प्रकार ना उदय
ावा आयुष्य द्वारा भोगवी शकाय एवुं मोटुं फल त्यार
ना पर भव मा मले छे जेम ससार मा कोइए प्रात
मारे काम आवशे एम धारी द्रव्यादि ना तेवा प्रकार
ोजस थी तेणे वस्तु राखी लीधी होय अने न खाधी

छन्द् -

चतुर्भङ्गिकया स्वकर्म, भोग्यं भवेदाप्तवचः प्रमाणात् ।
स्वरूपंप्रतिवेदितुं नो, क्षमंविनाकेवलिनोयथार्थम् ।५०

थार्थ —ए रीतिए आप्त पुरुष ना वचन ना प्रमाण
थी चार प्रकार ना भेद वडे पोतानुं कर्म भोगववा योग्य
थाय छे केवली भगवंत विना यथार्थ रीते कर्म नुं स्वरूप
जणाववाने कोई बीजो समर्थ नथी.

विवेचन - कोई पण प्रकार नुं शुभाशुभ कर्म ऊपर बता-
वेल चार प्रकार ना भेद थी भोगववा योग्य थाय छे,
अर्थात् भोगवाय छे हमेशा आप्त पुरुषो ना वचन थीज
वस्तु प्रमाण भूत थाय छे. आप्त पुरुषो तरीके केवली
ानी भगवंतोज जैन शासन मा गणेल छे ते केवली
गवतो नुं वचन एटला माटे ज प्रमाण गणाय छे के
ओ वीतराग होवा थी असत्य बोलवानुं तेमने कोइज
ारण नथी, वली तेओ सर्वज्ञ होवाथी वस्तु स्वरूप ने
थार्थ रीते जाणी शके छे माटेज कह्युं छे के कर्म ना
ास्तविक स्वरूप ने यथार्थ रीते केवली भगवतो सिवाय
णाववा ने कोई समर्थ नथी

छन्दः

त्रिविधंकर्मकियद्विधंस्या---त्त्रिधेतितत्किंशृणुभण्यमानम् ।
तंचभोग्यंपरिभुज्यमानं, शुभाशुभंसर्वमिदंसदृक्षम् ।५१

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] भोगवानां [illegible] कर्म [illegible] प्रकार नुं होय छे? तेना
प्रत्युत्तर मां जणावे छे के ते कर्म त्रण प्रकार नुं छे
ते त्रण प्रकार क्या छे? तो जणावानुं के भुक्त, भोग्य
अने भोज्यमान पहेले जे कर्म बंधाया बाद उदय मा आवी
ने भोगवाई गयेलुं होय ते भुक्त कर्म कहेवाय छे जे कर्म
बंधाया बाद भविष्य मा उदय मा आवी भोगवाशे ते भोग्य
कर्म. अने जे कर्म बंधाया पछी वर्तमान काल मा उदय मा
आवी भोगवाय छे ते भोज्य मान कर्म कहेवाय छे.

कर्मनो भुक्त, भोक्ष्यमाण अने भुज्यमान अवस्था

मूलम्

किंवद्यथा वारिदबिन्दुवृन्दं, वसुन्धरायां पतित प्रशुष्कम् ।
तद्भुक्तवत्तत्रचभोग्यवत्किं, यावत्पतिष्यत्परिशोष्यमस्ति ।५
निपत्यमानं परिशुष्यमाणं यावद्यदेतत्परिभुज्यमानवत् ।
ग्राह्योगृहीतःपरिगृह्यमाणो, यथागुडोवाकिलकर्मतद्वत् ।५३

भावार्थ—जेम पृथ्वी ऊपर पडेला वरसाद ना बिन्दु ना
समूह नी जेम भोगवेलुं कर्म होय छे, पडवा योग्य भोग्य कर्म

होय छे, पडतुं भोगववानुं कर्म होय छे अथवा गोल नुं दृष्टात पण जाणवुं

विवेचन –जेम वरसाद ना पाणी ना टीपा नो समूह पृथ्वी ऊपर पडवाथी सूकाई गयेला होय छे, तेम जे कर्म उदय मा आव्या बाद भोगवाई गयेलुं होय छे ते भुक्त कर्म जाणवु. जे वरसाद ना पाणी ना टीपा नो समूह पृथ्वी ऊपर पडीने भविष्य मा सूकाशे एटले सूकावा योग्य पाणी ना टीपा ना समूह नी जेम जे कर्म भविष्य मा उदय मा आवशे त्यारे भोगवाशे ते भोग्य कर्म-वली जे वरसाद ना पाणी ना टीपा नो समूह पृथ्वी ऊपर पडे छे अने सूकाय छे, तेम जे कर्म वर्तमान काल मा उदय मा आवे छे ते भोगवाय छे ते भोज्यमान कर्म एटले भागवानुं कर्म जाणवुं अथवा बीजुं गोल नुं दृष्टात जाणवुं चवाएला गोल नी जेम भुक्त कर्म, चवावा योग्य गोल नी जेम भोग्य कर्म अने चवाता एव गोलनी जेम भोज्य कर्म जाणवुं

मूलम् —

संसारिजोवा व्रतिनोऽव्रता वा, तेषां तु कर्मत्रयमेतदस्ति ।
वसुन्धरायाघनबिन्दुवृन्दवत्,भुक्तंचभोग्यपरिभुज्यमानकम्।५४
कैवल्यभाजस्तुयकेमहान्त-स्तेषांतुकर्माणिशिलाग्रवृष्टिवत् ।
अल्पस्थितीन्येवतथापितद्दशा-त्रयंतुतत्राऽपिगवेषणीयम् ।५५

गाथार्थ.-व्रतधारी अथवा अव्रती एवा ससारी जीवो
पृथ्वी ऊपर पडेला वरसाद ना बिन्दुओ ना समूह नी जे
भुक्त, भोग्य अने परिभुज्यमान एम त्रणे प्रकार नुं क
चिरस्थायी होय छे, परन्तु केवली भगवतो ने शिला ऊ
पडेल वृष्टि नी जेम अल्प स्थिति वालुं होय छे, तो प
केवली सबधी कर्म सत्ता मा त्रण दशा विचारवा

विवेचन:-सयमी अने असयमी एवा सर्व संसारी जी
ने पृथ्वी ऊपर पड़ेला, पडशे अने पड़ता एवा वरसाद
बिन्दुओ ना समूह नी जेम भुक्त, भोग्य अने परिभुज्यम
एम त्रण प्रकार नुं कर्म छे परन्तु ते लाबा काल थी स्
रहे एवुं होय छे, वली केवली भगवतो ने शिला ऊपर प
वृष्टि नी जेम अल्प काल वालुं भुक्त, भोग्य अने परिभु
मान कर्म होय छे

केवली भगवतो ने केवल ज्ञान पाम्या पछी पोत
आयुष्य ना छेल्ला बे समय सुधी प्रति समय भुक्त, भ
अने भुज्यमान एम त्रणे प्रकार नुं कर्म होय छे. आयुष्य
अत समय ना पहेला समये भुक्त अने भुज्यमान एम
प्रकार नुं कर्म होय छे अने आयुष्य ना अत समये भु
फक्त एकज प्रकार नुं कर्म होय छे, कारण के सर्व
नो अंत समये क्षय थाय छे.

मूलम् -

सर्वत्र कर्त्रादिपरप्रणोदनां, विनैव द्रव्यादिचतुष्टयस्य ।
दृक्स्वभावादिहकर्मणांत्रयी, भुक्तादिकाऽसौभविमुक्तजीवग ।

गाथार्थ -सर्वत्र कर्त्ता नी पर प्रेरणा विना द्रव्यादि चतुष्ट ना तेवा प्रकार ना स्वभाव थी भवि अने केवली जीवो ने भुक्तादि त्रण प्रकार नुं कर्म होय छे

विवेचन- भव्य अने केवली भगवतो ने ऊपर बतावेल मुजब सर्व ठेकाणे कर्त्ता विगेरे बीजा नी प्रेरणा विना द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ए चार ना तेवा प्रकार ना स्वभाव थी भुक्त कर्म, भोग्य कर्म अने भुज्यमान कर्म एम त्रण प्रकार नुं कर्म होय छे

मूलम् -

सिद्धात्मनां सिद्धतया दशात्रयी, न कर्मणां तत्कृतपूर्वनाशतः ।
भुक्ताऽप्यवस्था भवदेषुकेवलि-भवावसाननतदत्रकाऽपिसा ।५७

गाथार्थ -सिद्ध थयेल एवा सिद्ध भगवतो ने पूर्व कर्मो नो नाश थयेल होवाथी ए दशात्रयी होती नथी. भुक्तावस्था पण केवली भगवंत ना आयुष्य ना अत सुधी होवा थी ते पण सिद्धो ने होती नथी.

विवेचन --ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोह-नीय, आयुष्य, नाम, गोत्र अने अन्तराय एम आठ कर्मो नो

नाश थवाथी सिद्ध थयुं पाप नाश छे पहेलां कर्मो नो
नाश थयेल होवाथी सिद्ध भगवंतो ने भुक्तावस्था, भोग्या-
वस्था अने भुज्यमानावस्था एम त्रणे प्रकार नी दशा होती
नथी सिद्धो ने भुक्तावस्था तो होवी जोइये ने ? एवा
प्रकार नो प्रश्न थाय ते स्वाभाविक छे, कारण के भुक्ता-
वस्था एटले भोगवाई गयेला कर्मों एवी अवस्था अने सिद्धो ने
पण कर्मो तो भोगवाई गयेला छेज, तो सिद्धोने भुक्ता-
वस्था केम न होय ? तेना प्रत्युत्तर मा जणाववानुं के भुक्ता-
वस्था केवली भगवंतो ना आयुष्य ना अंत समय सुधी होय
छे. तेथी सिद्ध भगवंतो ने भुक्तावस्था होती नथी

मूलम् –

मयाविचारोऽयमवाचिकर्मणा–मजानतालोकगतैर्निदर्शनैः ।
सामान्यलोकप्रतिबोधनाय,ज्ञेयःप्रवीणैस्तुपुराणयुक्तिभिः ।५८

गाथार्थ –ज्ञान रहित एवा मे साधारण लोको ना ज्ञान
माटे लोकप्रसिद्ध दृष्टांतो वड़े आ कर्म नो विचार कह्यो
विद्वान पुरुषोए प्राचीन युक्तिओ वडे जाणवो

विवेचन –अहियां ग्रंथकार श्री पोतानी लघुता बतावता
कहे छे के मारा मां तेवा प्रकार नुं विशिष्ट ज्ञान नथी तेथी
सामान्य लोक ना प्रतिबोध माटे लोक–प्रसिद्ध दृष्टांतो वडे
आ कर्मो नो विचार कह्यो छे परन्तु विद्वान पुरुषो तो
युक्तिओ वडेज कर्म नो विचार समझी शकता होवाथी

ग्रोए तो प्राचीन युक्तिओ वड़ेज आ कर्म नो विचार
रणवो जोइये

(वृत्तम्:-

थ विना प्रेरकमत्र कर्मणां, भुक्ताविहोदाहरणान्यनेकशः।
ारितान्येवविचारचञ्चुरै-स्तद्वावप्रमाणकिलपारमेश्वरी।

ावार्थ ए प्रमाणे कोई नी पण प्रेरणा विना कर्मो ना
ग मा विद्वानो ए अनेक दृष्टातो विचारेला छे तेथी
मेश्वर सम्बन्धी वाणी प्रमाण भूत छे.

वेचन -कर्मो जड अने अजीव होवा छता कोई नी पण
णा विना कर्मो ना भोग संबधी विद्वान् पुरुषोए अनेक
ातो द्वारा स्पष्टता करी छे, एटले राग–द्वेष रहित एवा
राग भगवंतो नी वाणी प्रमाण भूत मनाय छे

॥ अथ त्रयोदशोऽधिकारः ॥

इन्द्रिय मात्र नी प्रत्यक्षता स्वीकार वामा दोषः—

वृत्तम्:-

श! केचिद् भुविनास्तिका ये, न पुण्यपापे नरकं न मोक्षम्।
ांनचप्रेत्यभव वदन्ति,को नामतर्कःखलुतैःश्रितोऽस्ति? ।१।

ावार्थः- हे मुनिराज ! केटलाक जे नास्तिको छे तेओ
, पाप, नरक, मोक्ष, स्वर्ग अने परलोक मानता नथी,
तेओनो शुं मत छे ?

विवेचनः-आ जगत मा जैन, वेदांतिक, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा, बौद्ध अने जैमिनी विगेरे छः दर्शनो प्रसिद्ध छे. आ बधा दर्शनो, पुण्य, पाप, नरक, स्वर्ग, पुनर्जन्म अने मोक्ष विगेरे माने छे. फक्त चार्वाक नामनो नास्तिक वादी आत्मा पुण्य, पाप विगेरे ने नथी मानतो. तो तेओनो शुं मत छे ? ते जणावो.

मूलम्:—

ते नास्तिका दृश्यपदार्थसक्ता, नोइन्द्रियादेयविचारमुक्ताः ।
प्रत्यक्षमेकं वृणुते प्रमाणं, पञ्चेन्द्रियाणांविषयोऽस्ति यत्र ।२

गाथार्थ-ते नास्तिको देखाता पदार्थ ने माननार अने मन थी जाणी शकाय एवा विचार थी रहित छे. जेमा पांचे इन्द्रियो विषय छे एवा एक प्रत्यक्ष ने प्रमाण भूत माने छे

विवेचन.-स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय अने श्रोत्रेन्द्रिय ए पांचे इन्द्रियो ना आठ प्रकार ना स्पर्श, पांच प्रकार ना रस, बे प्रकार ना गंध, पांच प्रकार ना वर्ण अने त्रण प्रकार ना शब्द एम पांचे इन्द्रियो ना त्रेवीश विषयो के जे प्रत्यक्ष थी देखी शकाय अने जाणी शकाय तेज वस्तु ने माननारा छे अने मनथी जे पदार्थो विचारी शकाय एवा अने बीजा जे अवधि ज्ञान, मनपर्यवज्ञान अने केवल ज्ञान थी जाणी शकाय के देखी शकाय तेने नास्तिको मानता

नथी एटलेज तेओ पुण्य, पाप, नरक, स्वर्ग, मोक्ष अने आत्मादि मानता नथी.

मूलम् —

पृच्छाऽस्तितेःसार्धमसौमुनिनां,चेन्नास्तिकैरिन्द्रियगोचरःश्रितः ।
सद्वस्तुदृश्यंयदितर्हिवस्तुकिं,यन्नेन्द्रियाणांविषयःसमेषाम् ।३

गाथार्थ —मुनिओ नास्तिको ने पूछे छे के जो इन्द्रियो ने प्रत्यक्ष एवो तमारो मत होय तो जे देखाय छे तेज सद्वस्तु छे ते शुं एवी वस्तु छे के जे बधी इन्द्रियो ने गोचर नथी?

विवेचन —नास्तिको पुण्य, पाप आदि मानता नथी एटले आस्तिको नास्तिको ने आ प्रश्न पूछे के इन्द्रियो ने प्रत्यक्ष एवो तमारो मत होय तो तेनो अर्थ एज थयो के जे प्रत्यक्ष देखाय छे तेज वस्तु विद्यमान छे तो एवी कई वस्तु छे के जे बधी इन्द्रियो ने विषय भूत नथी ?

मूलम् —

रामादिकेवस्तुनिसर्वश्रोतसां,किंगोचरोनेतियदाहनास्तिकः ।
रात्रावतद्वस्तुनिशब्दरूप-समेऽपितद्वस्तुभ्रमो नकिस्यात्?।४

गाथार्थ- रामादि वस्तुओ सर्व इन्द्रियो ने गोचर नथी ? एम नास्तिको कहे छे तो ते विचारणीय छे जे रात्रे रामादि थी भिन्न पदार्थो के जे शब्द अने रूप मा सरीखा होय छे तेमां भ्रम नथी थता ? अर्थात् थाय छे.

[illegible]

[illegible] स्वस्थमनाः स्वजनान् जानाति [illegible] मधुमत्तः [illegible] ।
[illegible] इन्द्रियाणि [illegible] ? १७

शब्दार्थ [illegible] स्वस्थ मन वाला पोताना [illegible] ने
जाणे छे तेम मदिरा पीनार मा [illegible] नथी [illegible] ना
[illegible] मा तेज इन्द्रियो [illegible] केम जाणे छे ?

विवेचन—नथी जेम स्वस्थ मन वाला मनुष्य पोताना
बंधुओ ने जाणे छे तेम मदिरा पीनार माणस पोताना
बंधुओ ने जाणतो नथी पुरुष ने स्त्री तरीके जाणनार,
कमला ना रोगवालो सफेद शंख ने घणा वर्ण वाला शंख
तरीके जाणनार, पोताना संबंधिओ ने मदिरा पीधा बाद
विपरीत तरीके जाणनार, आ बधुं सत्य करता विपरीत जाणे
छे तो आ बधी बाबतो मा इन्द्रियो नुं ज्ञानज प्रमाण भूत
होय तो भ्रम केम थाय छे ? त्यारे नास्तिको कहे छे के
इन्द्रियो विपरीत जाणती नथी, परन्तु रात्रि, रोग अने
मदिरा ना कारण थी विपरीत जणाय छे हवे नास्तिको ने
पूछवानुं के रात्रि विगेरे मा पदार्थ ना आकार, वर्ण, गंध,
रस अने स्पर्श विगेरे शुन्य छे ? परन्तु हाथ मा रहेल
आमला नी जेम ते कहेवुं पण अशक्य छे. माटे नास्तिको नी
तेज इन्द्रियो नी प्रत्यक्षता अप्रमाणिक केम छे ते बतावे छे

:-

.......ज्ञानमथेन्द्रियाणां, सत्यं तथा चाऽऽधुनिक प्रमाणम् ।
नेदं वर किन्तु पुरातनं सत्, तान्येव खानीहतुको विशेषः? ।८

गाथार्थ- इन्द्रियो नुं प्राचीन ज्ञान सत्य छे के हमणा नु ? आ बराबर नथी परन्तु प्राचीन नुं सत्य छे तो इन्द्रियो तो प्रथम अने हमणा पण तेज हेती, तो विशेष शुं ?

विवेचन - स्त्री ने विषे स्त्री पणा नुं ज्ञान, सफेद शख मां सफेद पणा नुं ज्ञान अने स्व बधुओमा स्व बधु पणा नुं ज्ञान ए प्राचीनज्ञान सत्य छे के पुरुष ने विषे स्त्री पणा नुं ज्ञान, सफेद शंख मा बहु वर्ण पणा नुं ज्ञान अने माता-पिता आदि मा स्त्री आदि पणा नुं ज्ञान ए आधुनिक ज्ञान प्रमाण भूत छे परन्तु प्राचीन ज्ञानज सत्य छे तो फरी थी नास्तिको ने पूछवानु के पहेला अने पछी पण इन्द्रियो तो तेनी तेज छे तो प्रथम अने पछी मा विशेषता शुं छे, ते जणावो ?

मूलम् -

पूर्वं मनोऽभूदविकारि यस्मात्, तत्साम्प्रतं यद्विकृत बभूव ।
अतो मिथो भेद इयान् सकस्य,भेदोऽस्त्ययं मानसिकस्तदत्र ।९
दृश्यंमनोनास्तिनवर्णतोवा,कीदृग् निवेद्यं भवतीतिभण्यताम् ।
न दृश्यते चैन्नहि वर्ततेतत्,खान्येव तानीहकथंविकारः? ।१०

भाव्यार्थ—पहेलां मन अविकारी हतुं. हमणां ते विकारी थयुं. आ कोनो भेद छे ? ते मन नो भेद छे. मन देखातुं नथी अने रंग थी पण जणातुं नथी. तो केवी रीते जणावा योग्य छे ? ते कहो तमारा मते तो जे देखाय नही, ते होतुं नथी तो इन्द्रियो नो अही विकार केम ?

विवेचन—प्राचीन ज्ञान सत्य छे अने अर्वाचीन ज्ञान असत्य छे तो इन्द्रियो तो ए नी एज छे तो तेमा विशेष शुं ? तेना जवाब मा नास्तिक कहे छे के पहेलां मन विकार वगर नुं हतुं, परन्तु पाछल थी विकार वालुं थवाथी भ्रम उत्पन्न थाय छे हवे आस्तिक पूछे छे के मन विकार रहित अने विकार वालुं आ भेद कोनो छे? एम पूछवाथी नास्तिक जवाब आपे छे के आ भेद मन नो छे त्यारे आस्तिक नास्तिक ने पूछे के मन तो देखातुं नथी अने रंग थी पण जणातुं नथी. तो केवी रीते जणावा योग्य छे ? ते कहो. कारण के तमारा मत मुजब जे न देखाय ते होतुं नथी तो ते उदाहरणो मा इन्द्रियो नो विकार केवी रीते होय छे

मूलम् -

अयं विकारस्तु बभूव साक्षात्, यं सर्व एते निगदन्ति तज्ज्ञाः ।
न्यपश्यचेद्दृष्टपदार्थकेऽप्यपि, मोहोभवेदित्यमिहैव ज्ञानां ॥११
नहीन्द्रिजानामिदं हि केन, सत्यं सता सर्वमितीव वाच्यम् ।
नदेवमन्यंयदिहोपकारिण, उपाविशन्विष्यदृशोगतस्पृहाः ॥१२

गाथार्थ –आ विकार साक्षात् हतो, जेने आ सर्व तत्वज्ञो कहे छे. तुं विचार, जो आ जन्म माज दृष्ट पदार्थो मा पण इन्द्रियो नो मोह होय तो इन्द्रियो नुं ज्ञान सत्य केम कहेवुं? सत्य ज्ञान तो तेज छे के जे उपकारी, गत स्पृहा वाला अने दिव्य दृष्टि वालाओए कहेलुं छे

विवेचन -सत्य वस्तु मा जे भ्रम थयो ते विकार हतो एम बधा तत्वज्ञ कहे छे तो तुंज विचार करके आ जन्म मा पण देखी शकाय एवा पदार्थो मा पण इन्द्रियो नो मोह एटले भ्रान्ति थाय छे तो परलोक ना पदार्थो मा इन्द्रियो नो मोह थाय तेमा नवाई शी? माटे मोहवालुं एवुं इन्द्रियो नुं ज्ञान सत्य केम होई शके ? खरेखर सत्य ज्ञान तो परम उपकारी, निस्पृह अने दिव्य दृष्टि वाला केवल ज्ञानीओज बतावे छे तेज होई शके छे.

मूलम् –

स्वस्थं मनस्त्वं बुध ! सन्निधाय,विचारमेतंकुरु तत्त्वदृष्ट्या ।
शब्दाइमेज्ञानवतोपदिष्टा-स्तेऽमीयथार्थाभवताऽपिवाच्याः ।१३

गाथार्थ- हे चतुर, तुं मन स्थिर करी ने दिव्य दृष्टि ए विचार कर. आ शब्दो ज्ञानीओए बतावेल छे ते तमारे पण यथार्थ करवा जोइये.

विवेचन:-हवे आस्तिक वादी नास्तिक वादी ने कहे छे के तुं बुद्धिशाली छे, तो तुं मन स्वस्थ करीने तत्त्व दृष्टि थी विचार कर के इन्द्रियो ना विषय थी थतुं प्रत्यक्ष प्रमाण वालुं ज्ञान सत्य छे के ज्ञानी भगवतोए बतावेल ज्ञान सत्य छे ? दिव्य दृष्टि वाला ज्ञानी भगवतोए आ शब्दो बतावेल होवा थी यथार्थ छे अने तमारे पण तेज शब्दो साचा कहेवा जोइये

मूलम्:—

आनन्दशोकव्यवहारविद्या, आज्ञाकलाज्ञान मनोविनोदाः ।
न्यायानयौचौर्यकजारकर्मणी, वर्णाश्चत्वारइमेतथाश्रमाः ।
आचार सत्कार समीर सेवा, मैत्रीयशोभाग्यबलं महत्त्वम् ।
शब्दस्तथार्थोदयभङ्गभक्ति-द्रोहाश्चमोहोमदशक्तिशिक्षाः ।१५

परोपकारोगुणखेलनाक्षमा, आलोचसङ्कोचविकोचलोचाः ।
रागोरतिर्दुःख सुखे विवेक-ज्ञातिप्रियाःप्रेमदिशश्चदेशाः ।१६
ग्रामःपुरं यौवनदार्धकास्या,नामानिसिद्धयास्तिकनास्तिकाश्च
कषायमोषौविषयाःपराङ्मुखा-श्चातुर्यगाम्भीर्यविषादकैतवः

चिन्ताकलङ्कश्रमगालिलज्जा, सन्देहसंग्राम समाधि बुद्धि ।
दीक्षापरीक्षादमसंयमाश्च,माहात्म्यमध्यात्मकुशीलशीलम् ।१
क्षुधापिपासार्धमुहूर्तपर्व—सुकालदुःकालकराल कल्प्यम् ।
दारिद्रयराज्यातिशयप्रतीति-प्रस्तावहानिस्मृतिवृद्धिगृद्धिः ।१

ाश्वैरव्यसनान्यमूया——शोभाप्रभावप्रभुताभियोगाः ।
योगयोगाचरणाकुलानि,भावाभिधा प्रत्ययुक्तशब्दाः ।२०

ाथार्थ. -आनन्द, शोक, आचार, विद्या, आज्ञा, कला,
ान, मन नो आनद दायिक, प्रवृत्ति, न्याय, अनोति,चोरी,
ार कर्म, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अने शूद्र ए चार वर्णो,
ले जातिओ, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने सन्यास ए
ार आश्रमो, आचरण, आदर, पवन सेवा, मैत्री भाव,
ा, भाग्य, शक्ति, महिमा, शब्द तथा अर्थ, उदय, भग,
क्ति, वैर भाव, अज्ञान, अहकार, वल, शिक्षण, परोपकार,
ो रूप विगेरे, क्रीडा, क्षमा, आलोचन (जोवुं ते),
ोच, गमनादिक, दर्शनादि, राग, खुश थवुं ते, दुःख,
त, विवेक, ज्ञान, प्रिय, स्नेह, पूर्व आदि दिशाओ, देश,
म. नगर. यौवन, वृद्धावस्था, सिद्धि, आस्तिक, नास्तिक,
ाय, असत्य, शब्दादि विषय, विमुख, चातुर्य, गांभीर्य,खेद,
ट, कलक, श्रम, अपशब्द, लज्जा, सग्राम, समाधि, बुद्धि,
क्षा, परीक्षा, दमन, संयम, माहात्म्य, अध्यात्म, कुशील,
ल, भूख, तरस, मूल्य, मुहूर्त, पर्व, सुकाल, दुष्काल,
कर, आरोग्य, निर्धनता, राज्य, अधिक पणुं, विश्वास,
ग, हानि, स्मृति, उन्नति, आसक्ति, प्रसन्नता, दीनता,
सन, ईर्ष्या (गुण ने विषे दोषारोपण) शोभा, प्रभाव,

प्रभुता, अभियोग, अधिकारादि, चित्तवृत्ति नो रोध, व्यव
कुल अने भाववाचक शब्दो जाणवा

विवेचन.—सुगम छे

मूलम्—

इत्यादिशब्दा बहवो भवन्ति ये, जिह्वादिवत्तेन हि शब्दवन्त
स्वर्णादिवन्नोऽह रूपवन्तः, पुष्पादिवन्नोऽत्र चगन्धवन्तुराः
सितादिवन्नो रसवन्त एवं, न स्पर्शवन्तः पवनादिवच्च
किन्त्वेककर्णेन्द्रियरूपग्राह्या—स्ताल्वोष्ठजिह्वादिपदप्रवाच
स्वस्वोत्थचेष्टादिविशेषगम्याः, स्वाभ्याससम्प्राप्तफलानुमे
स्वनामयाथार्थ्यकथानिधायिनः, स्वीयप्रतिद्वन्द्विविनाशकारि
मध्यो विरोध्युत्थनिजाह्वयान्ताः, इतिदृशाः सर्वजनप्रसिद्धा
शब्दाःस्वकीयोत्थगुणप्रधाना, वाच्यानरैरास्तिकनास्तिकैश्च

भाषार्थ—आ शब्दो जिह्वादिनी जेम शब्द वाला नथ
सोनानी जेम रूपवाला नथी, पुष्पादिनी जेम सुन्दर ग
वाला नथी, साकर नी जेम रसवाला नथी, पवनादि
जेम स्पर्शवाला नथी, परन्तु श्रोत्रेन्द्रिय थी ग्रहण कर
योग्य छे तालु, ओष्ठ, जिह्वा आदि स्थानो थी बोल
योग्य छे पोत—पोतानी चेष्टा आदि थी जाणवा योग्य छे
पोताना अभ्यास थी प्राप्त थयेल फल थी अनुमान कर
योग्य छे पोताना नाम ने यथार्थ कथन ने धारण करना

ोताना शत्रु ने नाश करनारा, पोताना शत्रु नी उत्पत्ति थतांज पोते नाश थनारा अने पोताना थी उत्पन्न थयेल गुण प्रधान एवा आ शब्दो आस्तिक अने नास्तिक बन्ने ने कहेवा योग्य छे.

विवेचन.-आ शब्दो बधी इन्द्रियो थी ग्राह्य नथी, ते बता-वता कहे छे के आ शब्दो जीभ नी जेम शब्द वाला नथी, ोना नी जेम देखीशकाता नथी, पुष्पादि नी सुगंध जेम सुंघी ाकाय तेम नथी,साकर जेम स्वाद करी शकाय तेम नथी,पवन ी जेम स्पर्श करी शकाय तेम नथी फक्त एक कानथीज हण करी शकाय तेवा, छे तालू, होठ, जीभ विगेरे स्थानो ी बोली शकाय छे एमा केटलाक शब्दो फक्त क्रोध, मान ादि नी जेम पोत पोतानी चेष्टा आदि थी जाणी शकाय . केटलाक शब्दो क्षमा आदि नी जेम पोताना अभ्यास ी प्राप्त थयेल फल थी अनुमान करी शकाय छे केटलाक ब्दो विवेक आदि नी जेम पोताना नामना यथार्थ कथन ने ारण करनारा छे. केटलाक शब्दो आनंद विगेरे नी जेम ताना शत्रु ना शोक विगेरे ने नाश करनारा छे केटला ब्दो दुःख विगेरे नी जेम पोताना शत्रु ने सुख उत्प ताज पोतानो नाश करनारा छे केटलाक शब्दो चा श्रम, चार जाति विगेरे नी जेम गुण प्रधान छे. ए री स्तिक अने नास्तिक बन्ने ने ए मान्य छे

मूलम्

यदीदृशा अप्यपि भिन्नशब्दाः, येषां न साक्षात्कृतिरिन्द्रियैः स्वैः ।
तत्पुण्यपापादिकवस्तुनो हा-प्रत्यक्षके कथं न तत्प्रवृत्तिः ॥२५

भावार्थ—आ प्रकार मा पूर्व कहेल प्रकार नाना भिन्न थयेल शब्दो छे तेओनो साक्षात्कार नास्तिको ने पण पोतानी श्रोत्रेन्द्रियोथी नथी थतो तो अप्रत्यक्ष एवा पुण्य पाप आदि पदार्थो मा कोनी इन्द्रियो नु प्रवर्तन थाय? अर्थात् न थाय

विवेचन—प्रथम बतावेल शब्दो ज्यारे नास्तिको ने पण पोतानी श्रोत्रेन्द्रियोथी प्रत्यक्ष थता नथी, तो पछी पुण्य, पाप, स्वर्ग, नरक, आत्मा, मोक्ष आदि आ अप्रत्यक्ष पदार्थो मा केवी रीते इन्द्रियो प्रवृति करे? अर्थात् ज्या प्रत्यक्ष पदार्थो पण बधी इन्द्रियो थी जाणी शकाता नथी तो अप्रत्यक्ष पदार्थो नी तो वातज क्या करवी? माटे प्रत्यक्ष देखाय तेज साचुं एवा नास्तिको नो मत खोटो ठरे छे.

॥ अथ चतुर्दशोऽधिकारः ॥

परोक्ष प्रमाण पण मानवा योग्य छे

मूलम्:-

अतो य एतन्मनुते वदावदः, प्रत्यक्षमेकं हि मम प्रमाणम् ।
तच्चिन्त्यमानं न विवेकचक्षुषाम्, शक्तं भवेत्सर्वपदार्थसिद्धयै ॥१

गाथार्थ–नास्तिको माने छे के एक प्रत्यक्षज प्रमाण छे ते विवेकी आत्माओ ने विचारणीय छे के ते सर्व पदार्थो नी सिद्धि माटे शक्तिमान थतुं नथी

विवेचन–आटलुं समभाववा छता हजु पण नास्तिक-वादी नुं कहेवुं एवुं छे के मारे तो प्रत्यक्ष प्रमाण एज मान्य छे त्यारे आस्तिक वादी समभावे छे के दरेक पदार्थ नुं ज्ञान करवामा आपणी चर्म चक्षुओ काम लागती नथी, अथवा पाच इन्द्रियो द्वारा वधा पदार्थो नुं ज्ञान थई शकतुं नथी माटे विवेक चक्षु वालाओए तो प्रत्यक्षज मान्य छे ए बाबत जरूर विचारवी जोइये, कारण के वधा पदार्थो नी सिद्धि करवामां प्रत्यक्ष प्रमाण काम लागतुं नथी, अर्थात् वधा पदार्थो नी सिद्धि करवामा प्रत्यक्ष प्रमाण समर्थ नथी

मूलम्:-

किर्तहि सत्यंनिजगादनास्तिक-स्तदुत्तरंयच्छतुशुद्धमास्तिकः।
यदेकशब्देन निगद्यमानं, तत्सत्पदं प्राहुरिति प्रवीणाः।२

तद्विद्यते यन्ननुसत्पदेन, वाच्यं भवेद् वस्तु तदत्र किं स्यात्?।
यच्छब्दजातं गदितं पुरैव, तथा पुनः किंचिदनुच्यतेऽत्र।३

गाथार्थ–त्यारे नास्तिके कह्युं के सत्य शुं छे तेनो शुद्ध उत्तर आपो एटले आस्तिके कह्युं के जे एक शब्द 'वड़े

कहेवानुं होय ते सत्पद छे,एम चतुर पुरुषो कहे छे जे सत्पद वडे कहेवा योग्य होय छे ते वस्तु होयज छे. त्यारे नास्तिक कहे छे के सत्पद शुं छे ? आस्तिक कहे छे के जे शब्द नो समूह मे पूर्वे कहेल छे ते सत्पद वाच्य छे छतां फरी थी कहेवाय छे

विवेचन—नास्तिक कहे छे के जो वधा पदार्थो नी सिद्धि प्रत्यक्ष प्रमाण थी नथी थती तो सत्य शुं छे ? तेनो शुद्ध उत्तर आपो, हवे आस्तिक कहे छे के कोई पण वस्तु ना समस्त स्वरूप नुं ज्ञान जेना थी थाय ते सम्यग् ज्ञान कहेवाय छे, अने तेनेज प्रमाण कहेवामा आवे छे. ते प्रमाण जैन आगमो मा वे प्रकारे वतावेल छे—प्रत्यक्ष प्रमाण अने परोक्ष प्रमाण मन अने इन्द्रियो नी सहाय विना आत्मा द्वारा जे प्रत्यक्ष ज्ञान थाय छे ते प्रत्यक्ष प्रमाण जाणवुं जेम के अवधिज्ञान, मन पर्यव ज्ञान अने केवल ज्ञान ए त्रणे मन अने इन्द्रियोनी सहाय विना आत्मा आत्माने प्रत्यक्ष थाय छे तेथी ए त्रणे प्रत्यक्ष ज्ञान गणाय छे मन अने इन्द्रियो द्वारा आत्मा ने जे ज्ञान थाय ते परोक्ष ज्ञान गणाय छे, जेमके मति ज्ञान अने श्रुत ज्ञान ए वे ज्ञान मन अने इन्द्रियो नी सहाय द्वाराज आत्मा ने थाय छे तेथी ए वे परोक्ष ज्ञान गणाय छे परन्तु नैयायिको विगेरे चार प्रमाण माने छे.

..ा इन्द्रियो ने जे प्रत्यक्ष थाय ते प्रत्यक्ष प्रमाण जेम के पाचे इन्द्रियो द्वारा जे वस्तु जाणी शकाय छे ते प्रत्यक्ष प्रमाण अनुमान ना आधारे जे वस्तु नक्की थाय छे ते अनुमान प्रमाण. जेम के मन्दिर नी ध्वजा जोवाथी लागे के अही मन्दिर होवुं जोइये अने घुमाडो जोवाथी अहिया अग्नि होवो जोइये विगेरे अनुमान प्रमाण, अर्थात् लिङ्ग जोवा थी वस्तु नुं अनुमान करवुं ते अनुमान प्रमाण जाणवु

आगम अथवा शास्त्र द्वारा जे नक्की थाय ते आगम प्रमाण जेमके कदमूल मा अनत जीवो होय छे ते आगम प्रमाण जाणवुं कोई पण वस्तु नु उपमा द्वारा ज्ञान थाय छे ते उपमा प्रमाण जेम के रोझ गाय जेवुं होय छे, ते उपमा प्रमाण, अर्थात् जगल मा रोझ ने जोया वाद विचार आवे के आ शुं हशे ? त्यारे 'गाय जेवुं रोझ होय छे' ते याद आवतां 'गाय जेवुं आ रोझ छे.' एम जे ज्ञान थाय ते उपमा प्रमाण जाणवुं अहिया आगम प्रमाण वतावे छे के कोई पण वस्तु नुं आगम थी सिद्ध करवुं होय तो सत्पद द्वारा सिद्ध थाय छे शब्दो नो समूह ते सत्पद थी कहेवा योग्य छे, अने प्रथम कहेल छता फरीथी हवे कहेवाशे

मूलम्

काल.स्वभावोनियतिःपुराकृतं,तथोद्यमः प्राणमनोऽसुमन्तः ।
आकाश संसारविचारधर्मा,--धर्माधिमोक्षानरकोर्ध्वलोकौ ।४

विवेचन.-जे शब्द अथवा पद घणा अक्षरो नो बनेल
ाय अने जेमाथी अर्थ निकलतो होय ते शुद्ध पद कहेवाय
एवा एक पद वाली वस्तुओ जगत मा अवश्य होय छे
ारे बे पद, त्रण पद, चार पद आदि सजोग वाली वस्तुओ
गत मा होय छे, अथवा नथी पण होती जेमके वध्या छे
ने पुत्र पण छे, परन्तु वध्या पुत्र जगत मां नथी. वली बे
सजोग वाली वस्तुओ होय पण छे ते राजपुत्र.

मूलम् —

ं नभः पुष्पमरीचिकाम्भः—खरीविषाणप्रमुखा अनेके ।

ादृशा ये किल सन्तिशब्दाः,संयोगजास्तेकिलनैवयुक्ताः ।८

गाथार्थ —ए प्रमाणे आकाश पुष्प, मृगतृष्णा जल, खर
पाण विगेरे अनेक शब्दो एवा प्रकार ना पद सजोग
ला छे ते योग्य नथी एटले आ बाबत मा योग्य नथी

विवेचन —बीजा पण बे पद संजोग वाला शब्दो अनेक
, जेमके आकाश छे अने पुष्प पण छे परन्तु आकाश—
प नथी मृगतृष्णा एटले सूर्य नां किरणो छे अने जल
ण छे परन्तु मृगतृष्णा जल नथी खर एटले गधेडो छे
गडुं नथी एटले ए प्रकार ना पदसंजोग वाला शब्दो आ
बत मा योग्य नथी एटले जगत मा होता नथी.

मूलम्—

श्रोत्राक्षिमुख्येन्द्रियरूपग्राह्ये, परन्त्वतन्नामनि तस्य नाम्नि ।
र्यं तथाऽन्याश्रितरूपवेषके,ज्ञानं न नेत्रश्रवसोस्तदर्थकृत् ।११

गाथार्थ -कान अने आख थी ग्राह्य पदार्थ मां अने तेना
नाज तेनाथी भिन्न पदार्थ मा आख अने कान थी थतुं
न तेना अर्थ ने जणावनार थतुं नथी

विवेचन -इन्द्रियो संबंधी ज्ञान सर्वथा अर्थ ने जणावनार
तुं नथी ते कहेवानी इच्छा वाला ग्रंथकार श्री फरमावे छे
कान अने आख थी जाणी शकाय एवा कर्पूरादि मा
ने तेना जेवाज वर्णवाला अने आकार वाला मीठुं अने
ड मा कान अने आंख थी थतुं ज्ञान बरावर भेद
डी शकतुं नथी. माटे इन्द्रियोथी थतुं ज्ञान बरावरज
य छे एम नथी.

मूलम्:-

गा सिताआदिसुगन्धिवस्तुषु, श्रोत्राक्षिनासारसनासमुत्थं ।
नं यदप्यस्तितथापिकेषुचि-त्तेषुप्रमाणंरसनाववोधनम् ।१२

गाथार्थ-: जेम साकर, कर्पूरादि मुगधवाली वस्तुओ मा
न, आख. नाक अने जीभ थी उत्पन्न थयेलुं ज्ञान होय छे तो
। केटलाक पदार्थो मा जीभ नुं ज्ञान प्रमाण रूप थाय छे

विवेचन—नाक, [illegible]

कान, नाक अने जीभ [illegible]

छे. एटले [illegible] पदार्थो नुं ज्ञान [illegible] इन्द्रियो द्वारा थाय छे

परन्तु तेमां केटलाक पदार्थो नुं ज्ञान बीजी इन्द्रियो थी स्पष्ट थतुं नथी, परन्तु जीभ द्वारा [illegible] तेनुं ज्ञान स्पष्ट थाय छे अने ते प्रमाण भूत गणाय छे

मूलम्—

स्वर्णादिके वस्तुनि कर्णनेत्र–ज्ञानं स्फुरत्येव तथापि तत्र ।
निर्घर्षणादिप्रभावोऽवबोध--स्तदर्थसत्याय न केवलाक्षम् ।१३

गाथार्थ--सोनादि वस्तु मा कान अने आंख नुं ज्ञान स्फुरायमान थाय छे तो पण तेमां निर्घर्षणादि थी उत्पन्न थयेल ज्ञान तेना निश्चय माटे थाय छे परन्तु केवल इन्द्रियो थी उत्पन्न थयेल ज्ञान निश्चय माटे थतुं नथी

विवेचन—सोनुं विगेरे वस्तुओमा जोके कान अने आंख सबधी ज्ञान उपयोगी बने छे, तो पण तेनो साचो निर्णय करवा माटे सोना ने घसवुं, कापवुं, तपाववुं अने कूटवुं पडे छे. परन्तु केवल नेत्र थी उत्पन्न थयेल ज्ञान वडे सोनादि नो सचोट निर्णय थई शकतो नथी

मूलम्—

माणिक्यमुख्येषु पदार्थराशिषु, समाक्षविद्रत्नपरीक्षिकातः ।
तथापितेषामधिकोनवक्रयो,निगद्यतेरत्नपरीक्षकैःकिम्? ।१४

मवेंषु सर्वाणि समानि खानि, तदा कथं भिन्नविभिन्नवक्रयः ।
परन्तुकश्चित्प्रतिभाविशेषो, येनोच्यतेतद्गतमूल्यनिश्चयः ।१५

गाथार्थ—माणिक्य विगेरे पदार्थो ना समूहो मा इन्द्रियो
! ज्ञान समान होय छे तो पण रत्न परोक्षा ना शास्त्र द्वारा
रत्न ना परीक्षको थी तेओनुं मूल्य अधिक ओछुं थाय छे.
तो शुं कहेवाय? सर्व रत्न परीक्षकोनी इन्द्रियो समान छे, तो
अधिक ओछुं मूल्य केम थाय ? परन्तु माणिक्य नुं अधिक
ओछुं मूल्य कोई नी प्रतिभा विशेप थी कहेवाय छे

विवेचन - कोई माणिक्य आदि रत्नोनी परीक्षा रत्न
परीक्षा ना शास्त्र थी रत्न—परीक्षको करे छे त्यारे वधा
रत्न—परीक्षको वधा रत्नो नी कीमत सरखी करता नथी.
परन्तु एक माणिक्य नी कीमत अधिक तो बीजानी कीमत
ओछी आके छे वधा रत्न परीक्षको नी इन्द्रियो समान छे
एटले वधानी इन्द्रियो नुं ज्ञान पण समान होवा छतां मूल्य
अधिक के ओछुं आकवामां तमारा मत मुजव शुं कारण
होय छे? ज्यारे अमारी मान्यता मुजव तो रत्नो नी कीमत
वधु के ओछी आकवामा ते रत्न परीक्षको नी प्रतिभा
विशेप कारण भूत छे.

मूलम्—

तथाहिफेनादिकजोटकेषु, प्रायो विमुह्यन्ति समेन्द्रियाणि ।
प्रमाणमेतेषु तदुत्थमत्तता, तेनेन्द्रियज्ञानमृतं न सर्वम् ।१६

धर्म नी समझ अल्प होय छे. आर्थिक, शारीरिक, कौटुम्बिक आदि अनेक प्रकार नी गृहस्थ जीवन नी चिन्ता थी भरेला होय छे. तेमज गृहस्थ जीवन ना निभाव माटे अनेक प्रकार ना आरभ-समारंभ वाला होय छे. वली धन, धान्य, परिवार आदि अनेक प्रकार ना परिग्रह मा आदर वाला होय छे

सूक्ष्म बुद्धि नी दृष्टिए विचारतां अल्प बुद्धि वाला पण होय छे तेमज मंद बुद्धि ना कारणे कोई पण प्रकार ना आलंबन वगर सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म रूप तत्त्वत्रयी मा मुंझायला होय छे छता तेमना आत्म कल्याण माटे जिनेश्वर देव नी द्रव्य पूजा, साधुओनी सेवा-भक्ति अने सुपात्र आदि स्थाने दान-धर्म हमेशा भले करे

मूलम्—

उच्चैः कुलाचारयशोऽवनार्थम्,श्रितोगृहस्थैः सकलोऽपिधर्मः ।
तद्द्रव्यतोभावतआत्मसम्पदे,द्विधापिधर्मगृहिणःश्रयन्त्वमी।२३

भावार्थ -ऊंच कुल ना आचार अने यश ना रक्षण माटे सर्व प्रकार नो धर्म नो आश्रय गृहस्थो वडे लेवायेलो छे आ गृहस्था द्रव्य अने भाव एम बन्ने प्रकारे आत्म सम्पत्ति माटे धर्म नो आश्रय ले

विवेचन - जो के गृहस्थोए पोताना ऊंच कुल ना रक्षण माटे अने पोतानी [illegible] ना रक्षण माटे सर्व प्रकार ना

मं नो आश्रय लीधेलोज छे. तो हवे तेओ पोतानी आत्म-
ात्ति–आत्म कल्याण माटे द्रव्य अने भाव एम बन्ने प्रकार
धर्म नुं आराधन करे एज तेमना माटे हितकर छे
ऋम्–

ेण सावद्यरता गृहस्थाः, सदैहिकार्थाधिकृतौ प्रसक्ताः।
म्बपोषादृतभूरिसङ्ख्यो-च्चोनीचवार्ताःपरतन्त्रखिन्नाः ।२४
ी स्वचेतः प्रतिभातपुण्य--कार्योद्यता आत्मरुचिप्रवृत्ताः।
ा ते स्वीयमनोऽभितुष्टयै,कुर्वन्तिपुण्यं किलकुर्वतांतत् ।२५

थार्थ –पाप व्यापार मा तत्पर, सांसारिक द्रव्य उपा-
करवामां आसक्त, कुटुम्ब पोषण मां आदर वाला,
आजीविका ना कारणे पराधीन पणा थी दुखित अने
पोताने मान्य पुण्य मां तत्पर एवा तेओ प्राय पोतानी रुचि
प्रमाणे प्रवृत्ति करे छे. तेथी तेमना मनना सतोष माटे जे
पुण्य करे ते भले करे.

विवेचन – गृहस्थो नुं जीवन लगभग पाप व्यापार माज
व्यतीत थाय छे. कारण के तेओ ससार नुं जीवन चलाववा
माटे रात-दिन धन उपार्जन करवामाज मशगूल होय छे.
वली कुटुंब, परिवार आदि प्रत्ये आदर भाव वाला होवाथी
आजीविका चलाववानी प्रवृत्ति ना कारणे पराधीन पणे
अनेक प्रकार ना दुःखो ना भोक्ता बने छे, आवी परिस्थिति

मा तेओ धर्म नी प्रवृत्ति मा एक दम आगल वधवा कठिन होवाथी पोतानी मान्यता मुजब पुण्य मा तत्पर होवा थी पोतानी रुचि प्रमाणे जे पुण्य करे छे, ते भले करे.

मूलम् -

एते गृहस्था हृदये विदध्यु-रितीव संकल्प्य च द्रव्यधर्म द्रव्येण कर्माणि समाचरय्य,यथा मनस्तुष्टिमिदंनिधत्ते । तथैव धर्माण्यपिकानिचिच्चेद्,द्रव्येणकृत्वा स्वमनः प्रसन्न कुर्मोऽत्र येनैव गृहस्थसत्को,व्यापार एष द्रविणेनसिध्येत् ।

भावार्थ—आ गृहस्थो हृदय मां दृढ सकल्प करीने द्र द्वारा धर्म ने करे जेथी द्रव्य द्वारा कर्मो आचरी ने मन सतोप पामे तेज प्रमाणे केटलाक धर्म कार्यो द्रव्य अमे पोतानुं मन प्रसन्न करिये छिये एम लागे, कारण गृहस्थ सबंधी आ व्यापार द्रव्य थीज सिद्ध थाय छे.

विवेचन -पूर्वे बनावेला आ गृहस्थो पोताना मन मा निर्णय करीने द्रव्य द्वारा धर्म ने करे कारण के तेमना म मा एम लागे छे के जेम द्रव्य द्वारा ससार ना कार्यो करा ने अमो मन मा सतोप करिये छीये, तेवीज रीति द्रव्य द्वारा धर्म ना कार्यो करीने अमारा मन ने अमो प्रस करिये छीये एटले ए रीते पण द्रव्य थी तेओ धर्म करे त

...माटे कारण के आ संसार मां गृहस्थो संबंधी बधी
...तिओ द्रव्य थीज सिद्ध थाय छे,

...क्तम् -

यतो द्रव्यवतां स्वधर्मं, द्रव्येण साद्धुं भवतीह चेतः ।
ह्यदो यस्य बलं यदीयं,बलेनतेनैवमतंनिजंक्रियात् ।२८

...पार्थ -आ धनवान गृहस्थो पोतानो धर्म द्रव्य थी
...वा इच्छता होय तो ते योग्य छे. जेनुं जे संबंधी बल
... तेना वडे पोतानो धर्म करे.

...वचन.- ज्ञानीओनुं कथन एवुं छे के संसार मां जीवो ने
... शक्तिओ सरखी प्राप्त थती नथी तथा जीवो नी
...ना पण सरखी होती नथी. एटले जे शक्ति मली होय
... सदुपयोग थाय तो सारु. तेथीज धनवान गृहस्थो ने
... द्वारा धर्म करवानी इच्छा होय तो तेओ द्रव्य द्वारा
...धर्म करे ते योग्य छे एटलेज पोताने जे बल मल्युं होय ते
...बल नो पोताना धर्म मां उपयोग करे एज ठीक छे.

...वृत्तम्—

तद्द्रव्यधर्मं गृहिणा प्रकुर्वतां, संसारकार्यान्मनसोऽस्तुनंवृत्तिः ।
यथा तथैते दधतांमनःस्वकं,सालम्बनेपुण्यविधावपेक्षणम् ।२९

...गाथार्थ.- द्रव्य द्वारा धर्म करता गृहस्थो जेम पोताना
...संसार ना कार्योथी निवृत्त थाय ते प्रकारे आलंबन वाला
...पुण्य कार्यो मां अपेक्षा पूर्वक पोतानुं मन स्थापे.

विवेचन – द्रव्य द्वारा धर्म करता पण गृहस्थो नुं मन
ना कार्यो माथी पोतानुं मन पाछुं हठे छे ते केवी रीते ?
वतावता कहे छे के द्रव्य थी धर्म करता गृहस्थो नी संस
ना कार्यों माथी मन नी निवृत्ति थाय ते रीते गृहस्थो जिने
श्वर देव नी द्रव्य पूजा, साधुओनी सेवा, प्रति लेखन
प्रमार्जना अने दानादि कार्यो मां अपेक्षा पूर्वक पोताना म
ने स्थापे.

मूलम् —

तद्यावतामी निजकेन्द्रियाणि, संवृत्य संसारभवक्रियातः ।
तदेव पूजादिकमाश्रयन्तां,मनः स्थिरं येनमनागपि स्यात् ।३०

गाथार्थ:--ते कारण थी आ गृहस्थो पोतानी इन्द्रियो ने
ससार नी क्रियाओ थी रोकी ने जेटला प्रमाण मा थोडुं
पण मन स्थिर थाय ते प्रमाणे पूजादि करे.

विवेचन —ससार मा डूवेला गृहस्थो नुं मन चौवीशे
कलाक ससार'नी पाप क्रिया मांज रत होय छे तो तेमनुं
मन धर्म मां केवी रीते स्थिर थाय, ते अहिया वतावे छे के
गृहस्थो पोतानी इन्द्रियो संसार कार्यो थी रोकीने थोडुं पण
मन स्थिर वने ते मुजव जिनेश्वर देवनी पूजादि तथा
ज्ञानादि करे जेथी मन नी स्थिरता थाय.

मूलम् —

यावत्त्वनाकारपदार्थचिन्ता-कृतौ मनो न क्षममस्ति तद्वत् ।
सुसाध्वसाधुप्रतिपत्तियोग्यो, ज्ञानोदयो यावदहो भवेन्नो ।३१
तावत्स्वकीयव्यवहाररक्षा, कार्या कुलीनेन सनिश्चयेन ।
सनिश्चयः सव्यवहार एवं,निन्द्यो गृहस्थो न परैर्यतोभवेत् ।३२

गाथार्थ -ज्यां सुधी निराकार पदार्थो नुं ध्यान करवामां मन समर्थ न थाय तथा सुसाधु अने असाधुओ एवो बोध न थाय त्या सुधी निश्चय नय मा रत एवा गृहस्थोए पोताना व्यवहार नी रक्षा करवी जेथी व्यवहार सहित निश्चय वालो बीजाओ ने निन्दा पात्र न बने

विवेचन'- व्यवहार धर्म नुं पालन पण जरूरी छे. व्यवहार ना पालन विना गृहस्थ लोको मा निन्दा पात्र बने छे माटे ज्यां सुधी मन निश्चय धर्म मा दृढ न बने त्या सुधी व्यवहार नुं पालन जरूरी छे. ते बतावता कहे छे के ज्यारे निराकार पदार्थ.नुं ध्यान करवामा मन मजबूत न बने अने सुसाधु अने असाधु एवो भेद समझवानी शक्ति न आवे त्या सुधी व्यवहार सहित निश्चय वाला गृहस्थे पोताना व्यवहार नो रक्षा करवी जेथी लोको मा निन्दा पात्र न बने

मूलम्

स्थिरं यदा चित्तमनाकृतावपि,तदा तु सिद्धस्मरणं विधेयम् ।
तत्सेधने साधुगृहस्थमुख्यै-रात्मात्वबोधे परियत्न एष्यः ।३३

[illegible]

[illegible] — [illegible] नुं [illegible] प्रयत्न [illegible] जोइये. [illegible] ना [illegible] मा मन न जोडवुं अने [illegible] मा मन स्थिर थाय त्यार बाद जिन भगवानो नुं [illegible] करवु जोइये. साधु अने गृहस्थोए जिन भगवानो नुं स्मरण नी भावना माटे आत्म ज्ञान नी प्राप्ति थाय तेवो प्रयत्न करवो जोइये

मूलम्—

पौर्वो विधिर्योऽखिलद्रव्यभाव-भिन्नां स हि द्वारधरोपलब्ध्यै ।
निर्वाणधाम्नोवरयानवत्स्या-त्तस्यप्रवेशेऽयमिहाऽऽत्मबोधः।३८
तदङ्गने पादविहारवद्यः, शिवालयावस्थितिकृन्महात्मनां ।
तेनात्मबोधःपरमोऽस्तिधर्मो,यत्सेधनान्निवृ॑तिरेवनिश्चिता।३९

भावार्थ— पूर्व कहेल द्रव्य अने भाव रूप धर्म मुक्ति रूपी महेल ना द्वार नुं आगणुं प्राप्त करवा माटे श्रेष्ठ वाहन तुल्य छे. अने मुक्ति रूपी महेल ना आगणा मां पहोंच्या बाद तेमा प्रवेश करवा माटे आत्म ज्ञान आगणा मा पाद

विहार सरीखा महात्माओ ने शिवालय मां स्थिति करी आपनार छे, अर्थात् आत्मज्ञान ए परमधर्म छे जेनी साधना थी मोक्ष निश्चित थाय छे.

विवेचनः-मोक्ष ना अर्थी आत्माए द्रव्य अने भाव एम बन्ने प्रकार ना धर्म नी आराधना करवी जोइये, बन्ने प्रकार ना धर्म नी आराधना द्वारा जीव मुक्ति नी नजीक पहोंचे छे. पछी आगल वधवा माटे आत्म ज्ञान नी आवश्यकता रहे छे. एज आत्म ज्ञान द्वारा जीव मोक्ष पुरी मा स्थिर वास थाय छे एज वस्तु बतावता अहिया कहे छे के द्रव्य अने भाव धर्म ए मुक्ति महेल मा प्रवेश करवा माटे आत्म ज्ञान मुनिओना पाद विहार तुल्य छे अने अंते मुक्ति रूपी महेल मां स्थिर बनावे छे, माटे आत्मज्ञानए परम धर्म छे अने तेनी साधना थी निश्चये मोक्ष थाय छे.

मूलम्-

सन्त्यत्र यद्बोधनदर्शनाख्य-चारित्रमुख्याः सकलागुणौघाः ।
सआत्मबोधोजयतिप्रकृष्टं,ज्ञानादिशुद्धं यदिहास्त्यनन्तम् ।३६

भावार्थः-आत्म बोध मां ज्ञान, दर्शन अने चरित्र विगेरे सघला गुणो नो समूह वर्ते छे, एवा प्रकार नो आत्म बोध उत्कृष्ट रीतिए जय पामे छे, कारण के आत्म बोध मा ज्ञानादिनी शुद्धि अंत रहित रहेली छे.

विवेचन:–आत्म बोधनुं महत्त्व केटलुं छे ते बतावता कहे छे के सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान अने सम्यग् चारित्र ए मोक्ष नो मार्ग छे आ मोक्ष ना मार्ग रूप सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान अने सम्यग् चारित्र विगेरे बधा गुणो आत्म बोध माज रहेला छे तेथी आत्म बोध जगत मा उत्कृष्ट रीतिए जयवता वर्तो वली आत्म बोध थी सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान अने सम्यग् चारित्र नी शुद्धि पण थाय छे. ते शुद्धि अनत काल पर्यंत रहे छे, अर्थात् टकी शके छे.

मूलम्:-

तच्छोधनेऽनन्तचतुष्टयाप्ति—यंदीयपारप्रतिप्रतिकार्यें ।
ज्ञानंनकस्याऽपिसदाप्रभुस्या-त्सर्वात्मनाकाशदृशीवशाश्वतम्॥३७

गाथार्थ:-ज्ञानादिनी शुद्धि थी अनत चतुष्टयनी प्राप्ति थाय छे. जे सम्बन्धी पार गमन करवामा आकाश दर्शन नी जेम निरन्तर सर्व स्वरूप थी कया जन ने आत्म बोध समर्थ न थाय ?

विवेचन.- सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान अने सम्यग् चारित्र नी शुद्धि पूर्वक आराधना करवाथी आत्मा ना चार भाव प्राण स्वरूप अने मुख्य गुण रूप अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र अने अनत वीर्य नी प्राप्ति थाय छे,अने अनत चतुष्टय नो पार पामवा माटे आकाश दर्शन नी जेम आत्म ज्ञान एटले केवल ज्ञान सिवाय कोण समर्थ छे ? अर्थात् बीजूं कोई ज्ञान समर्थ नथी.

॥ अथ सप्तदशोऽधिकारः ॥

प्रभु प्रतिमा पूजन थी पुण्य नो संभव –

मूलम् –

अथेत्यसौनास्तिकआख्यदास्तिकं,यदुच्यतेभोःप्रतिमार्चनाद्भवेत्।
पुण्यं न तत्सम्भवतीपदार्था,अजीवतः का फलसिद्धिरस्ति? ।१

गाथार्थ :--आ नास्तिक आस्तिक ने कहे छे के हे आर्यो ! जे कहेवाय छे के प्रतिमा पूजन थी पुण्य थाय छे ते संभव नथी, कारण के अजीव थी कया फल नी सिद्धि थाय ?

विवेचन – घणा ना मन मा आवो संशय थाय छे के प्रतिमा पूजन थी शुं फल थाय ? तेवोज प्रश्न नास्तिक ना हृदय मा पण थवाथी नास्तिक आस्तिक ने प्रश्न करे छे के तमो कहो छो के प्रतिमा पूजन थी पुण्य थाय छे, परन्तु प्रतिमा पूजन थी पुण्य उपार्जन थतुं नथी कारण के प्रतिमा अजीव छे, अने अजीव एटले जड एवी प्रतिमा नुं पूजन करनार ने केवी रीते फल आपे ? अर्थात् अजीव थी कई सिद्धि थाय ?

मूलम्—

नैव स्वचित्ते परिचिन्तनीय-मजीवसेवाकरणाद्भवेत् किम्? ।
यथाहताकारनिरीक्षणं स्या-त्प्रायो मनस्तद्गतधर्मचिन्ति ।२

भावार्थ-तेनाना दिल मा एवुं न विचारवुं के अजीव नी सेवा थी शुं फल थशे? कारण के जेवा प्रकार ना आकार नुं निरीक्षण करे छे तेवा प्रकार ना आकार मा रहेला धर्म नुं ज्ञान मन चिन्तन करनार थाय छे

विवेचन -कोई नास्तिक ने आस्तिक पन्युतर आपतां कहे छे के प्रतिमा अजीव छे अने अजीव नी सेवा थी शुं फल मले छे आवो विचार तमारे न करवो कारण के प्रतिमा पूजन मां प्रतिमा फल नथी आपती, परन्तु प्रतिमा ना आलेखन थी मन ना अध्यवसायो बदले छे अर्थात् तेना आलंबन थी मन पर असर थाय छे कोई पण वस्तु ना गुण धर्म नुं चिन्त्यन करवुं ए मन नो विषय छे. गानी वस्तु ना गुण धर्म नुं चिन्त्वन पण मन करे छे. प्राय: करीने जीव जेवा प्रकार ना आकार वाली वस्तु नुं निरीक्षण करे छे तेवा प्रकार ना आकार मा रहेला गुण धर्मो नुं मन चिन करे छे एटले सारा आकार वाली वस्तु ना दर्शन थी पण सारी वस्तु ना गुण धर्म नुं चिन्त्वन करवाथी अध्यवसाय रूप फल मले छे माटेज शुभ अध्यवसाय प्रतिमा ना आलबन नी जरूर छे.

मूलम्—

यथा हि सम्पूर्णशुभाङ्गपुत्रिका, दृष्टा सती तादृशमोहहेतु:
कामासनस्यापनतश्चकाम-केलीविकारान्कलयन्तिकामिन: ।

योगासनालोकनतोहियोगिनां,योगासनाभ्यासमतिःपरिष्यात् ।
भूगोलतस्तद्गतवस्तुबुद्धिः,स्याल्लोकनालेरिह लोकसंस्थितिः ।

गाथार्थ-जेम सपूर्ण अने सारा अंग वाली पुतली जोवाती नी तेवा प्रकार ना राग नुं कारण थाय छे वली कामी पुरुषो काम ना आसनो ना चित्रोथी काम क्रीडा नी विकृति नो अनुभव करे छे. योग सबधी आसनो जोवाथी योग ना आसन करनाराओ ने योग ना आसन ना अभ्यास नी वृद्धि थाय छे भूगोल विद्यार्थी पृथ्वी ऊपर रहेल पदार्थो नुं ज्ञान थाय छे तथा लोक नाड़ी थी लोक रचना नुं ज्ञान थाय छे

विवेचन:- अहियां अजीव एवी वस्तुओ ना दर्शन थी पण मन पर केवी असर थाय छे ते बतावववा आस्तिक नास्तिक ने कहे छे के अजीब एवी पण सर्व अवयब थी परिपूर्ण अने सर्वाङ्ग सुन्दर एवी पुतली जोवाथी संपूर्ण अने सौन्दर्य वाली साक्षात् युवती जोता छता जेवा प्रकार नो राग उत्पन्न थाय छे तेवा प्रकार नोज राग उत्पन्न थाय छे अर्थात् स्त्री संबंधी विषय ने याद करावे छे विषय ने उत्पन्न कर-नार एवा काम ना आसनो ना चित्रो जोवाथी पण कामी पुरुषो काम क्रीड़ा ना विकार नो अनुभव करे छे योग ना आसन जोवाथी योग ना अभ्यासीओ ने योग ना अभ्यास

संबंधी बुद्धि थाय छे भूगोल विद्यार्थी पृथ्वी ऊपर
गाम, नगर, पर्वत, नदी, देश विगेरे अनेक प्रकार ना प
नुं ज्ञान थाय छे तथा लोक नाड़ी जोवाथी लोक र
नुं ज्ञान थाय छे, तेम प्रतिमा ना पूजन थी जे देव नी प्र
छे ते देव ना गुणो नुं स्मरण थाय छे ?

मूलम् -

कूर्माहिकालानलाकोटचक्रं-स्तदाश्रितज्ञप्तिरिह स्थितान
शास्त्रीयवर्णन्यसनात्समग्र-शास्त्रावबोधस्तदभीक्षकाणा

भावार्थ - कूर्म चक्रादि चक्रो वड़े आ संसार मा र
मनुष्यो ने ते चक्रो ने आश्रित रहेला पदार्थो नुं ज्ञान
छे शास्त्र संबंधी वर्ण नी स्थापना थी सकल शास्त्र नुं
शास्त्र ना जोनार ने थाय छे

विवेचन -कूर्म चक्र, अहि चक्र, सूर्य कालानल चक्र,
कालाबल चक्र अने कोट चक्र विगेरे अनेक प्रकार ना
छे ते ते चक्रो जोवाथी आ संसार मा रहेला मनुष्य
ते ते चक्र संबंधी जे पदार्थो होय छे तेनुं ज्ञान थाय छे
शास्त्र संबंधी अक्षरो जोवाथी सकल शास्त्र नुं ज्ञान
शास्त्र जोनार ने थाय छे

मूलम्—

नंदीश्वरद्वीपपुटात्तथा च, लङ्कापुटात्तद्गतवस्तुचिन्ता
एवंजिनेशप्रतिमाऽपिदृष्टा,तत्तद्गुणानांस्मृतिकारणंस्यात

ावार्थ -नदीश्वर द्वीप अने लंका नुं चित्र जोवाथी तेमां
ना पदार्थो नुं चिन्त्वन थाय छे एवी रीते पोन पोताना
वान नी मूर्त्ति जोवाथी तेमना गुणो नुं स्मरण थाय छे.
वेचन -नदीश्वर द्वीप नुं चित्र जोवाथी नंदीश्वर मा
ना अजनादि पर्वतो नुं, त्यां रहेल शाश्वत बावन जिन
दिरो तथा तेनी रचना नुं अने त्यां रहेल वावो विगेरे नुं
न थाय छे तेम लका नुं चित्र जोवाथी लका ना पदार्थो
चिन्त्वन थाय छे, अने त्यार बाद तेनुं यथार्थ ज्ञान पण
य छे; तेवीज रीते पोत पोताना भगवंत नी मूर्त्ति ना
न-पूजन थी ते मूर्ति मा रहेला गुणो नुं स्मरण मूर्त्ति
नार ने अवश्य थाय छे.
लम्-
ा तु साक्षान्न हि वस्तु दृश्यं,तत्स्थापनासम्प्रतिलोकसिद्धा ।
ा च पत्योपरदेशसंस्थे, काचित्सती पश्यति यत्तदर्चाम् ।७
ावार्थः- ज्यारे साक्षात् वस्तु जोवा न मले त्यारे ते
श्य वस्तु नी स्थापना हमणां संसार मां प्रसिद्ध छे जेम
कोई सती पोतानो स्वामी परदेश मा होय त्यारे तेनी
तमा ने जुए छे.
वेचन:-संसार मां पण प्रसिद्ध छे के ज्यारे लोको ने
वस्तु प्रत्ये सद्भाव होय छे अथवा जे व्यक्ति प्रत्ये
व भाव होय छे त्यारे ते साक्षात् वस्तु नी गैर

हाजरी मा तेनी स्थापना, मूर्त्ति, बावलां, चित्र विगेरे नं
उपयोग करे छे अने तेना दर्शन-पूजन द्वारा साक्षात् वस्
जोया नो अनुभव कहे छे. जेमके सती स्त्री पण पोतानं
स्वामी परदेश गयो होय त्यारे तेना पति नी प्रतिमा, चित्
विगेरे ना दर्शन आदि करी तेना पति ना साक्षात् दर्शन नं
अनुभव करे छे, तेवीज रीते भगवान नी प्रतिमा ना दर्शन-
पूजन थी पूजक ने भगवान ना गुणो नुं स्मरण थाय छे

मूलम्—

यदन्यशास्त्रेऽपि निशम्यतेऽदः, श्रीरामचन्द्रे परदेशसंस्थे।
तत्पादुकांसोऽपिचरामवत्तदा-ऽभ्यपूजयत्श्रीभरतोनरेश्वरः।८
सीताऽपिरामाङ्गुलिमुद्रिकांता-मालिङ्ग्यरामाऽऽप्तिसुखंन्यमं
रामोऽपिसीताश्रितमौलिरत्न-मासाद्यसीताप्तिरतिंव्यजानात्।

भावार्थ:—अन्य शास्त्र मा पण सभलाय छे के श्री रामचंद्र
परदेश मा होते छते श्री भरत राजाए तेमनी पादुका श्री
राम नी जेम पूजी हती सीताजी पण रामचन्द्रजी नी
वीटी ने आलिगन दई रामचद्रजी नी प्राप्ति ना सुख नो
अनुभव करवा लाग्या. अने रामचद्रजी पण सीताजी ना
मुगट रत्न ने प्राप्त करी सीताजी प्राप्ति ना सुख ने अनु-
भव करवा लाग्या.

विवेचन.—हवे ग्रथकार श्री अन्य शास्त्रो द्वारा प्रतिमा
पूजन सबंधी दृष्टातो आपी तेज वस्तु ने दृढ करता जणावे

छे के रामायण मां पण एक प्रसंग आवे छे के ज्यारे रामचंद्रजी वनवास गया त्यारे तेमना भाई भरतजी नी अनिच्छा छतां पराणे भरतजी ने राज्य गादी सुप्रत करी हती. ते समये रामचंद्रजी प्रत्ये ना भक्ति भाव थी भरतजी राजा होवा छता पण श्री रामचंद्रजी नी जेम तेमनी पादुका स्थापन करी तेमनी पूजा करता हता. सीताजी पण रामचद्रजी ना वियोग मां रामचद्रजी नी वींटी ने आलिंगन दई रामचंद्रजी मल्या तुल्य आनन्द अनुभववा लाग्या अने रामचंद्रजी पण सीताजी ना मुगट-रत्न ने जोवा थी सीताजी नी प्राप्ति तुल्य सुख अनुभववा लाग्यां.

मूलम् -

नात्राऽस्तिकश्चित्तुतयोःशरीरा-कारस्तथापीहतयोस्तथाविधम् ।
सुखं समायाद्यदजीवतोऽपि,तर्हीश्वरार्चाऽपि सुखाय किं न? ।१०

भावार्थ - राम अने सीता ना शरीर नो आकार नथी. ते वस्तुओ अजीव होवा छता ते वस्तुओ ने जोई ने ते बन्ने ने सुख नो अनुभव थाय छे. तो ईश्वर नी प्रतिमा पण सुख ना माटे केम न थाय ? अर्थात् थावज

विवेचन - जेम रामचंद्रजी नी वींटी मां रामचंद्रजी नो आकार न्होतो अने सीताजी ना मुगट मा सीताजी नो आकार न्होतो, वली ते बन्ने चीजो अजीव पण हती, छता रामचंद्रजी तथा सीताजी ने ते बे ने वस्तुओ जोतां सगदा

[illegible] आस्तिक [illegible] प्रकार थाय छे के [illegible] निस्पृह एवा पुरुष नी सेवा [illegible] नथी. कारण के निस्पृह पुरुष नी सेवा थी परमार्थ सिद्धि थाय छे जेम व्यवहार मा पण कोई निस्पृह एवा सिद्ध पुरुष नी सेवा थी पोतानी इष्ट सिद्धि अ इष्ट कार्य सिद्ध थाय छे तेम निस्पृह एवा वीतरा सेवाथी परमार्थ सिद्धि एटले आत्मा ने लाभ थाय छे

प्रतिमा अजीव छता तेनाथी पुण्य नी सिद्धि —

मूलम् —

सिद्धस्तुसाधो! वरिवर्तिसाक्षादेशोत्वजीवाप्रतिमाप्रतिष्ठि
नाऽयं विचारः परिपूजनीये,द्रव्ये यतः पूज्यत एव पूज्यः

भावार्थः—हे साधु ! आ तो प्रत्यक्ष सिद्धि जणाय छे प ईश्वर नी प्रतिमा अजीव रहेली छे. तेनो उत्तर छे के पू लायक द्रव्य मा आ विचार न करवो, कारण के पूजा लायक होवा थी निश्चे पूजाय छे.

विवेचन:-नास्तिक आस्तिक ने कहे छे के आ सि पुरुष नुं दृष्टात आप्युं ते बराबर घटतुं नथी कारण के सि पुरुष ना दृष्टात मां तेमनी सेवा थी प्रत्यक्ष सिद्धि देख छे. वली सिद्ध पुरुष तो सजीव छे ज्यारे आ ईश्वर न प्रतिमा तो अजीव छे अने प्रत्यक्ष फल पण देखातुं नथ तेना उत्तर मा आस्तिक जणावे छे के द्रव्य पूजा ने योग्य

होय तेमां आ विचार न करवो, कारण के पूज्य एटले पूजाने योग्य एवा भगवत नी प्रतिमा निश्चय पूजाय छे.

मूलम्:-

दक्षिणावर्तककामकुम्भ—चिन्तामणिचित्रकवल्लिमुख्याः ।
[illegible]नोन्द्रियाणीहवहन्तियत्ते-ऽर्चिताःप्रकुर्वन्तिमतंजनानाम् ।२७

भावार्थ:-दक्षिणा वर्त शंख, काम कुम्भ, चिन्तामणि अने चित्रवेली विगेरे पूजायेली छती मनुष्यो ने इष्ट वस्तु आपे छे, एम संभलाय छे.

विवेचन —अजीव छता पण मनुष्य ने इष्ट फल आपे छे ते माटे दृष्टात पूर्वक जणावाय छे के दक्षिणावर्त नाम नो शंख, कामकुम्भ, चिन्तामणि रत्न अने चित्रवेली विगेरे अजीव वस्तुओ छे. एवी अजीव वस्तुओ पण पूजवाथी पूजायेली छती पूजनार ने इच्छित फल आपे छे एम [illegible] मां संभलाय छे.

मूलम्—

[illegible]स्तुस्वभावाद्यदमीअजीवाः,स्वतोऽस्पृहायन्तइहाऽभि[illegible]कामान् ।
[illegible]न्तिपद्धत्यनुपारमेष्ठी,पुण्यस्यनिद्धयंप्रतिमाऽर्चितातथा।२८

भावार्थ:—अजीव एवो मा पोते [illegible] रहित [illegible] पण वस्तु ना स्वभाव थी संसार मा प्राणिओने इच्छित फल

ते पूजनिक बनतो नथी अने गुणवान न होवा छतां
प्रमाणिक माणसोए मान्य करेल होवाथी ते पूजनिक
छे. जेमके कोई राजपुत्र प्रायः वीर्यादि विशिष्ट गुण-
ो होवा छता तेने छोड़ी ने पांच प्रमाणिक मनुष्यो कोई
न वंश वाला ने तेना पुण्य थी राज गादी ऊपर स्थापन
छे. हवे आ निर्बल वंश वालो राजा गुणवान एवा
राजपुत्र ने आज्ञा करे अने जो राजपुत्र आज्ञा न माने
तो तेमनो राजा ते राजपुत्र ने नंदन राजा नी जेम शिक्षा
ण करे.

श्लोकः—

विचार्यते चेन्मनसा मनुष्यै-र्मौलो गुणी राजसुतः स योग्यः।
परन्तुयः क्षुद्रकुलोऽपिराजा, सएवसेव्यः खलुपञ्चपूजितः ।२४

भावार्थ :--जो मनुष्यो वड़े मन थी विचारीए तो उत्तम
कुलवान अने गुणवान राजपुत्र तेज राज ने योग्य छे,
परन्तु क्षुद्र कुलवालो पण राजा पंच थी पूजित होवाथी ते
सेववा योग्य थाय छे

विवेचन - वास्तविक रीते जो दरेक मनुष्य ना हृदय मा
एम लागे छे के जे उत्तम कुल मां उत्पन्न थयेल होय अने
वीर्यादि गुण वालो होय ते राज्य ने योग्य छे, परन्तु तेने
पांच प्रमाणिक पुरुषोए मान्य करेल नथी तेथी ते सेववा

[illegible] सर्वं [illegible] ।
[illegible] बिम्बम् ॥३८
[illegible]
[illegible] भगवा[illegible] प्रतिबिम्बमेतत् ।
[illegible] पूजयन्ति [illegible] तदग्रही यः ॥३९

भावार्थ - हे [illegible] ! [illegible] ने [illegible]
[illegible] आकार ने
[illegible] रात्मा मा धारण करीने तेमना बिम्ब नी पूजा कर
आवे छे. परन्तु भगवान आकार मुक्त प्रसिद्ध छे तेथी
संबधी प्रतिमा बनावीने केवी रीते पूजाय ? 'अ भग
मा भगवान' एवी बुद्धि दोष रूप छे.

विवेचन—हवे नास्तिक आस्तिक ने प्रश्न करे छे के
विद्वानो ! तमोए पहेला दक्षिणावर्त शंख, चिन्तामणि
रत्न, कामकुंभ अने चित्रवेली विगेरे ना जे दृष्टांतो आपे
छे ते बधा पदार्थो आकार वाला छे. एटले आकार वाल
वस्तुओ ना आकार ने पोताना अन्तरात्मा मा धारण करी
तेमना बिम्ब ने पूजवामां आवे छे. एटले ते तो बराबर छे
परन्तु जे भगवान नी प्रतिमा बनाववामा आवे छे ते भग-
वान तो निराकार छे तेथी ते संबंधी प्रतिमा करीने केवी रीते
पूजाय ? वली भगवान नी प्रतिमा मा भगवान नो आकार
न होवाथी ते बिम्ब पण भगवान थी भि

सिद्ध पूजा थी अभगवान मां भगवान नी बुद्धि थशे. माटे
भगवान मा भगवान नी बुद्धि रूप दोष लागशे

मूलम्—

प्युच्यतेऽवस्त्वयकाविचारिणा-ऽनाकारिणास्त्वाऽऽकृतिरेवनेष्टा।
इंनुयद्भागवतंहिबिम्बं, तच्चावताराकृतिक्लृप्तरूपम् ।४०

गाथार्थ—विचारशील ते ठीक कह्युं. अनाकार वाली
नु नो अनाकार इष्ट नथी. भगवत संबंधी प्रतिमा
तेना आकार नी अपेक्षाए बनावेल छे

विवेचन. हे विचारशील ! ते कह्युं के आकार वाली
नु नो आकार होय परन्तु भगवान तो आकार रहित
न अनाकार छे तेथी अनाकार वाला भगवान नी
कृति ते इष्ट नथी. तेना प्रत्युत्तर मां जणाववानुं के
गवान नी जे प्रतिमा बनाववामां आवे छे ते प्रतिमा
गवान ना अंतिम भव ना शरीर नी अपेक्षाए बनाववा
आवे छे कारण के भगवान निराकार तो सिद्ध थया
द होय छे. जो गुणी तेओ मोक्ष मां न जाय त्यां सुधी
गवान साकार होय छे. माटे दोष लागतो नथी.

मूलम्:-

ईश्वनु संसारकृतावतारोऽमूस्याति तासुभगवान्महर्द्धिः।
तावाहावस्थावनितान्येन्द्रः, माऽऽोतसर्गःपरिपूजयनेतः ।४१

[illegible]

लोके[illegible]नाकारमयस्य वस्तुनः, आकारभावःपरिदृश्यतेयथा।
आज्ञा[illegible] भगवतीति वादं-वादंतुरेखाविरचतेमनुष्यैः ।१३
[illegible]ते यः स तथा न साधु-नोल्लङ्घतेसंपजनेषुसाधुः।
आम्नायशास्त्रेषुमन्त्रयोःस्यात्, तथाऽऽकृतिमंडलतोविलेख्या

भावार्थ:-संसार मा अनाकार वस्तु नी आकृति जोवाय छे जेम आ भगवान नी आज्ञा छे एम कहेता मनुष्यो वडे रेखा कराय छे जे तेने उल्लंघन करे छे ते सारो नथी अने जे तेने उल्लंघन नथी. करतो ते सारो गणाय छे. आगम शास्त्र अथवा मंत्र शास्त्रो मा पवन, आकाश नी मंडल द्वारा रेखा कराय छे.

विवेचन-संसार मा पण साकार वस्तु नी जेम अनाकार वस्तु नी पण आकृति जोवा मा आवे छे दाखला तरीके आ भगवान नी आज्ञा छे ते बताववा माटे बोलतां बोलता मनुष्यो वडे धूल मा रेखा कराय छे. जोके आज्ञा स्वयं साक्षात् आकार रहित छे परन्तु ते रेखा रूप आकार कल्पाय—

अने जे आज्ञा छे ते आज्ञा पण अरूपी एवा भगवान आदि ना प्रताप संबंधी छे. तेथी पहेला भगवान आदि नो प्रताप ग अमूर्त हतो. अमूर्त एवा भगवान आदि नो प्रताप पण मूर्त अने ते अमूर्त नी आज्ञा पण अमूर्त, अने आज्ञा नो रेखा र आकार मनुष्यो थी कल्पाय छे. वली मनुष्यो मा जे आज्ञा उल्लंघन करे छे ते सारो नथी. जे आज्ञा नुं उल्लंघन करतो नथी ते सारो छे. आगम शास्त्र अने मंत्र शास्त्रो मां पवन अने आकाश नी मंडल द्वारा रेखा कराय छे. एटले रेखा द्वारा एम बतावधामां आवे छे के आ रेखा वायु नी छे अने आ रेखा आकाश नी छे.

श्लोक—

स्वरोदयस्याऽऽज्यविचारशास्त्रे,तत्त्वानिपञ्चाऽपिससाकृतीनि ।
प्रनाकृतंयभित्यतिसाकृतंयथा,स्यादित्यमाकारहहाऽप्यनाकृतेः ।

भावार्थ विचार शास्त्र मां स्वरोदय ना पांच तत्त्वो आकृति सहित होय छे जेम अनाकार वस्तु साकार मनाय छे, तेवी रीते आ संसार मां अनाकार सिद्ध नो पण आकृति थाय छे.

विशेषार्थ—आ बीजा उदाहरणो बतावतां कहे छे जेम के प्रश्नादि विचार रूप आगम मां स्वरोदय संबंधी ज्ञान बताव्युं छे, तेमां स्वर नाडी ना त्रण भेद बताव्या छे-सूर्यनाडी, चंद्र-नाडी अने सुखमनाडी जमणी बाजु नी नासिका मां पवन नुं वहेवुं ते सूर्यनाडी, डाबी बाजु नी नासिका मां पवन नुं

भावार्थ:—आ संसार मां सिद्ध थतो पारो पण काले सिद्ध थयेलो फल आपे छे, परन्तु सिद्ध थता काल मा फल आपनार थतो नथी. तेवीज रीते देश अने व्यवहार सम्बन्धी कार्य पण कालेज अत्यन्त फलदायी थाय छे.

विवेचन:- आ ससार मा औषधि आदि थी पारो सिद्ध करवामां आवे छे—ते पारो सिद्ध थाय ते कालेज फलद थाय छे. हजु सिद्ध न थयो होय ते काल मां फल दे थतो नथी-तेवीज रीते देश सबंधी कार्यो अने व्यव सबधी कार्यो बराबर काल परिपाक थयेज अत्यन्त दायी थाय छे. ते पहेला फलदायी थता नथी

मूलम्:-

तथैव पूजादिकमत्रपुण्यं, काले स्व एवाऽस्ति भवान्तरा फल प्रदायीतिततो न दक्षै-रौत्सुक्यमेष्यं फलदे पदार्थे ॥

भावार्थ- तेवीज री आ ससार मा पूजादि धर्म अन्य भवे पोताना समये फलदायी थाय छे तेथीज पुरुषोए फलदायिक वस्तु मां उतावल न करवी जोइये.

विवेचन:—ससार मा पण शुभ अथवा अशुभ कार्यो फल अवश्य मले छे, अने ते पण ते कालेज ते वस्तु अ फले छे. माटे स्थिरता राखवी जोइये ते बतावता क के जेम शुभ अने अशुभ कार्यो नुं फल ते कालेज मले

तेम भगवान नी पूजादि शुभ कार्यो नुं फल पण अन्य भव
मा पोताना समये अवश्य मले छे. माटे विचारशील पुरुषोए
ऐहदायिक पदार्थो मा उतावल न करवी जोइये.

मूलम्--

इत्थं धाऽवस्य हृदि स्वकीये, पूर्वं प्रणीता य इमे पदार्थाः ।
ते चैहिका ऐहिकदायिनस्तत्, फलन्त्ययाऽत्रै वयतोऽग्रतोन॥७॥

भाष्यार्थ - वली हे विद्वान्, तुं पोताना हृदय मां विचार
के जे पूर्वे कहेला पदार्थो आ लोक ना फल ने देनार
होवाथी आ लोक मां फले छे, आगला जन्म मां फल
आपता नथी

विवेचन.--हे विद्वान्, तुं तारा हृदय मां बराबर विचार
के जे वस्तु नो जे फल देवानो जे काल होय तेज काले
फल आपे छे, बीजा काल मा फल आपता नथी. जेमके
दक्षिणावर्त शंख आदि वस्तुओ संसार मा तेना आराधक
ने आ जन्म मा फल देवाना स्वभाव वालो होवाथी आ
जन्म मांज फल आपे छे. परलोक मा फल आपतो नथी.

मूलम् --

मनुष्यजन्मनिभवस्य तुच्छ-कालीनभावादिति तुच्छमेन्यः ।
प्राप्य फलं तेन मनुष्यजन्म-संबाऽत्र नैन्योऽस्ति फलं परत्र॥८॥

गाथार्थः- मनुष्य भव अल्प काल होवाथी ए पदार्थों नुं तुच्छ फल मले छे. तेथी मनुष्य जन्म माज तेमने तुच्छ फल मले परन्तु परलोक मा फल न मले.

विवेचन- चिन्तामणि रत्न आदि पदार्थो आ भव नुं तुच्छ फल आपनारा छे वली ते अल्प काल सुधी फल आपनारा छे मनुष्य जन्म पण अल्प काल वालो छे तेथी चिन्तामणि रत्न आदि पदार्थो नुं अल्प कालीन अने तुच्छ फल मनुष्य जन्म माज फले छे. तेमनुं फल परलोक मां मलतुं नथी.

मूलम् —

इदं सुहृत् ! पुण्यभवं फलंतु, महत्ततःस्याद्बहुकालभुक्त्यं ।
प्रभूतकालस्तु विना भवान्तरं,देवादिसम्बन्धिन वर्तते यतः ।६

गाथार्थः- हे मित्र, आ पुण्य थी उत्पन्न थयेल पुण्य मोटुं होय छे, तेथी लांबा काल सुधी भोगवाय छे अने लांबो काल देवादि संबंधी भवांतर विना संभवतो नथी.

विवेचन.- जे वस्तु नुं फल घणुं मलवानुं होय अने लांबा काल सुधी चाले तेवुं होय तो एवुं फल भोगववा माटे लांबा काल वालो अने सारो भव जोइये मनुष्य भव लांबा काल वालो नथी अने एकदम पुण्य भोगववा माटे सारो भव पण नथी ते वस्तु समझाववा माटे कहे छे के :

मेम, आ पुण्य थी उत्पन्न थयेलुं फल घणुं मोटुं होय छे
ने लांबा काल सुधी भोगवाय तेवुं होवाथी ते माटे मनुष्य
व उपयोगी बनतो नथी. आवो सारो अने लांबो काल
व भव सिवाय भवांतर मा नथी.

मूलम्:—

तत्पुण्यलभ्यं फलमेतदस्ति, प्रायोऽन्यजन्मान्तरयातजन्तोः ।
यद्यत्र जन्मन्युपयाति पुण्य-फलं तदा मङ्क्षु विनाशमेव ॥१०॥

गाथार्थः—ते पुण्य संबंधी फल प्रायः अन्य जन्म मा जता जीव ने होय छे, जो ते पुण्य नुं फल मनुष्य जन्म मांज प्राप्त थाय तो जल्दी नाश पामी जाय.

विवेचन:—ते पुण्य संबंधी फल मोटुं तथा लांबा काल सुधी भोगवाय तेवुं होवाथी ते प्राणी बीजा भव मा जाय छे, तेनी साथे परलोक मा जाय छे जो मनुष्य भवमांज ते पुण्य फल प्राप्त थतुं होय तो ते भव अल्प काल वालो होवा थी तत्काल सकल पुण्य फल नाश पामी जाय, माटे ते पुण्य नुं फल परलोक मा भोगवाय छे.

मूलम्:—

यतो मनुष्यायुरतीव तुच्छं, मानुष्यकं देहमिदं सरोगम् ।
तत्पुण्यमानं परलोकान्तरागमात्, नन्तुद्गतीदं पुण्यफलम् ॥११॥

जीवन पर्यन्त सर्व काम करनार थाय छे घणुं शुं कहिये ? ते राजपुत्र दुष्ट शत्रुओना समूह थी अने मरणान्त क्लेश थी तेनुं रक्षण करे छे

मूलम्. -

एव हि कुत्राऽवसरे किलैक–वारं महत्पुण्यमुपार्जितं यै
तेषां तदत्राऽपि परत्र लोके, सत्सौख्यसन्तानविधानहेतुः ।

गाथार्थ – ए प्रमाणे खरेखर कोइक अवसरे एक मोटुं पुण्य जेओए उपार्जन कर्युं होय, तेमने ते मोटुं अहिया अने पर भव मा श्रेष्ठ सुख अने संतति नुं का बने छे.

विवेचन –उग्र पुण्य नुं फल वर्णवता कहे छे के जे जीवन मा एक वार कोइक अवसरे मोटुं पुण्य उपार्जन होय तो ते पुण्य, पुण्य करनार आत्माओ ना श्रेष्ठ, अने संतति नुं कारण बने छे अर्थात् सुख अने सतति प्राप्ति थाय छे.

मूलम् -

पुनस्त्वतीवोग्रतमं यदत्र, पुण्यं च पापं समुपार्जि पुं
अनेकपुंसामपि भुक्तयेत-च्छालेरिवस्त्रेणयुजश्च चोरवत

गाथार्थ –वली आ संसार मा उग्रतम पुण्य अने पा मनुष्ये उपार्जन कर्युं होय ते उग्रतम पुण्य अने पाप अ

मनुष्यो ना भोग ना माटे अनुक्रमे स्त्री समूह युक्त शालि-भद्र अने चोर नी जेम थाय छे.

विवेचनः—उग्रतम पुण्य तथा उग्रतम पाप पोताना माटे फलदायिक थाय छे तेमां कंइक पण आश्चर्य नथी, परन्तु बीजा अनेक मनुष्यो ना भोग ने माटे अथवा दुःख ने माटे थाय छे ते बतावता कहे छे-जेम शालिभद्र पूर्व जन्म मा गोवालिया ना भव मा मासक्षमण ना तपस्वी ने खीर ना दान द्वारा जे उग्रतम पुण्य उपार्जन कर्युं ते तेमनी स्त्रियो ना समूह नुं भोग माटे पण थयुं अने चोरे जे उग्रतम पाप कर्युं ते तेमनी स्त्रियो ना नाश माटे पण थयुं तेम उग्रतम पुण्य अने पाप कोइए कर्युं होय तो बीजा अनेक ना भोग माटे पण थाय छे

मूलम् —

यथैकः कश्चन राजसेवां, कृत्वा सुखी स्यात्परिवारयुक्तः ।
एकस्तथा कोऽपि नृपापराधी, निहन्यतेऽसौ सपरिच्छदोऽपि ॥२०

भावार्थः जेम कोई मनुष्य राज सेवा करीने परिवार सहित सुखी थाय छे, तथा चोर एक मनुष्य राजा नो अपराधी पणाथी पोताना परिवार सहित हणाय छे.

विवेचन- सुगम.

परमेश्वर ना नाम स्मरण नी पण आवश्यकता-

मूलम्—

यद्येवमर्चादिकपुण्यमेतत्, सर्वात्मना स्वार्थकरं निरूपितम् ।
तदेतदेवाद्रियतां जनौघः,किं नामजापे विहिता प्रवृत्तिः ।२१

गाथार्थ-आ प्रमाणे जो आ पूजादि नुं पुण्य सर्व प्रकारे स्व प्रयोजन साधक कहेलुं छे, तो जन समूह आ भले आदरो परन्तु भगवान ना नाम नो जाप केम कह्यो छे ?

विवेचन.-सर्व प्रकारे पोताना प्रयोजन नुं सिद्ध करनार आ पूजादि नुं पुण्य वताव्युं छे तो ते पूजादिक पुण्य कार्य लोको नो समूह भले करे, परन्तु भगवत ना नाम स्मरण नी शी आवश्यकता ? अर्थात् भगवत ना नाम नो जाप केम करवो ?

मूलम् -

साधूच्यते साधुजन! त्वयेदं, पर विवेकोऽत्र कृतोमहद्भिः ।
इमे गृहस्थाःखलुयेसमर्था-स्तेद्रव्यभावाऽर्चनकाधिकारिणः ।२२
ये योगिनो द्रव्यपरिग्रहेण, विना विभान्तीह भवे महान्तः ।
तेषां त्वधीशस्मृतिरेव युक्ता,तयैवतत्स्वार्थकृतिःसमस्ता ।२३

गाथार्थ:-हे श्रेष्ठ जन ! ते आ ठीक कह्युं छे, परन्तु महापुरुषोए अहिया विवेक करेलो छे. जे गृहस्थो शक्तिशाली छे तेओ द्रव्य अने भाव पूजा ना अधिकारी छे.

अस्यां हि सत्यां स्थितिरक्षयाख्याद्,अनन्तविज्ञानमनन्तदृष्टिः ।
एकस्वभावत्वमनन्तवीर्यं,जागर्त्ति सज्ज्योतिरनन्तसौख्यम् ।२६

भावार्थ –पाप नाश पामे छते सर्व प्रकार नी आत्म शुद्धि, आत्म शुद्धि थये छते परमात्मा नुं ज्ञान, परमात्मा ना ज्ञान थी कर्म बंध नो नाश अने कर्म नाश थी मोक्ष लक्ष्मी एटले अक्षय स्थिति , अनन्त ज्ञान, अनंत दर्शन, एक स्वभाव पणुं, अनंत वीर्य, सज्ज्योति अने अनंत सुख थाय छे.

विवेचन -पाप नाश थाय त्यारे केटला प्रकार ना आत्मा ने फल मले छे ते बतावे छे ज्यारे पाप नो नाश थाय छे त्यारे आत्मा निर्मल बने छे आत्मा निर्मल थवाथी जिनेश्वर देव आदि नी ओलखाण थाय छे जिनेश्वर देव आदि नी ओलखाण थी कर्मबंध सरके छे कर्म ना नाश थी मोक्ष नी प्राप्ति थाय छे. मोक्ष नी प्राप्ति थवाथी आत्मा नी अक्षय स्थिति थाय छे, एटले आदि अनंत काल त्यां रहेवानुं थाय छे. ए जीव क्यारे पण संसार मा आवतो नथी अने ते वखते आत्मा अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, एक स्वभाव पणु, अनंत वीर्य गुणना प्रकाश मय. सज्ज्योति अने अनंत सुखो नो भोक्ता बने छे.

[illegible]

[illegible]

॥ अथ विंशतितमोऽधिकारः ॥

आत्म ज्ञान थीज अथवा केवल राजयोग थीज मुक्ति थाय छे ए विषय मां वैष्णवादि मत जन ना कथन मां एकवाक्यता नथी.

मूलम्—

हेस्वामिनः ! यूयमितिप्रवदथ,यदात्मबोधान्नविनाऽस्तिमुक्तिः ।
नहीतरेऽन्यान्कथमाहुरस्या,हेतूंस्तदुक्तिर्नसमा तयाहि? ॥१॥

येवैष्णवाःकेचनविष्णुवादिनो,विष्णोःसकाशान्निगदन्तिमुक्तिम् ।
येब्रह्मनिष्ठाःकिलब्रह्मणस्तां, शैवाःशिवाच्छक्तितस्तांतुशाक्ताः ।

तेषां न चात्मावगमो निदानं,मुक्तेस्तदा नास्त्ययनिर्णयोऽयम् ।
यदात्मबोधाज्जनितैवमुक्तिस्ततःकिमेवंप्रवदेविनिश्चयः ॥२॥

भावार्थ -हे स्वामियो, तमो कहो छो के आत्म ज्ञान विना मुक्ति नथी तो बीजाओ तेना अन्य कारणो कहे छे. तेथी आपनुं अने वैष्णवादि नुं कथन समान नथी. वैष्णवो विष्णु नी उपासना थी, ब्रह्म निष्ठो ब्रह्म नी उपासना थी, शैवो शिव नी उपासना थी अने शाक्तो शक्ति नी उपासना थी मुक्ति मले छे एम माने छे. वैष्णवादि ना मते आत्म ज्ञान मुक्ति नुं कारण नथी तो आत्म ज्ञान थी मुक्ति मले छे ए निर्णय केम थाय ?

विवेचन.—हे स्वामियो, तमो कहो छो के आत्म ज्ञान विना मुक्ति नथी, परन्तु बीजाओ बीजां कारणो बतावे छे.

भावार्थ-आ रीते सर्वे पण विष्णु विगेरे शब्दो थी आ आत्मा ज जाणवो, ते कारण थी आत्मज्ञान थी आ मुक्ति केम न थाय ? आ तरफ विष्णुवादी आदिओए पण विचारवुं जोइये.

विवेचन-आ रीते विष्णु, ब्रह्मा, शिव अने शक्ति विगेरे सर्वे शब्दो नो अर्थ आत्माज थाय छे अने विष्णु आदि नी उपासना करनार आत्मानीज उपासना करे छे, तो आत्म ज्ञान थी मुक्ति केम न थाय ? माटे विष्णु वादी विगेरे ! तमारे हृदय मां विचार करवो जोइये.

मूलम्-

चेन्नेतिविष्णुप्रमुखेभ्यएभ्यः, मुक्तिस्तदावैष्णवमुख्यलोकाः ।
सन्तोगृहस्थाइहविष्णुमुख्यान्,एवाऽर्चयन्तःपरितोजपन्तु ॥७॥
परं तपः संयमयुक्तता क्षमा, निः सङ्गता रागरुपापनोदो ।
पञ्चेन्द्रियाणांविषयाद्विरागो,ध्यानात्मवोधादिविधीयतेकथं?।८

भावार्थ.- जो मारूं कथन बराबर नथी अने विष्णु प्रमुख थी मुक्ति थती होय तो वैष्णव प्रमुख जनो, सतो अने गृहस्थो आ संसार मां तेमने पूजतां छतां सर्व प्रकारे तेमनोज जाप जपे परन्तु तपश्चर्या, संयम मा तत्परता, क्षमा, निसंगता, राग-द्वेष नुं निवारण, विषयो नो विराग तथा ध्यान अने आत्मज्ञानादि तेओ केम करे

जोवा योग्य हतुं ते जाणी अने जोई लीधुं. पछी सिद्धत्व अवस्था मां नवुं कइ पण जाणता नथी अने जोता पण नथी कारण के सर्व भूतकाल, वर्तमान काल अने भविष्य काल ना भावो केवल ज्ञान नी प्राप्ति समयेज ज्ञान अने दर्शन थी जाणी अने जोई ले छे.

मूलम् —

क्रिये इमे द्वे युगपत्समास्तां, ये ज्ञेयदृश्ये इह ते अभूताम् ।
ततोनृजातौकिलसत्क्रियत्व-ममूत्तुसिद्धौखलुनिष्क्रियत्वम् ।३८

भावार्थ—ज्ञान-दर्शन संबंधी ए बे क्रिया एकज समये थाय छे, कारण के मनुष्य भव मां आ बे क्रियाओ होय छे, एटले मनुष्य जन्म मांज बे क्रिया पणुं छे अने सिद्ध अवस्था मा निष्क्रिय पणु जणावुं

विवेचन-सुगम.

मूलम्-

एवं तु निष्क्रियता प्रसिद्धा, सिद्धेषु सिद्धाऽस्त्यत्र धारणेन ।
सर्वप्रवर्तनस्यमनोनिरोधो,हेतुस्ततोऽत्रैवरमध्वमध्वनि ॥३९।

भावार्थ-आ रीते सिद्धो मा निष्क्रियता निश्चय पूर्ण प्रसिद्ध रीते सिद्ध थई ए सर्व नु कारण मनोनिरोध छे माटे एज मार्ग मा रमण करो

विवेचन:-आ रीते मोक्ष मां गयेला आत्माओ मां निष्क्रियता निश्चयरीते सिद्ध थई अने ते प्रसिद्ध छे. तेमज मनना नियन्त्रणथीज आत्मा सिद्ध पद पामे छे. माटे सिद्ध थवा मां मन नो निरोध एज कारण छे. तमो पण एज मार्ग मां एटले मन ने निरोध करवामाज रमण करो

॥ अथ एकविंशतितमोऽधिकारः ॥

मन ना निरोध रूप योग मार्ग मां प्रयत्नवानो उपदेश

मूलम्.-

अमुं विचारं मुनयः पुरातना, ग्रन्थेषु जगदुरतीव विस्तृतम् ।
परं न तत्र स्फुरत्यल्पमेधसा-मैदंयुगीनानां मतिःप्रसारिणी ॥१॥

मया परप्रेरणपारवश्या-दज्ञानतापोति विधृत्य धृष्टताम् ।
प्रश्ना इयन्तः कियन्त एते, परेण पृष्टाः प्रथितोत्तरोत्तराः ॥२॥

भावार्थ -आ विचार ने प्राचीन मुनिओए ग्रंथ मां घणाज विस्तार थी कहेलो छे. परन्तु आ विचार मां आ युग ना उत्पन्न थयेला अल्प बुद्धि वाळाओ नी. बुद्धि जल्दी काम आपती नथी. एवा बीजाओनी प्रेरणा नी परतन्त्रपणा थी अज्ञानी एवा में आ धिठाई करीने ओळखावीए पुछेला आ थोड़ा प्रश्नो मां पण पूर्वक विस्तार थी उत्तर आप्या छे

विवेचन हवे ग्रंथकार श्री ग्रंथ बनाववानुं कारण बता
छे के जैन तत्त्वो नुं विवरण प्राचीन मुनिओए ग्रंथो म
घणुंज विस्तार थी आप्युं छे परन्तु काल ना प्रभावे अल
बुद्धि वाला आज ना तत्त्व जिज्ञासुओ नी बुद्धि तत्त्वो न
अर्थ समझवा मा समर्थ थती नथी. एटले अल्प बुद्धि वाल
जीवो सहेलाई थी तत्त्वो समझी शके माटे तथा बीजाअ
नी प्रेरणा ना वश थी अज्ञानी एवा मे धृष्टता करीने प
बीजाओए पूछेला आ थोडा प्रश्नो ना उत्तरो विस्तार पूर्व
आपेला छे.

मूलम्:-

शैवेनकेनाऽपिच्चजीवकर्मणी, आश्रित्यपृच्छाःप्रसभादिमाःघृ
माभूज्जिनाधीशमतावहेले-त्यवेत्यमङ्क्षूत्तरितंमयैवम् ॥ ३

गाथार्थ कोई शैवानुयायीए हठ थी जीव अने क
संबधी आ प्रश्नो करेला तेथी जिनेश्वर देव ना सिद्धा
नी अवहेलना न थाय ए प्रमाणे विचारी ने मे उक्त रीति
जल्दी उत्तर आप्या.

विवेचन- ग्रंथ रचना नो प्रसंग केम उपस्थित थयो
बतावता कहे छे के एक समये कोई शिव मत ने मानन
आवी ने जीव अनेकर्म सबधी प्रश्नो
जिनेश्वर देव ना सिद्धान्त नी अव

विवेचन-महान् पंडितो पुरुषो नी अपेक्षाए पोतानी अल्प बुद्धि छे ते बतावतां कहे छे के आ जैन तत्त्व सार ग्रंथ मा प्रश्नोत्तर पद्धति मे केवल सामारिक कथन मा प्रसिद्ध छे ते मुजब करेली छे परन्तु प्राचीन शास्त्र ना अभ्यास थी प्राप्त थयेल बुद्धि वालाओ मारा कहेल विचारो मा प्राचीन युक्ति ने घटावे छे.

मूलम्-

परं विचारेऽत्र न गोचरो मे,प्रायेण मुह्यन्ति मनीषिणोऽपि ।
अमुं विना केवलिनंनवक्तुं,व्यक्तोऽपिशक्तःसकलश्रुतेक्षी॥६॥

भावार्थ-परन्तु पूर्वे कहेल विचार मा मारो विषय नथी कारण के आ बाबत मां प्राय विद्वानो पण मुझाय छे. केवल ज्ञानी विना सकल श्रुत ना जोनार प्रगट होवा छता पण आ विचार ने कहेवा ने समर्थ नथी.

विवेचन:-जैन तत्त्वो नो सार केटलो गहन छे अने तेनुं केटलुं महत्त्व छे ते बतावता कहे छे के आ विषयो ना तत्त्वो नुं रहस्य प्रगट करवुं ए मारो विषय नथी अर्थात् तेमां मारी बुद्धि काम करी शके तेम नथी. प्राय. विद्वान् पुरुषो पण तेनुं रहस्य प्रगट करवामां मुंझाय छे कारण के केवली भगवंत विना सकल श्रुत ना जाणकार एवा आगमधरो पण ते विचार ने कहेवाने समर्थ नथी.

गाथार्थ. अल्प बुद्धि वालाओ माटे माटे माग आ शास्त्र छे. शासन करे ते शास्त्र शास्त्र शब्द नी व्युत्पत्ति थी अल्प बुद्धि वालाओ ना मत्त्व थी माग आ कथन पण शास्त्र छे उक्ति, प्रयुक्ति अने निर्युक्ति युक्त प्रश्नोत्तर पूर्वक कथन ने शास्त्र-प्रवीणो शास्त्र कहे छे.

विवेचन -सुगम.

मूलम् .—

यद्वास्तिपूर्वेष्वखिलोऽपि वर्णा—नुयोग एतन्न्यगदन्विदांवराः ।
इयतदावर्णपरम्पराऽपि,तत्राऽस्तितच्छास्त्रमिद भवत्वपि ।६।

गाथार्थ —अथवा पडित प्रवरो चौद पूर्वो मा सर्व पण अक्षरो नुं अनुयोजन करे छे, तो मारी पण आ कहेली वर्ण परपरा छे तेथी मारू कथन पण शास्त्र छे

विवेचन —अनत ज्ञानी जिनेश्वर देवो मुख थी उपन्नेइवा, विगमेइवा अने धुव्वेइया ए त्रण पदो साभली गणधर भगवतो आचाराग, सूय गडाग, ठाणाग,समवायाग,भगवतीजी, ज्ञाता धर्मकथा, उपासक दशांग अ तगडसूत्र, अनुत्तरो-पपातिक, प्रश्न व्याकरण, विपाक सूत्र अने दृष्टिवाद एम बार अंगोनी रचना करे छे. ए दृष्टिवाद मा पूर्व नामनो एक विभाग छे तेमा चौद पूर्वो बतावेल छे ए चौद पूर्वो मां सर्व अक्षरो ना सर्व सयोगो थता [illegible]

मूलम्:—

चिरं विचारं परिचिन्वताऽमुं,यन्न्यूनमन्यूनमवादि वादतः ।
कदाग्रहाद्वाऽभ्रमसम्भ्रमाभ्याम्,तन्मेमृषादुष्कृतमस्तुवस्तुतः॥११

भाव्यार्थः-आ विचार ने दीर्घ काळ पर्यन्त संग्रह करता माराथी वादथी, हठवाद थी अथवा भ्रम अने संभ्रम थी जे कइ ओछुं वधारे कह्युं होय ते मारूं दुष्कृत तत्त्व थी मिथ्या थाओ.

विवेचनः-अहिया ग्रंथकार श्री पोतानी पाप भीरुता बतावे छे के जगत मा अनेक प्रकार ना पापो मा जिनेश्वर देवे बतावेल तत्त्वो थी विरुद्ध बोलवुं ते उत्सूत्र प्ररूपणा कहेवाय छे ते उत्सूत्र प्ररूपणा रूप पाप वधारे भयंकर छे बीजा पापो थी पाप करनार एकज डूबे छे परन्तु उत्सूत्र बोलनार अनेक ने डूबाडे छे माटे आ ग्रंथ रचना थयाय पण शास्त्र विरुद्ध न कहेवाई जाय तेथी ग्रंथकार श्री कहे छे के आ ग्रंथ बनावता लाबा समय पर्यंत माराथी वादना कारण थी, कदाग्रह थी अथवा मति ना संभ्रम थी विगेरे कोई पण कारणो थी जे कइ शास्त्र विरुद्ध ओछुं वधारे कह्युं होय ते मारूं पाप मि

भावार्थ—अतिशय श्रेष्ठ खरतर गच्छ ना धारक युग प्रधान जिनराज सूरि ना साम्राज्य मा तेमना पट्टधर श्री जिनसागर सूरि होते छते अमर सर नामना श्रेष्ठ नगर मां श्री शीतलनाथ प्रभु ना सानिध्य मां सूरचंद्र नामना मे ज्ञान माटे आ समर्थ ग्रंथ बनाव्यो.

विवेचन:-सुगम

मूलम्-

श्रीमत्खरतरवरगण—सुरगिरिसुरशाखिसन्निभः समभूत् ।
जिनभद्रसूरिराजो—ऽसमः प्रकाण्डोऽभवत्तत्र ॥१५॥
श्रीमेरुसुन्दरगुरुः, पाठकमुख्यस्ततो बभूवाऽथ ।
तत्र महीयः शाखा—प्रायः श्रीक्षान्तिमन्दिरकः ॥१६॥
तार्किककल्पभा अभवन्, हर्षप्रियपाठकाः प्रतिलताभाः ।
तस्यां समभूवन्निह, सुरभिततरमञ्जरी तुल्याः ॥१७॥
चारित्रोदयवाचक—नामानस्तेष्वभुः फलसमानाः ।
श्रीवीरकलशसुगुरवो, गीतार्थाः परमसंविग्नाः ॥१८॥
तेभ्यो यद् भवाणो, बीजाभास्तत्र सूरचन्द्रोऽहं ।
चारित्रपदकलभवद्—द्वितीयीको गुरुभ्राता ॥१९॥
यस्मात् श्रीरस्याद्—प्रमुखा अङ्कुरकरणयः सन्ति ।
तेऽपि फलन्तु फलौघैः सुशिष्य-रूपैः प्रभावद्भिः ॥२०॥

भावार्थ - [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विवेचन—सुगम

मूलम्—

एवंयथामतिमुपि जैनतत्त्व-सारो मयाऽस्मारि मनःप्रसत्यै।
उत्सूत्रमासूत्रितमत्र किञ्चित्,यत्तद्विशोध्यं सुविशुद्धधीभिः

भावार्थः—ए प्रमाणे पोतानी बुद्धि अनुसार मे जैन तत्त्वसार नामनो ग्रंथ मारा मन नी प्रसन्नता माटे याद क[र्यो] छे एमां सूत्र विरुद्ध काइ पण रचायुं होय ते अति निर्[मल] बुद्धि वालाओए शुद्ध करवो जोइये.

विवेचन—सुगम.

मूलम्:—

वर्षे नन्दतुरङ्गचन्दिरकलामानेऽश्वयुक्पूर्णिमा,
ज्ञे योगे विजयेऽहमेतममलं पूर्णं व्यधामादरात् ।
ग्रन्थं वाचकसूरचन्द्रविबुधः प्रश्नोत्तरालङ्कृतम्,
साहाय्याद्वरपद्मवल्लभगणेरर्हत्प्रसादश्रियै ॥२३॥

भावार्थ.-विक्रम संवत् १६७९ ना आसो सुद पून[म] बुधवार, विजय योग मां वाचक सूरचंद्र पंडित एवा

भावार्थ [illegible]

[illegible]

[illegible]

विवेचन—सुगम

मूलम्—

एवं यथाशेमुषि जैनतत्त्व-सारो मयाऽकारि मनःप्रसत्त्यै ।

उत्सूत्रमासूत्रितमत्र किञ्चिद्,यत्तद्विशोध्यं सुविशुद्धधीभिः ।२२

भावार्थः—ए प्रमाणे पोतानी बुद्धि अनुसार मे जैन तत्त्व सार नामनो ग्रंथ मारा मन नी प्रसन्नता माटे सार कर्यो छे एमां सूत्र विरुद्ध कंइ पण रचायुं होय तो अति निर्मल बुद्धि वालाओए शुद्ध करवो जोइए

विवेचनः—सुगम.

मूलम्.—

वर्षे नन्दतुरङ्गचन्द्रिरकलामानेऽश्वयुक्पूर्णिमा,

ज्ञे योगे विजयेऽहमेतममलं पूर्णं व्यधामादरात् ।

ग्रन्थं वाचकसूरचन्द्रविबुधः प्रश्नोत्तरालङ्कृतम्,

साहाय्याद्धरपद्मवल्लभगणेरर्हत्प्रसादश्रियै ॥२३॥

भावार्थ.-विक्रम संवत् १६७६ ना आसो सुद पूनम,

बुधवार, विजय योग मां वाचक सूरचंद्र पंडित एवा में